सुखमनी साहिब

आध्यात्मिकता की ओर एक यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM

विषय-सूची

1. सुखमनी साहिब -- 1
2. अरदास-प्रार्थना -- 226
3. आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें ------------------------------------ 230
4. यात्रा का दर्शन --- 232
5. महिलाओं की भूमिका -- 234
6. पगड़ी का महत्व -- 237
7. आपकी यात्रा में विनम्रता का मूल सार -- 239

🙏🙏🙏We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher

© Sikhbookclub.com

Chino, Ca 91710

ਗਉੜੀ ਸੁਖਮਨੀ ਮਃ ੫ ॥
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥
राग गौड़ी, पाँचवाँ गुरु: सुखमणि का अर्थ है आनंद का मुकुट मोती।

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
आदि गुरए नमह ॥
मैं आदि गुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਜੁਗਾਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
जुगादि गुरए नमह ॥
मैं पहले युगों के गुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
सतिगुरए नमह ॥
मैं सतगुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰਦੇਵਏ ਨਮਹ ॥੧॥
स्री गुरदेवए नमह ॥१॥
मैं श्री गुरुदेव जी को प्रणाम करता हूँ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਿਮਰਉ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਉ ॥
सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
परमात्मा का नाम सिमरन करो और नाम-सिमरन करके सुख प्राप्त करो।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਤਨ ਮਾਹਿ ਮਿਟਾਵਉ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥
और इस तन में जो दुःख-क्लेश हैं, उन्हें मिटा लो।

ਸਿਮਰਉ ਜਾਸੁ ਬਿਸੁੰਭਰ ਏਕੈ ॥
सिमरउ जासु बिसुमभर एकै ॥
केवल, एक जगत् के पालनहार प्रभु के यश को स्मरण करो।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਅਗਨਤ ਅਨੇਕੈ ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥
असंख्य लोग प्रभु के अनेक नामों का जाप करते हैं।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸੁਧਾਖ੍ਹਰ ॥
बेद पुरान सिम्रिति सुधाख्यर ॥
पवित्र अक्षर वाले वेद, पुराण एवं स्मृतियां

ਕੀਨੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਇਕ ਆਖ੍ਹਰ ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥
प्रभु के नाम के एक अक्षर की रचना है।

ਕਿਨਕਾ ਏਕ ਜਿਸੁ ਜੀਅ ਬਸਾਵੈ ॥ਤਾ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਗਨੀ ਨ ਆਵੈ ॥
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ता की महिमा गनी न आवै ॥
जिसके हृदय में राम का नाम थोड़ा-सा भी वास करता है,उसकी महिमा व्यक्त नहीं की जा सकती।

ਕਾਂਖੀ ਏਕੈ ਦਰਸ ਤੁਹਾਰੋ ॥ਨਾਨਕ ਉਨ ਸੰਗਿ ਮੋਹਿ ਉਧਾਰੋ ॥੧॥
कांखी एकै दरस तुहारो ॥नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥
हे प्रभु ! जो लोग आपके दर्शनों के अभिलाषी हैं, उनकी संगति में रखकर मुझ नानक का भी उद्धार कर दो ॥१॥

ਸੁਖਮਨੀ ਸੁਖ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ॥
सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु ॥
सुखमनी प्रभु का सुख रूपी अमृत नाम है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥
जिसका भक्तजनों के मन में निवास होता है। रहाउ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਗਰਭਿ ਨ ਬਸੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभु को स्मरण करने से प्राणी गर्भ में नहीं आता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੂਖੁ ਜਮੁ ਨਸੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥
प्रभु को स्मरण करने से दुःख एवं मृत्यु का भय निवृत्त हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਾਲੁ ਪਰਹਰੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभु का सिमरन करने से काल भी दूर हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਸਮਨੁ ਟਰੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभु को स्मरण करने से शत्रु टल जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਤ ਕਛੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभु को स्मरण करने से कोई विध्न नहीं पड़ता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥
प्रभु को स्मरण करने से मनुष्य रात-दिन जागृत रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਭਉ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभु को स्मरण करने से भय प्रभावित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥
प्रभु को स्मरण करने से दुःख-क्लेश प्रभावित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
ईश्वर को स्मरण करने से संतों की संगति प्राप्त होती है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੨॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥
हे नानक ! समस्त निधियाँ ईश्वर की प्रीति में है॥ २ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਉ ਨਿਧਿ ॥
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभु के सिमरन में ऋद्धि, सिद्धि एवं नौ निधियाँ हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਤਤੁ ਬੁਧਿ ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभु के सिमरन से ही मनुष्य ज्ञान, ध्यान, दिव्यदृष्टि एवं बुद्धि का सार प्राप्त करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਜਪ ਤਪ ਪੂਜਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभु के सिमरन में ही, जप, तपस्या एवं पूजा है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਬਿਨਸੈ ਦੂਜਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभु का सिमरन करने से द्वेतभाव दूर हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभु का सिमरन करने से तीर्थ स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभु का सिमरन करने से प्राणी उसके दरबार में मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਹੋਇ ਸੁ ਭਲਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभु का सिमरन करने से प्राणी उसकी इच्छा को मीठा (भला) मानता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य-जन्म का मनोरथ सफल हो जाता है।

ਸੇ ਸਿਮਰਹਿ ਜਿਨ ਆਪਿ ਸਿਮਰਾਏ ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
केवल वही जीव उसे को सिमरते हैं, जिनसे वह स्वयं को सिमरन करवाता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਏ ॥੩॥
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥
नानक कहते हैं कि, मैं उन सिमरन करने वाले महापुरुषों के चरण-स्पर्श करता हूँ॥ ३॥

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभु का सिमरन सबसे ऊँचा है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਉਧਰੇ ਮੂਚਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभु का सिमरन करने से अनेक प्राणियों का उद्धार हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभु का सिमरन करने से तृष्णा मिट जाती है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੁਝੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभु का सिमरन करने से सब कुछ समझ आ जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਾਹੀ ਜਮ ਤ੍ਰਾਸਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभु का सिमरन करने से यम (मृत्यु) का भय निवृत हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥
प्रभु का सिमरन करने से अभिलाषा पूरी हो जाती है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮਨ ਕੀ ਮਲੁ ਜਾਇ ॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
प्रभु का सिमरन करने से मन की मैल उतर जाती है

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥
अम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥
और भगवान् का अमृत नाम हृदय में समा जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਬਸਹਿ ਸਾਧ ਕੀ ਰਸਨਾ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
पूजनीय प्रभु अपने संत पुरुषों की रसना में निवास करते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਾ ਦਾਸਨਿ ਦਸਨਾ ॥੪॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥
हे नानक ! मैं गुरमुखों के दासों का दास हूँ॥ ४॥

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਧਨਵੰਤੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति ही धनवान हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪਤਿਵੰਤੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वही व्यक्ति सच्चे मान-सम्मान के अधिकारी हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਨ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
जो लोग प्रभु का सिमरण करते हैं, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत होते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਧਾਨ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, वे जगत् में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਿ ਬੇਮੁਹਤਾਜੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
जो पुरुष प्रभु का सिमरन करते हैं, वे किसी के आश्रित नहीं रहते।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਿ ਸਰਬ ਕੇ ਰਾਜੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वे सब के सम्राट हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरण करते हैं, वह सुख में निवास करते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥
जो प्रभु का सिमरण करते हैं, वे अमर हो जाते हैं।

ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਲਾਗੇ ਜਿਨ ਆਪਿ ਦਇਆਲਾ ॥
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥
जिन पर ईश्वर दयालु होता है, केवल वही व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੀ ਮੰਗੈ ਰਵਾਲਾ ॥੫॥
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥
हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों की चरणधूलि ही मांगता हूँ॥ ५॥

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति परोपकारी बन जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, मैं उन पर हमेशा ही बलिहारी जाता हूँ।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਮੁਖ ਸੁਹਾਵੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, उनके मुख अति सुन्दर हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਸੂਖਿ ਬਿਹਾਵੈ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरण करते हैं, वह अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वह अपने मन को जीत लेते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਾ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥
जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, उनका जीवन-आचरण पावन हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਅਨਦ ਘਨੇਰੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, उन्हें अनेक खुशियाँ एवं हर्षोल्लास ही प्राप्त होते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਬਸਹਿ ਹਰਿ ਨੇਰੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वह ईश्वर के निकट वास करते हैं।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਿ ॥
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥
संतों की कृपा से वह रात-दिन जागृत रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਨੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥੬॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥
हे नानक ! प्रभु-सिमरन की देन भाग्य से ही प्राप्त होती है। ६॥

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਾਰਜ ਪੂਰੇ ॥
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभु का सिमरन करने से समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਬਹੁ ਨ ਝੂਰੇ ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभु का सिमरन करने से प्राणी कभी चिन्ता-क्लेश के वश में नहीं पड़ता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਬਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य भगवान् की गुणस्तुति की वाणी करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य सहज ही परमात्मा में लीन हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਿਹਚਲ ਆਸਨੁ ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा वह आध्यात्मिक पद प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸਨੁ ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य का हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਨਹਦ ਝੁਨਕਾਰ ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा दिव्य भजन गूंजता है।

ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਨ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰ ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा सुख का कोई अन्त अथवा पार नहीं।

ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਜਿਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਮਇਆ ॥
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥
जिन प्राणियों पर प्रभु की कृपा होती है, वह उसका सिमरन करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਜਨ ਸਰਨੀ ਪਇਆ ॥੭॥
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥
हे नानक ! (कोई किस्मत वाला ही) उन प्रभु-स्मरण करने वालों की शरण लेता है॥ ७ ॥

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿ ਭਗਤ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ॥
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
भगवान् का सिमरन करके भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਲਗਿ ਬੇਦ ਉਪਾਏ ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
भगवान् के सिमरन में ही सम्मिलित होकर वेद (इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) रचे गए।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਭਏ ਸਿਧ ਜਤੀ ਦਾਤੇ ॥
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
भगवान् के सिमरन द्वारा ही मनुष्य सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं दानवीर बन जाते हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਨੀਚ ਚਹੁ ਕੁੰਟ ਜਾਤੇ ॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥
भगवान् के सिमरन द्वारा नीच पुरुष चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हो गए।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਧਾਰੀ ਸਭ ਧਰਨਾ ॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
भगवान् के सिमरन ने ही सारी धरती को धारण किया हुआ है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਹਰਿ ਕਾਰਨ ਕਰਨਾ ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥
हे जिज्ञासु ! संसार के कर्ता परमेश्वर को सदा स्मरण करते रहो।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਕੀਓ ਸਗਲ ਅਕਾਰਾ ॥
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
प्रभु ने अपने सिमरन हेतु सृष्टि की रचना की है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਮਹਿ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥
जहाँ प्रभु का सिमरन होता है, उस स्थान पर स्वयं निरंकार विद्यमान है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਇਆ ॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
हे नानक ! भगवान् जिसे कृपा करके सिमरन प्रदान करते हैं,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥੮॥੧॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥
गुरु के माध्यम से ऐसे व्यक्ति को भगवान् के सिमरन की देन मिल जाती है॥ ८॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਦੀਨ ਦਰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਾਥ ਅਨਾਥ ॥
दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥
हे दीनों के दर्द एवं दुःख का नाश करने वाले प्रभु ! हे प्रत्येक शरीर में व्यापक स्वामी । हे अनाथों के नाथ परमात्मा !

ਸਰਣਿ ਤੁਮ੍ਹਾਰੀ ਆਇਓ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਥ ॥੧॥
सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥
मैं आपकी शरण में आया हूँ, आप प्रभु मेरे (नानक के) साथ हो।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਹ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਨ ਭਾਈ ॥
जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥
जहाँ माता, पिता, पुत्र, मित्र एवं भाई, कोई (सहायक) नहीं,

ਮਨ ਊਹਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥
वहाँ हे मेरे मन ! ईश्वर का नाम तेरा सहायक होगा।

ਜਹ ਮਹਾ ਭਇਆਨ ਦੂਤ ਜਮ ਦਲੈ ॥
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥
जहाँ महा भयानक यमदूत तुझे कुचलेगा,

ਤਹ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਤੇਰੈ ਚਲੈ ॥
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥
वहाँ केवल प्रभु का नाम ही तेरे साथ जाएगा।

ਜਹ ਮੁਸਕਲ ਹੋਵੈ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥
जह मुसकल होवै अति भारी ॥
जहाँ बहुत भारी मुश्किल होगी ,

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਉਧਾਰੀ ॥
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥
वहाँ ईश्वर का नाम एक क्षण में ही तेरी रक्षा करेगा।

ਅਨਿਕ ਪੁਨਹਚਰਨ ਕਰਤ ਨਹੀ ਤਰੈ ॥
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
अनेकों धार्मिक कर्म करने से भी मनुष्य को पापों से मुक्ति नहीं होती,

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਪਰਹਰੈ ॥
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥
परन्तु ईश्वर का नाम करोड़ों ही पापों का नाश कर देता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥
हे मेरे मन ! गुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु के नाम का जाप कर।

ਨਾਨਕ ਪਾਵਹੁ ਸੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥੧॥
नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥
हे नानक ! ऐसे तुझे बहुत सुख प्राप्त होगा ॥१॥

ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕੋ ਰਾਜਾ ਦੁਖੀਆ ॥
सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥
सारे संसार का राजा (बनकर भी मनुष्य) दुःखी होता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਇ ਸੁਖੀਆ ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लेकिन ईश्वर का नाम-सिमरण करने से सुखी हो जाता है।

ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ਬੰਧੁ ਨ ਪਰੈ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥
चाहे मनुष्य लाखों-करोड़ बन्धनों में फँसा हो, (किन्तु)

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਿਸਤਰੈ ॥
हरि का नामु जपत निसतरै ॥
प्रभु के नाम का जाप करने से वह मुक्त हो जाता है।

ਅਨਿਕ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਤਿਖ ਨ ਬੁਝਾਵੈ ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥
धन-दौलत की अत्याधिक खुशियाँ मनुष्य की तृष्णा को नहीं मिटा सकते। (लेकिन)

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਆਘਾਵੈ ॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
ईश्वर का नाम-सिमरण करने से वह तृप्त हो जाता है।

ਜਿਹ ਮਾਰਗਿ ਇਹੁ ਜਾਤ ਇਕੇਲਾ ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥
जिस (यम) मार्ग पर प्राणी अकेला जाता है,

ਤਹ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਹੋਤ ਸੁਹੇਲਾ ॥
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
वहाँ ईश्वर का नाम सुखदायक होता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
हे मेरे मन ! ऐसा नाम सदा सिमरण करो,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥੨॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥
हे नानक ! गुरु की शरण में नाम-सिमरण करने से परमगति प्राप्त हो जाती है॥ २॥

ਛੂਟਤ ਨਹੀ ਕੋਟਿ ਲਖ ਬਾਹੀ ॥
छूटत नही कोटि लख बाही ॥
जहाँ लाखों-करोड़ों भुजाओं के होते हुए भी मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਹ ਪਾਰਿ ਪਰਾਹੀ ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
वहाँ नाम-सिमरण करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है।

ਅਨਿਕ ਬਿਘਨ ਜਹ ਆਇ ਸੰਘਾਰੈ ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
जहाँ अनेक विघ्न (विपत्तियाँ) आकर मनुष्य को नष्ट करती हैं,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
वहाँ प्रभु का नाम तत्काल उसकी रक्षा करता है।

ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਨਮੈ ਮਰਿ ਜਾਮ ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
जो व्यक्ति अनेक योनियों में जन्मता-मरता रहता है,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਾਵੈ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥
वह प्रभु के नाम का जाप करने से सुख प्राप्त कर लेता है।

ਹਉ ਮੈਲਾ ਮਲੁ ਕਬਹੁ ਨ ਧੋਵੈ ॥
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
अहंकार से मैला हुआ प्राणी कभी यह मैल धो नहीं सकता,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਖੋਵੈ ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
(परन्तु) ईश्वर का नाम करोड़ों पापों को नाश कर देता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਰੰਗਿ ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर के ऐसे नाम को प्रेमपूर्वक सिमरण करो।

ਨਾਨਕ ਪਾਈਐ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥੩॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥
हे नानक ! ईश्वर का नाम संतों की संगति में ही प्राप्त होता है॥ ३॥

ਜਿਹ ਮਾਰਗ ਕੇ ਗਨੇ ਜਾਹਿ ਨ ਕੋਸਾ ॥
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
जिस (जीवन रूपी) मार्ग के कोस इत्यादि गिने नहीं जा सकते,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਊਹਾ ਸੰਗਿ ਤੋਸਾ ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
ईश्वर का नाम वहाँ तेरे साथ राशि-पूंजी होगा।

ਜਿਹ ਪੈਡੈ ਮਹਾ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
जिस मार्ग में घोर-अंधकार है,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਉਜੀਆਰਾ ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
यहाँ ईश्वर का नाम तेरे साथ प्रकाश होगा।

ਜਹਾ ਪੰਥਿ ਤੇਰਾ ਕੋ ਨ ਸਿਞਾਨੂ ॥
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
जिस मार्ग पर तेरा कोई जानकार नहीं,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਹ ਨਾਲਿ ਪਛਾਨੂ ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
वहाँ परमेश्वर का नाम आपका सच्चा मित्र है।

ਜਹ ਮਹਾ ਭਇਆਨ ਤਪਤਿ ਬਹੁ ਘਾਮ ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
जहाँ अत्याधिक भयानक गर्मी एवं अत्याधिक धूप है,

ਤਹ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤੁਮ ਊਪਰਿ ਛਾਮ ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
वहाँ ईश्वर के नाम की तुझ पर छाया होगी।

ਜਹਾ ਤ੍ਰਿਖਾ ਮਨ ਤੁਝੁ ਆਕਰਖੈ ॥
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥
हे प्राणी ! जहाँ (माया की) प्यास तुझे खींचती है,

ਤਹ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਰਖੈ ॥੪॥
तह नानक हरि हरि अम्रितु बरखै ॥४॥
हे नानक ! वहाँ हरि-परमेश्वर के नाम के अमृत की वर्षा होती है॥ ४ ॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਬਰਤਨਿ ਨਾਮੁ ॥
भगत जना की बरतनि नामु ॥
ईश्वर का नाम भक्तजनों हेतु व्यावहारिक सामग्री है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
ईश्वर का नाम संतजनों के मन को सुख विश्राम देता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਦਾਸ ਕੀ ਓਟ ॥
हरि का नामु दास की ओट ॥
ईश्वर का नाम उसके सेवक का सहारा है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਜਨ ਕੋਟਿ ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
ईश्वर के नाम द्वारा करोड़ों ही प्राणियों का कल्याण हो गया है।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਰਤ ਸੰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
संतजन दिन-रात हरि का यशोगान करते रहते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਉਖਧੁ ਸਾਧ ਕਮਾਤਿ ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
संत हरि-परमेश्वर के नाम को अपनी औषधि के रूप में उपयोग करते हैं।

ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥
ईश्वर का नाम ईश्वर के सेवक का खजाना है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਨ ਕੀਨੋ ਦਾਨ ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
पारब्रह्म ने उसे यह दान किया है।

ਮਨ ਤਨ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਰੰਗ ਏਕੈ ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
जो मन एवं तन से एक ईश्वर के प्रेम में रंगे हुए हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਬਿਰਤਿ ਬਿਬੇਕੈ ॥੫॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥
हे नानक ! उन दासों की वृत्ति ज्ञान वाली हुई है॥ ५ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਉ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ॥
हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
भगवान् का नाम ही भक्त हेतु मुक्ति का साधन है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਕਉ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਭੁਗਤਿ ॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥
भगवान् का भक्त उसके नाम-भोजन से तृप्त हो जाता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਾ ਰੂਪ ਰੰਗੁ ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
भगवान् का नाम उसके भक्त का सौन्दर्य एवं हर्ष है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਬ ਪਰੈ ਨ ਭੰਗੁ ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥
भगवान् के नाम का जाप करने से मनुष्य के जीवन में कोई बाधा नहीं आती।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
भगवान् का नाम उसके भक्त की मान-प्रतिष्ठा है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
भगवान् के नाम द्वारा उसके भक्त को दुनिया में शोभा प्राप्त होती है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਉ ਭੋਗ ਜੋਗ ॥
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
भगवान् के सच्चे भक्तों के लिए माया और योग का समस्त सुख उनके नाम-स्मरण में ही समाया होता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ਬਿਓਗੁ ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥
भगवान् के नाम का जाप करने से उसे कोई दुःख-क्लेश नहीं होता।

ਜਨੁ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
भगवान् का भक्त उसके नाम की सेवा में ही मग्न रहता है।

ਨਾਨਕ ਪੂਜੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦੇਵਾ ॥੬॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥
हे नानक ! (भक्त सदैव) प्रभुदेवा परमेश्वर की ही पूजा करता है॥ ६ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਮਾਲੁ ਖਜੀਨਾ ॥
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि-परमेश्वर का नाम भक्त के लिए धन का भण्डार है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਨ ਕਉ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਨਾ ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि नाम रूपी धन प्रभु ने स्वयं अपने भक्त को दिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि-परमेश्वर का नाम उसके भक्त का सशक्त सहारा है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਜਨ ਅਵਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
भगवान् हरि के प्रताप से भक्तजन किसी दूसरे को नहीं जानता।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
उनके भक्त हमेशा भगवान् के प्रेम से ओत-प्रोत रहते हैं।

ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਨਾਮ ਰਸ ਮਾਤੇ ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥
शून्य समाधि में लीन वह नाम-रस में मस्त रहता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ॥
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
भक्त दिन के आठ पहर हरि-परमेश्वर के नाम का ही जाप करता रहता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਭਗਤੁ ਪ੍ਰਗਟ ਨਹੀ ਛਪੈ ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
भगवान् हरि का भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है, छिपा नहीं रहता।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਬਹੁ ਕਰੇ ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
भगवान् की भक्ति अनेकों को मोक्ष प्रदान करती है।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਸੰਗਿ ਕੇਤੇ ਤਰੇ ॥੭॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥
हे नानक ! भक्तों की संगति में कितने ही भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ७ ॥

ਪਾਰਜਾਤੁ ਇਹੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥
पारजातु इहु हरि को नाम ॥
भगवान् हरि का नाम ही कल्पवृक्ष है।

ਕਾਮਧੇਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
हरि-परमेश्वर के नाम का यशोगान करना ही कामधेनु है।

ਸਭ ਤੇ ਊਤਮ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
भगवान् हरि की कथा सबसे उत्तम है।

ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਦਰਦ ਦੁਖ ਲਥਾ ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
भगवान् का नाम सुनने से दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਸੰਤ ਰਿਦ ਵਸੈ ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
नाम की महिमा संतों के हृदय में निवास करती है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਦੁਰਤੁ ਸਭੁ ਨਸੈ ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संतों के तेज प्रताप से समस्त पाप नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕਾ ਸੰਗੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संतों की संगति सौभाग्य से ही प्राप्त होती है।

ਸੰਤ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
संतों की सेवा से नाम-सिमरन किया जाता है।

ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਕਛੁ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਇ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
ईश्वर के नाम के तुल्य कोई दूसरा नहीं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੮॥੨॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥
हे नानक ! कोई विरला गुरमुख ही नाम को प्राप्त करता है॥ ८ ॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਬਹੁ ਸਾਸਤ੍ਰ ਬਹੁ ਸਿਮ੍ਰਿਤੀ ਪੇਖੇ ਸਰਬ ਢਢੋਲਿ ॥
बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥
बहुत सारे शास्त्र एवं बहुत सारी स्मृतियाँ देखी हैं और उन सबकी (भलीभाँति) खोज की है।

ਪੂਜਸਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਮੋਲ ॥੧॥
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥
(लेकिन) यह ईश्वर के नाम की बराबरी नहीं कर सकते। हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम अमूल्य है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਗਿਆਨ ਸਭਿ ਧਿਆਨ ॥
जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
जप, तपस्या, समस्त ज्ञान एवं ध्यान,

ਖਟ ਸਾਸਤ੍ਰ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਵਖਿਆਨ ॥
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥
छः शास्त्रों के ग्रंथ एवं स्मृतियों का वर्णन,

ਜੋਗ ਅਭਿਆਸ ਕਰਮ ਧ੍ਰਮ ਕਿਰਿਆ ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
योग का साधन एवं धार्मिक कर्म-काण्डों का करना,

ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਬਨ ਮਧੇ ਫਿਰਿਆ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
प्रत्येक वस्तु को त्याग देना एवं वन में भटकना,

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਏ ਬਹੁ ਜਤਨਾ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
अनेक प्रकार के बहुत यत्न करे,

ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਹੋਮੇ ਬਹੁ ਰਤਨਾ ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
दान-पुण्य, होम यज्ञ एवं अत्याधिक दान करना,

ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਇ ਹੋਮੈ ਕਰਿ ਰਾਤੀ ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥
शरीर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना एवं उनकी अग्नि में आहुति देना,

ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ॥
वरत नेम करै बहु भाती ॥
अनेक प्रकार के व्रत एवं नियमों की पालना,

ਨਹੀ ਤੁਲਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬੀਚਾਰ ॥
नही तुलि राम नाम बीचार ॥
लेकिन यह सभी भगवान् राम के नाम की आराधना के तुल्य नहीं हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਇਕ ਬਾਰ ॥੧॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥
हे नानक ! (चाहे) यह नाम एक बार ही गुरु की शरण में जपा जाए॥ १॥

ਨਉ ਖੰਡ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਫਿਰੈ ਚਿਰੁ ਜੀਵੈ ॥
नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥
मनुष्य चाहे पृथ्वी के नौ खण्डों पर भ्रमण करे, चिरकाल (लम्बी आयु) तक जीता रहे,

ਮਹਾ ਉਦਾਸੁ ਤਪੀਸਰੁ ਥੀਵੈ ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
वह महा निर्वाण एवं तपस्वी हो जाए और

ਅਗਨਿ ਮਾਹਿ ਹੋਮਤ ਪਰਾਨ ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
अपने शरीर को अग्नि में होम कर दे,

ਕਨਿਕ ਅਸ੍ਵ ਹੈਵਰ ਭੂਮਿ ਦਾਨ ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
वह सोना, घोड़े एवं भूमिदान कर दें,

ਨਿਉਲੀ ਕਰਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਆਸਨ ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
वह आंतरिक शुद्धि की विधियों और समस्त योग मुद्राओं का अभ्यास करता है;

ਜੈਨ ਮਾਰਗ ਸੰਜਮ ਅਤਿ ਸਾਧਨ ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
वह जैनियों के मार्ग पर चलकर अत्यंत कठिन साधन तथा तपस्या करें,

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਕਰਿ ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਵੈ ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देता है,

ਤਉ ਭੀ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਵੈ ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
तो भी उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती।

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਸਮਸਰਿ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
भगवान् के नाम के बराबर कोई वस्तु नहीं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से भगवान् के नाम का जाप करने से जीव को मुक्ति मिल जाती है।॥
२॥

ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥ ਦੇਹ ਛੁਟੈ ॥
मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
कुछ लोगों की मनोकामना होती है कि किसी तीर्थ-स्थान पर शरीर त्यागा जाए

ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੁ ਨ ਮਨ ਤੇ ਹੁਟੈ ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
परन्तु (फिर भी) मनुष्य का अहंकार एवं अभिमान मन से दूर नहीं होते।

ਸੋਚ ਕਰੈ ਦਿਨਸੁ ਅਰੁ ਰਾਤਿ ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥
चाहे मनुष्य दिन-रात पवित्रता करता है

ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਤਨ ਤੇ ਜਾਤਿ ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥
परन्तु मन की मैल उसके शरीर से दूर नहीं होती।

ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਕਉ ਬਹੁ ਸਾਧਨਾ ਕਰੈ ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
चाहे मनुष्य अपने शरीर से बहुत संयम-साधना करता है,

ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਖਿਆ ਟਰੈ ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥
फिर भी माया के बुरे विकार उसके मन को नहीं त्यागते।

ਜਲਿ ਧੋਵੈ ਬਹੁ ਦੇਹ ਅਨੀਤਿ ॥
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
चाहे मनुष्य इस नश्वर शरीर को कई बार पानी से साफ करता है,

ਸੁਧ ਕਹਾ ਹੋਇ ਕਾਚੀ ਭੀਤਿ ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
तो भी (यह शरीर रूपी) कच्ची दीवार कहीं पवित्र हो सकती हैं?

ਮਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਊਚ ॥
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
हे मेरे मन ! हरि के नाम की महिमा बहुत ऊँची है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਪਤਿਤ ਬਹੁ ਮੂਚ ॥੩॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥
हे नानक ! (प्रभु के) नाम से बहुत सारे पापी मुक्त हो गए हैं॥ ३॥

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਜਮ ਕਾ ਭਉ ਬਿਆਪੈ ॥
बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अधिक चतुराई के कारण मनुष्य को मृत्यु का भय डराता है।

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨ ਨਾ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥
अनेक यत्न करने से भी सांसारिक इच्छाओं की तृष्णा की अग्नि नहीं बुझती।

ਭੇਖ ਅਨੇਕ ਅਗਨਿ ਨਹੀ ਬੁਝੈ ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
अनेकों धार्मिक वेष बदलने से (तृष्णा की) अग्नि नहीं बुझती।

ਕੋਟਿ ਉਪਾਵ ਦਰਗਹ ਨਹੀ ਸਿਝੈ ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
(ऐसे) करोड़ों ही उपायों द्वारा मनुष्य प्रभु के दरबार में मुक्त नहीं होता।

ਛੂਟਸਿ ਨਾਹੀ ਊਭ ਪਇਆਲਿ ॥
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
वह चाहे आकाश में चले जाएँ अथवा पाताल में चले जाएँ, उनकी मुक्ति नहीं होती,

ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਹਿ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
जो व्यक्ति मोह के कारण माया के जाल में फँसते हैं।

ਅਵਰ ਕਰਤੂਤਿ ਸਗਲੀ ਜਮੁ ਡਾਨੈ ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
अन्य सभी प्रयासों को यमदूत द्वारा दंडित किया जाता है,

ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੈ ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
(लेकिन) गोविन्द के भजन के बिना मृत्यु तनिकमात्र भी परवाह नहीं करती।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥
भगवान् के नाम का जाप करने से हर प्रकार के दुःख दूर हो जाते हैं

ਨਾਨਕ ਬੋਲੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੪॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥
नानक सहज स्वभाव यही कहते हैं ।॥ ४॥

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਜੇ ਕੋ ਮਾਗੈ ॥
चारि पदारथ जे को मागै ॥
यदि कोई व्यक्ति चार पदार्थों-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अभिलाषी हो

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੈ ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
तो उसे संतजनों की सेवा में लगना चाहिए।

ਜੇ ਕੋ ਆਪੁਨਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਵੈ ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
यदि कोई व्यक्ति अपना दुःख मिटाना चाहता है तो

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਗਾਵੈ ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
उसे अपने हृदय में हरि-परमेश्वर का नाम सदैव स्मरण करना चाहिए।

ਜੇ ਕੋ ਅਪੁਨੀ ਸੋਭਾ ਲੋਰੈ ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
यदि कोई व्यक्ति अपनी शोभा चाहता हो तो

ਸਾਧਸੰਗਿ ਇਹ ਹਉਮੈ ਛੋਰੈ ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥
वह संतों की संगति में रहकर अपने अहंकार को त्याग दे।

ਜੇ ਕੋ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਡਰੈ ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
यदि कोई व्यक्ति जन्म-मरण के दुःख से डरता है,

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੈ ॥
साध जना की सरनी परै ॥
तो उसे संतजनों की शरण लेनी चाहिए।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਸਾ ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
जिस व्यक्ति को परमात्मा के दर्शनों की तीव्र लालसा है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਸਾ ॥੫॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥
हे नानक ! मैं उस पर सदा बलिहारी जाता हूँ॥ ५॥

ਸਗਲ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ॥
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
समस्त पुरुषों में वहीं पुरुष प्रधान है

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥
जिस पुरुष का सत्संग में रहकर अभिमान मिट जाता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਜੋ ਜਾਣੈ ਨੀਚਾ ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
जो पुरुष अपने आपको निम्न (विनीत) जानता है,

ਸੋਊ ਗਨੀਐ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
वह सबसे भला (ऊँचा) समझा जाता है।

ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
जिस पुरुष का मन बहुत विनम्र है,

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨਾ ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
वह हरि-परमेश्वर के नाम को प्रत्येक हृदय में देखता है।

ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਤੇ ਬੁਰਾ ਮਿਟਾਨਾ ॥
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
जो अपने मन से बुराई को मिटा देता है,

ਪੇਖੈ ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਜਨਾ ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥
वह सारी सृष्टि को अपना मित्र देखता है।

ਸੂਖ ਦੂਖ ਜਨ ਸਮ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥
हे नानक ! जो पुरुष सुख-दुःख को एक समान देखता है,

ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਨਹੀ ਲੇਪਾ ॥੬॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥
वह पाप-पुण्य से निर्लिप्त रहता है॥ ६॥

ਨਿਰਧਨ ਕਉ ਧਨੁ ਤੇਰੋ ਨਾਉ ॥
निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
हे नाथ ! निर्धन के लिए आपका नाम ही धन-दौलत है।

ਨਿਥਾਵੇ ਕਉ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਥਾਉ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निराश्रित को आपके नाम का ही आश्रय है।

ਨਿਮਾਨੇ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੋ ਮਾਨੁ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
हे प्रभु ! आप अपमानितों का सम्मान है।

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਉ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
आप ही समस्त प्राणियों को दान देते हैं।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
हे जगत् के स्वामी ! आप स्वयं ही सब कुछ करते एवं स्वयं ही जीवो से करवाते हो।

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
आप अन्तर्यामी है।

ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪੇ ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
हे ठाकुर ! अपनी गति एवं अपनी मर्यादा आप स्वयं ही जानते हो।

ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੇ ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
हे प्रभु ! आप स्वयंसिद्ध हैं, स्वयं में लीन, अनंत और निर्विकार।

ਤੁਮ੍ਹਰੀ ਉਸਤਤਿ ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
हे ईश्वर ! अपनी महिमा केवल आप ही कर सकते हो।

ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਸਿ ਕੋਇ ॥੭॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥
हे नानक ! कोई दूसरा आपकी महिमा को नहीं जानता॥ ७॥

ਸਰਬ ਧਰਮ ਮਹਿ ਸ੍ਰੇਸਟ ਧਰਮੁ ॥
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
समस्त धर्मों में सर्वोपरि धर्म,

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮੁ ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
ईश्वर के नाम का जाप करना एवं पवित्र कर्म करना है।

ਸਗਲ ਕ੍ਰਿਆ ਮਹਿ ਊਤਮ ਕਿਰਿਆ ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
समस्त धार्मिक क्रियाओं में सर्वश्रेष्ठ क्रिया,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰਿਆ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सत्संग में मिलकर दुर्बुद्धि की मैल को धो फेंकना।

ਸਗਲ ਉਦਮ ਮਹਿ ਉਦਮੁ ਭਲਾ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
समस्त प्रयासों में उत्तम प्रयास यही है कि

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਜੀਅ ਸਦਾ ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सदा मन में हरि के नाम का जाप करते रहो।

ਸਗਲ ਬਾਨੀ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੀ ॥
सगल बानी महि अम्रित बानी ॥
समस्त वाणियों में अमृत वाणी है कि

ਹਰਿ ਕੋ ਜਸੁ ਸੁਨਿ ਰਸਨ ਬਖਾਨੀ ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
ईश्वर की महिमा सुनो एवं इसको जिह्वा से उच्चारण करो ।

ਸਗਲ ਥਾਨ ਤੇ ਓਹੁ ਊਤਮ ਥਾਨੁ ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
हे नानक ! समस्त स्थानों में वह स्थान उत्तम है,

ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਘਟਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੮॥੩॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥
जिसमें ईश्वर का नाम निवास करता है॥ ८ ॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਇਆਨਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥
निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥
हे गुणविहीन एवं मूर्ख जीव ! उस ईश्वर को सदैव स्मरण कर।

ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਸੁ ਚੀਤਿ ਰਖੁ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਨਾਲਿ ॥੧॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥
हे नानक ! जिसने तुझे उत्पन्न किया है, उसको अपने हृदय में बसा, केवल ईश्वर ही तेरा साथ देगा ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਰਮਈਆ ਕੇ ਗੁਨ ਚੇਤਿ ਪਰਾਨੀ ॥
रमईआ के गुन चेति परानी ॥
हे नश्वर प्राणी ! सर्वव्यापक राम के गुण स्मरण कर।

ਕਵਨ ਮੂਲ ਤੇ ਕਵਨ ਦ੍ਰਿਸਟਾਨੀ ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥
किस मूल पदार्थ से प्रभु ने इस सुन्दर शरीर की रचना की है।

ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿ ਸੀਗਾਰਿਆ ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥
जिसने तुझे रचा, संवारा एवं सुशोभित किया है,

ਗਰਭ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਿਨਹਿ ਉਬਾਰਿਆ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥
जिसने तेरी गर्भ की अग्नि में रक्षा की है,

ਬਾਰ ਬਿਵਸਥਾ ਤੁਝਹਿ ਪਿਆਰੈ ਦੂਧ ॥
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
जिसने तुझे बाल्यावस्था में पीने के लिए दूध दिया है,

ਭਰਿ ਜੋਬਨ ਭੋਜਨ ਸੁਖ ਸੂਧ ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
जिसने तुझे यौवन में भोजन, सुख एवं सूझ दी

ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਊਪਰਿ ਸਾਕ ਸੈਨ ॥
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
और जिसने जब तू बूढ़ा हुआ तो, सगे-संबंधी एवं मित्र

ਮੁਖਿ ਅਪਿਆਉ ਬੈਠ ਕਉ ਦੈਨ ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
बैठे-बैठे जो भोजन दे।

ਇਹੁ ਨਿਰਗੁਨੁ ਗੁਨੁ ਕਛੂ ਨ ਬੂਝੈ ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
हे भगवान, यह गुणहीन व्यक्ति आपके द्वारा किए गए किसी भी उपकार का मूल्य नहीं समझता।

ਬਖਸਿ ਲੇਹੁ ਤਉ ਨਾਨਕ ਸੀਝੈ ॥੧॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥
नानक कहते हैं कि हे ईश्वर ! यदि आप उसको क्षमा कर दे तो ही वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है॥ १॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਧਰ ਊਪਰਿ ਸੁਖਿ ਬਸਹਿ ॥
जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥
(हे प्राणी!) जिसकी कृपा से तू धरती पर सुखपूर्वक रहता है

ਸੁਤ ਭ੍ਰਾਤ ਮੀਤ ਬਨਿਤਾ ਸੰਗਿ ਹਸਹਿ ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥
और अपने पुत्र, भाई, मित्र एवं पत्नी के साथ हँसता खेलता है,

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੀਵਹਿ ਸੀਤਲ ਜਲਾ ॥
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
जिसकी कृपा से तू शीतल जल पीता है

ਸੁਖਦਾਈ ਪਵਨੁ ਪਾਵਕੁ ਅਮੁਲਾ ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥
और तुझे प्रसन्न करने वाली सुखदायक वायु एवं अमूल्य अग्नि मिली है,

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭੋਗਹਿ ਸਭਿ ਰਸਾ ॥
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
जिसकी कृपा से तुम समस्त रस भोगते हो

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਸੰਗਿ ਸਾਥਿ ਬਸਾ ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥
और समस्त पदार्थों के साथ तुम रहते हो,

ਦੀਨੇ ਹਸਤ ਪਾਵ ਕਰਨ ਨੇਤ੍ਰ ਰਸਨਾ ॥
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
जिसने तुझे हाथ, पैर, कान, आंख एवं जीभ प्रदान किए हैं,

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਰਚਨਾ ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥
(हे प्राणी !) तुम उस ईश्वर को भुलाकर दूसरों के साथ प्रेम करते हो।

ਐਸੇ ਦੋਖ ਮੂੜ ਅੰਧ ਬਿਆਪੇ ॥
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
ऐसे दोष ज्ञानहीन मूर्ख के साथ फँसे हुए हैं।

ਨਾਨਕ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪੇ ॥੨॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥
नानक कहते हैं कि हे प्रभु! इनकी आप स्वयं ही रक्षा करो ॥ २॥

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਜੋ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥
आदि अंति जो राखनहारु ॥
जो परमात्मा आदि से लेकर अंत तक (जन्म से मृत्यु तक) सबका रक्षक है,

ਤਿਸ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਕਰੈ ਗਵਾਰੁ ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥
मूर्ख पुरुष उससे प्रेम नहीं करता।

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
जिसकी सेवा से उसको नौ निधियाँ मिलती हैं,

ਤਾ ਸਿਉ ਮੂੜਾ ਮਨੁ ਨਹੀ ਲਾਵੈ ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥
उसे मूर्ख जीव अपने हृदय से नहीं लगाता।

ਜੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸਦ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
जो ठाकुर सदैव ही प्रत्यक्ष है,

ਤਾ ਕਉ ਅੰਧਾ ਜਾਨਤ ਦੂਰੇ ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥
उसको ज्ञानहीन जीव दूर जानता है।

ਜਾ ਕੀ ਟਹਲ ਪਾਵੈ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ॥
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
जिसकी सेवा-भक्ति से उसने प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त होती है,

ਤਿਸਹਿ ਬਿਸਾਰੈ ਮੁਗਧੁ ਅਜਾਨੁ ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
मूर्ख एवं अज्ञानी पुरुष उस ईश्वर को भुला देता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਹੁ ਭੂਲਨਹਾਰੁ ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥
नश्वर प्राणी हमेशा ही भूल करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥੩॥
नानक राखनहारु अपारु ॥३॥
हे नानक ! केवल अनन्त ईश्वर ही रक्षक है॥ ३॥

ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਿ ਕਉਡੀ ਸੰਗਿ ਰਚੈ ॥
रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥
नाम-रत्न को त्याग कर मनुष्य माया रूपी कौड़ी के संग खुश रहता है।

ਸਾਚੁ ਛੋਡਿ ਝੂਠ ਸੰਗਿ ਮਚੈ ॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
वह सत्य को त्यागकर झूठ के साथ प्रसन्न होता है।

ਜੋ ਛਡਨਾ ਸੁ ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥
जिन पदार्थों को अंततः त्याग देना चाहिए वह उन्हें शाश्वत मानता है,।

ਜੋ ਹੋਵਨੁ ਸੋ ਦੂਰਿ ਪਰਾਨੈ ॥
जो होवनु सो दूरि परानै ॥
जो कुछ होना है, उसको वह दूर समझता है।

ਛੋਡਿ ਜਾਇ ਤਿਸ ਕਾ ਸ੍ਰਮੁ ਕਰੈ ॥
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥
जिस सांसारिक धन को उसे छोड़ जाना है, उसके लिए वह कष्ट उठाता है।

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਤਿਸੁ ਪਰਹਰੈ ॥
संगि सहाई तिसु परहरै ॥
वह उस सहायक (प्रभु) को त्यागता है, जो सदैव उसके साथ है।

ਚੰਦਨ ਲੇਪੁ ਉਤਾਰੈ ਧੋਇ ॥ਗਰਧਬ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਸਮ ਸੰਗਿ ਹੋਇ ॥
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
मूढ़ व्यक्ति उस गधे की तरह है, जिसका अगर चंदन से भी अभिषेक किया जाए, तो वह उसे धो देगा, क्योंकि उसे राख से ही प्यार है।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਪਤਿਤ ਬਿਕਰਾਲ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
मनुष्य भयंकर अंधेरे कुएँ में गिरा पड़ा है।

ਨਾਨਕ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਇਆਲ ॥੪॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥
नानक की प्रार्थना है कि हे दयालु ईश्वर ! इन्हें तुम अन्धेरे कुएँ से बाहर निकाल लो॥ ४॥

ਕਰਤੂਤਿ ਪਸੂ ਕੀ ਮਾਨਸ ਜਾਤਿ ॥
करतूति पसू की मानस जाति ॥
जाति मनुष्य की है, लेकिन कर्म पशुओं वाले हैं।

ਲੋਕ ਪਚਾਰਾ ਕਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥
मनुष्य रात-दिन लोगों के लिए आडम्बर करता रहता है।

ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਮਾਇਆ ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
बाहर (देहि में) वह धार्मिक वेष धारण करता है परन्तु उसके मन में माया की मैल है।

ਛਪਸਿ ਨਾਹਿ ਕਛੁ ਕਰੈ ਛਪਾਇਆ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
चाहे जितना वह दिल में छिपाए परन्तु वह अपनी वास्तविकता को छिपा नहीं सकता।

ਬਾਹਰਿ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਇਸਨਾਨ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
वह ज्ञान, ध्यान एवं स्नान करने का दिखावा करता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਿਆਪੈ ਲੋਭੁ ਸੁਆਨੁ ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
परन्तु उसके मन को लालच रूपी कुत्ता दबाव डाल रहा है।

ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਬਾਹਰਿ ਤਨੁ ਸੁਆਹ ॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
उसके शरीर में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है और बाहर शरीर पर वैराग्य की भस्म विद्यमान है।

ਗਲਿ ਪਾਥਰ ਕੈਸੇ ਤਰੈ ਅਥਾਹ ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥
अपनी गर्दन पर वासना रूपी पत्थर के साथ वह अति गहरे सागर से किस तरह पार हो सकता है ?

ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਬਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
हे नानक ! जिसके हृदय में ईश्वर स्वयं निवास करते हैं

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਹਜਿ ਸਮਾਤਿ ॥੫॥
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥
ऐसा व्यक्ति सहज ही प्रभु में समा जाता है॥ ५॥

ਸੁਨਿ ਅੰਧਾ ਕੈਸੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਵੈ ॥
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
हे प्रभु ! केवल सुनने से ही अन्धा पुरुष किस तरह मार्ग ढूंढ सकता है ?

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਓੜਿ ਨਿਬਹਾਵੈ ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥
उसका हाथ पकड़ लो (चूंकि यह) अन्त तक प्रेम का निर्वाह कर सके।

ਕਹਾ ਬੁਝਾਰਤਿ ਬੂਝੈ ਡੋਰਾ ॥
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
बहरा पुरुष बात किस तरह समझ सकता है ?

ਨਿਸਿ ਕਹੀਐ ਤਉ ਸਮਝੈ ਭੋਰਾ ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥
जब हम रात कहते हैं तो वह दिन समझता है।

ਕਹਾ ਬਿਸਨਪਦ ਗਾਵੈ ਗੁੰਗ ॥
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥
गूंगा पुरुष किस तरह गीत गा सकता है?

ਜਤਨ ਕਰੈ ਤਉ ਭੀ ਸੁਰ ਭੰਗ ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥
यदि वह कोशिश भी करे तो भी उसका स्वर भंग हो जाता है।

ਕਹ ਪਿੰਗੁਲ ਪਰਬਤ ਪਰ ਭਵਨ ॥
कह पिंगुल परबत पर भवन ॥
लंगड़ा किस तरह पहाड़ पर चढ़ सकता है ?

ਨਹੀ ਹੋਤ ਊਹਾ ਉਸੁ ਗਵਨ ॥
नही होत ऊहा उसु गवन ॥
उसका वहाँ जाना संभव नहीं।

ਕਰਤਾਰ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਦੀਨੁ ਬੇਨਤੀ ਕਰੈ ॥
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥
हे नानक ! हे करुणामय ! हे करतार ! (यह) दीन सेवक प्रार्थना करता है कि

ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਕਿਰਪਾ ਤਰੈ ॥੬॥
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥
आपकी कृपा से ही जीव भवसागर से पार हो सकता है॥ ६॥

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਸੁ ਆਵੈ ਨ ਚੀਤਿ ॥
संगि सहाई सु आवै न चीति ॥
जो परमात्मा जीव का साथी एवं सहायक है, वह उसे अपने चित्त में याद नहीं करता।

ਜੋ ਬੈਰਾਈ ਤਾ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥
अपितु वह उससे प्रेम करता है, जो उसका शत्रु है।

ਬਲੂਆ ਕੇ ਗ੍ਰਿਹ ਭੀਤਰਿ ਬਸੈ ॥
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥
वह बालू (रेत) के घर में ही रहता है।

ਅਨਦ ਕੇਲ ਮਾਇਆ ਰੰਗਿ ਰਸੈ ॥
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥
वह आनंद के खेल एवं धन के रंग (खुशी) भोगता है।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਮਨਹਿ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ॥
द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥
वह इनका रहना मन में दृढ़ समझता है।

ਕਾਲੁ ਨ ਆਵੈ ਮੂੜੇ ਚੀਤਿ ॥
कालु न आवै मूड़े चीति ॥
लेकिन मूर्ख जीव अपने मन में काल (मृत्यु) को स्मरण ही नहीं करता।

ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮੋਹ ॥
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
वैर, विरोध, कामवासना, क्रोध, मोह,

ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮਹਾ ਲੋਭ ਧ੍ਰੋਹ ॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥
झूठ, पाप, महालोभ एवं छल-कपट की

ਇਆਹੂ ਜੁਗਤਿ ਬਿਹਾਨੇ ਕਈ ਜਨਮ ॥
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
युक्तियों में मनुष्य ने अनेकों जन्म व्यतीत कर दिए हैं।

ਨਾਨਕ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਆਪਨ ਕਰਿ ਕਰਮ ॥੭॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! अपनी कृपा करके जीव को विकार रूपी भवसागर से बचा ले॥ ७॥

ਤੂ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਮ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥
हे ईश्वर ! आप हमारे ठाकुर है और हमारी आप से ही प्रार्थना है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥
यह आत्मा एवं शरीर सब आपकी ही पूंजी है।

ਤੁਮ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੇਰੇ ॥
म मात पिता हम बारिक तेरे ॥
आप हमारे माता-पिता हो और हम तेरे बालक हैं।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਮਹਿ ਸੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥
आपकी कृपा में बहुत सारे सुख हैं।

ਕੋਇ ਨ ਜਾਨੈ ਤੁਮਰਾ ਅੰਤੁ ॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
हे प्रभु ! आपका अन्त कोई भी नहीं जानता।

ਊਚੇ ਤੇ ਊਚਾ ਭਗਵੰਤ ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
आप सर्वोपरि भगवान् है।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਤੁਮਰੈ ਸੂਤ੍ਰਿ ਧਾਰੀ ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
समूचा जगत् आपके एक सूत्र (धागे) में पिरोया हुआ है।

ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ ਸੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
जो कुछ आपकी सृष्टि से उत्पन्न हुआ है, वह आपका आज्ञाकारी है।

ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
आपकी गति एवं मर्यादा को केवल आप ही जानते हैं।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੮॥੪॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥
हे नानक ! आपका सेवक सदा ही आप पर बलिहारी जाता है॥ ८॥ ४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਦੇਨਹਾਰੁ ਪ੍ਰਭ ਛੋਡਿ ਕੈ ਲਾਗਹਿ ਆਨ ਸੁਆਇ ॥
देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥
परन्तु जो परोपकारी ईश्वर को त्याग देता है, और स्वयं को सांसारिक सुखों से जोड़ लेता है,

ਨਾਨਕ ਕਹੂ ਨ ਸੀਝਈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥
हे नानक ! ऐसा प्राणी कदापि सफल नहीं होता, क्योंकि प्रभु के नाम के बिना उसका मान-सम्मान नहीं रहता॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਦਸ ਬਸਤੂ ਲੇ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥
दस बसतू ले पाछै पावै ॥
ईश्वर मनुष्य को अनेक दिव्य सुविधाएँ प्रदान करते हैं, किंतु मोह और अहंकार में डूबा मनुष्य उन्हें पहचान नहीं पाता और व्यर्थ गंवा देता है।

ਏਕ ਬਸਤੁ ਕਾਰਨਿ ਬਿਖੋਟਿ ਗਵਾਵੈ ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
परमेश्वर द्वारा किसी एक इच्छा की पूर्ति न होने पर भी मनुष्य अपना विश्वास गंवा लेता है।

ਏਕ ਭੀ ਨ ਦੇਇ ਦਸ ਭੀ ਹਿਰਿ ਲੇਇ ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
यदि प्रभु एक वस्तु भी न देवे और दस भी छीन ले

ਤਉ ਮੂੜਾ ਕਹੁ ਕਹਾ ਕਰੇਇ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
तो बताओ यह मूर्ख क्या कर सकता है ?

ਜਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਸਿਉ ਨਾਹੀ ਚਾਰਾ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
जिस ठाकुर के समक्ष कोई जोर नहीं चल सकता,

ਤਾ ਕਉ ਕੀਜੈ ਸਦ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥
उसके समक्ष सदैव प्रणाम करना चाहिए।

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
जिसके मन को प्रभु मीठा लगता है,

ਸਰਬ ਸੂਖ ਤਾਹੂ ਮਨਿ ਵੂਠਾ ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
समस्त सुख उसके मन में वास करते हैं।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਅਪਨਾ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਆ ॥
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
हे नानक ! जिस पुरुष से परमेश्वर अपनी आज्ञा का पालन करवाते हैं,

ਸਰਬ ਥੋਕ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥
संसार के समस्त पदार्थ उसने पा लिए हैं॥ १॥

ਅਗਨਤ ਸਾਹੁ ਅਪਨੀ ਦੇ ਰਾਸਿ ॥
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
साहूकार प्रभु प्राणी को (पदार्थों की) असंख्य पूँजी प्रदान करते हैं।

ਖਾਤ ਪੀਤ ਬਰਤੈ ਅਨਦ ਉਲਾਸਿ ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
प्राणी इसको आनंद एवं उल्लास से खाता-पीता एवं उपयोग करता है।

ਅਪੁਨੀ ਅਮਾਨ ਕਛੁ ਬਹੁਰਿ ਸਾਹੁ ਲੇਇ ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥
यदि साहूकार प्रभु अपनी धरोहर में से कुछ वापिस ले ले,

ਅਗਿਆਨੀ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਕਰੇਇ ॥
अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥
तो मूर्ख व्यक्ति अपने मन में क्रोध करता है।

ਅਪਨੀ ਪਰਤੀਤਿ ਆਪ ਹੀ ਖੋਵੈ ॥
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
इस तरह वह अपना विश्वास स्वयं ही गंवा लेता है।

ਬਹੁਰਿ ਉਸ ਕਾ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥
प्रभु दोबारा उस पर विश्वास नहीं करते।

ਜਿਸ ਕੀ ਬਸਤੁ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਰਾਖੈ ॥
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
जिसकी वस्तु है, उसके समक्ष (स्वयं ही खुशी से) रख देनी चाहिए।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨੈ ਮਾਥੈ ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
और प्रभु की आज्ञा उसके लिए सहर्ष मानने योग्य है।

ਉਸ ਤੇ ਚਉਗੁਨ ਕਰੈ ਨਿਹਾਲੁ ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥
प्रभु उसे पहले की अपेक्षा चौगुणा कृतार्थ कर देते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ॥੨॥
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर सदैव ही दयालु है॥ २॥

ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਹੇਤ ॥ਸਰਪਰ ਹੋਵਤ ਜਾਨੁ ਅਨੇਤ ॥
अनिक भाति माइआ के हेत ॥सरपर होवत जानु अनेत ॥
माया के मोह अनेक प्रकार के हैं,परन्तु यह सब अन्त में नाश हो जाने वाले समझो।

ਬਿਰਖ ਕੀ ਛਾਇਆ ਸਿਉ ਰੰਗੁ ਲਾਵੈ ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
मनुष्य वृक्ष की छाया से प्रेम करता है। (परन्तु)

ਓਹ ਬਿਨਸੈ ਉਹੁ ਮਨਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जब वह नाश होता है तो वह अपने मन में पश्चाताप करता है।

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਚਾਲਨਹਾਰੁ ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥
दृष्टिगोचर जगत् क्षणभंगुर है,

ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਤਹ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰੁ ॥
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥
किंतु अज्ञानी जीव असत्य जगत् को ही अपना मानकर उससे ममता लगाए बैठा है।

ਬਟਾਊ ਸਿਉ ਜੋ ਲਾਵੈ ਨੇਹ ॥
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
जो भी पुरुष यात्री से प्रेम लगाता है,

ਤਾ ਕਉ ਹਾਥਿ ਨ ਆਵੈ ਕੇਹ ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥
अंततः उसके हाथ कुछ नहीं आता।

ਮਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਖਦਾਈ ॥
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥
हे मेरे मन ! भगवान् के नाम का प्रेम सुखदायक है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਲਏ ਲਾਈ ॥੩॥
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥
हे नानक ! भगवान् उनको अपने साथ लगाता है, जिन पर वह कृपा धारण करता है॥ ३ ॥

ਮਿਥਿਆ ਤਨੁ ਧਨੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸਬਾਇਆ ॥
मिथिआ तनु धनु कुट्मबु सबाइआ ॥
यह शरीर, धन-दौलत एवं परिवार सब झूठा है।

ਮਿਥਿਆ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥
अहंकार, ममता एवं माया भी झूठे हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਧਨ ਮਾਲ ॥
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
राज्य, यौवन, धन एवं सम्पति सब कुछ मिथ्या हैं।

ਮਿਥਿਆ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਕਰਾਲ ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥
काम एवं विकराल क्रोध सब नश्वर हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਥ ਹਸਤੀ ਅਸ੍ਵ ਬਸਤ੍ਰਾ ॥
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥
सुन्दर रथ, हाथी, घोड़े एवं सुन्दर वस्त्र ये सभी नश्वर (मिथ्या) हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰੰਗ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਪੇਖਿ ਹਸਤਾ ॥
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥
धन-दौलत संग्रह करने की प्रीति, जिसे देख कर मनुष्य हँसता है, यह भी मिथ्या है।

ਮਿਥਿਆ ਧ੍ਰੋਹ ਮੋਹ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥
छल-कपट, सांसारिक मोह एवं अभिमान भी क्षणभंगुर हैं।

ਮਿਥਿਆ ਆਪਸ ਊਪਰਿ ਕਰਤ ਗੁਮਾਨੁ ॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥
अपने ऊपर घमण्ड करना झूठा है।

ਅਸਥਿਰੁ ਭਗਤਿ ਸਾਧ ਕੀ ਸਰਨ ॥
असथिरु भगति साध की सरन ॥
भगवान् की भक्ति एवं संतों की शरण अटल है।

ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥
हे नानक ! भगवान् के चरणों को ही जप कर प्राणी वास्तविक जीवन जीता है। ४॥

ਮਿਥਿਆ ਸ੍ਰਵਨ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਸੁਨਹਿ ॥
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मनुष्य के वे कान व्यर्थ हैं जो पराई निन्दा सुनते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਹਸਤ ਪਰ ਦਰਬ ਕਉ ਹਿਰਹਿ ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
वे हाथ व्यर्थ हैं जो दूसरों का धन चुराते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਨੇਤ੍ਰ ਪੇਖਤ ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਰੂਪਾਦ ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
वे नेत्र व्यर्थ हैं वे आंखें जो पराई स्त्री की सुंदरता को बुरी नियत से देखती हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਸਨਾ ਭੋਜਨ ਅਨ ਸ੍ਵਾਦ ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
वह जिह्वा भी व्यर्थ है, जो पकवान एवं दूसरे स्वाद भोगती है।

ਮਿਥਿਆ ਚਰਨ ਪਰ ਬਿਕਾਰ ਕਉ ਧਾਵਹਿ ॥
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
वे चरण व्यर्थ हैं, जो दूसरों का बुरा करने के लिए दौड़ते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਮਨ ਪਰ ਲੋਭ ਲੁਭਾਵਹਿ ॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥
वह मन भी झूठा है जो पराए धन का लोभ करता है।

ਮਿਥਿਆ ਤਨ ਨਹੀ ਪਰਉਪਕਾਰਾ ॥
मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
वे शरीर व्यर्थ है, जो परोपकार नहीं करता।

ਮਿਥਿਆ ਬਾਸੁ ਲੇਤ ਬਿਕਾਰਾ ॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥
वह नाक व्यर्थ है, जो विषय-विकारों की गंध सूंघ रही है।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਮਿਥਿਆ ਸਭ ਭਏ ॥
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥
ऐसी समझ के बिना प्रत्येक अंग नश्वर है।

ਸਫਲ ਦੇਹ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਲਏ ॥੫॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥
हे नानक ! वह शरीर सफल है, जो हरि-परमेश्वर का नाम जपता रहता है।॥ ५॥

ਬਿਰਥੀ ਸਾਕਤ ਕੀ ਆਰਜਾ ॥
बिरथी साकत की आरजा ॥
शाक्त मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

ਸਾਚ ਬਿਨਾ ਕਹ ਹੋਵਤ ਸੂਚਾ ॥
साच बिना कह होवत सूचा ॥
सत्य के बिना वह कैसे शुद्ध हो सकता है?

ਬਿਰਥਾ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਤਨੁ ਅੰਧ ॥
बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥
नाम के बिना अज्ञानी पुरुष का शरीर व्यर्थ है। (क्योंकि)

ਮੁਖਿ ਆਵਤ ਤਾ ਕੈ ਦੁਰਗੰਧ ॥
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥
क्योंकि ऐसे व्यक्ति के मुंह से बदनामी की दुर्गंध आती है।

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਬ੍ਰਿਥਾ ਬਿਹਾਇ ॥
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥
प्रभु के सिमरन के बिना दिन और रात व्यर्थ गुजर जाते हैं,

ਮੇਘ ਬਿਨਾ ਜਿਉ ਖੇਤੀ ਜਾਇ ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥
जिस तरह वर्षा के बिना फसल नष्ट हो जाती है।

ਗੋਬਿਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਿਥੇ ਸਭ ਕਾਮ ॥
गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥
गोविन्द के भजन बिना सभी कार्य व्यर्थ हैं,

ਜਿਉ ਕਿਰਪਨ ਕੇ ਨਿਰਾਰਥ ਦਾਮ ॥
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥
जैसे कंजूस पुरुष की दौलत व्यर्थ है।

ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਤੇ ਜਨ ਜਿਹ ਘਟਿ ਬਸਿਓ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
वह जीव बड़ा भाग्यशाली है, जिसके हृदय में भगवान् का नाम वास करता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੬॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥
हे नानक ! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ ६॥

ਰਹਤ ਅਵਰ ਕਛੁ ਅਵਰ ਕਮਾਵਤ ॥
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनुष्य कहता कुछ है और करता बिल्कुल ही कुछ और है।

ਮਨਿ ਨਹੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮੁਖਹੁ ਗੰਢ ਲਾਵਤ ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥
उसके हृदय में (प्रभु के प्रति) प्रेम नहीं लेकिन मुख से व्यर्थ बातें करता है।

ਜਾਨਨਹਾਰ ਪ੍ਰਭੂ ਪਰਬੀਨ ॥
जाननहार प्रभू परबीन ॥
सब कुछ जानने वाले प्रभु बड़े चतुर है,

ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਨ ਕਾਹੂ ਭੀਨ ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥
वह कभी किसी के बाहरी वेष से खुश नहीं होते।

ਅਵਰ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪਿ ਨ ਕਰੈ ॥
अवर उपदेसै आपि न करै ॥
जो दूसरों को उपदेश देता है और स्वयं उस पर अनुसरण नहीं करता,

ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਜਨਮੈ ਮਰੈ ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥
वह जगत् में आवागमन करता रहता है।

ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
जिस पुरुष के हृदय में निरंकार प्रभु वास करते हैं,

ਤਿਸ ਕੀ ਸੀਖ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥
उसके उपदेश से समूचा जगत् (विकारों से) बच जाता है।

ਜੋ ਤੁਮ ਭਾਨੇ ਤਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
हे प्रभु ! जो आपको अच्छे लगते हैं, केवल वही आपको जान सकते हैं।

ਨਾਨਕ ਉਨ ਜਨ ਚਰਨ ਪਰਾਤਾ ॥੭॥
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥
हे नानक ! मैं ऐसे भक्तों के चरण-स्पर्श करता हूँ॥ ७॥

ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਭੁ ਜਾਨੈ ॥
करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥
मैं उस पारब्रह्म के समक्ष प्रार्थना करता हूँ, जो सब कुछ जानते हैं।

ਅਪਨਾ ਕੀਆ ਆਪਹਿ ਮਾਨੈ ॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥
अपने उत्पन्न किए प्राणी को वह स्वयं ही सम्मान प्रदान करते हैं।

ਆਪਹਿ ਆਪ ਆਪਿ ਕਰਤ ਨਿਬੇਰਾ ॥
आपहि आप आपि करत निबेरा ॥
ईश्वर स्वयं ही (प्राणियों के कर्मों के अनुसार) न्याय करते हैं।

ਕਿਸੈ ਦੂਰਿ ਜਨਾਵਤ ਕਿਸੈ ਬੁਝਾਵਤ ਨੇਰਾ ॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥
किसी को यह बोध होता है कि ईश्वर हमारे निकट है, जबकि किसी को लगता है कि वह कहीं दूर है।

ਉਪਾਵ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲ ਤੇ ਰਹਤ ॥
उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥
समस्त कोशिशों एवं चतुराईयों से ईश्वर परे है।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਜਾਨੈ ਆਤਮ ਕੀ ਰਹਤ ॥
सभु कछु जानै आतम की रहत ॥
क्योंकि वह मनुष्य के मन की अवस्था भलीभाँति समझते हैं।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਲੜਿ ਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥
वह उसको अपने साथ मिला लेते हैं, जो जीव उनको भला लगता है।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥
प्रभु समस्त स्थानों एवं स्थानों की दूरी पर सर्वव्यापक हो रहा है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ॥
सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥
जिस पर ईश्वर कृपा धारण करता है, वही उसका सेवक है।

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਹਰੀ ॥੮॥੫॥
निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥
हे नानक ! क्षण-क्षण हरि का जाप करते रहो ॥ ८॥ ५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਰੁ ਲੋਭ ਮੋਹ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅਹੰਮੇਵ ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहमेव ॥
हे ईश्वर ! मेरा काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार निवृत्त हो जाए

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਗੁਰਦੇਵ ॥੧॥
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥
हे गुरुदेव ! मैं आपकी शरण में आया हूँ, मुझ पर ऐसी कृपा करें ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖਾਹਿ ॥
जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥
हे जीव ! जिसकी कृपा से तू छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन खाता है,

ਤਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਰਖੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥
उस प्रभु को अपने मन में याद कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਗੰਧਤ ਤਨਿ ਲਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥
जिसकी कृपा से तुम अपने शरीर पर सुगंधियाँ लगाते हो,

ਤਿਸ ਕਉ ਸਿਮਰਤ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥
उसका भजन करने से तुझे परमगति मिल जाएगी।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਸਹਿ ਸੁਖ ਮੰਦਰਿ ॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
जिसकी कृपा से तुम महलों में सुख से रहते हो,

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਇ ਸਦਾ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥
अपने मन में हमेशा उसका ध्यान करो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਗ੍ਰਿਹ ਸੰਗਿ ਸੁਖ ਬਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥
जिसकी कृपा से तुम अपने घर में सुखपूर्वक रहते हो,

ਆਠ ਪਹਰ ਸਿਮਰਹੁ ਤਿਸੁ ਰਸਨਾ ॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥
अपनी जिह्वा से आठ पहर उसका सिमरन करो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਰੰਗ ਰਸ ਭੋਗ ॥
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
हे नानक ! जिस की कृपा से रंग तमाशे, स्वादिष्ट व्यंजन एवं पदार्थ प्राप्त होते हैं,

ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਧਿਆਵਨ ਜੋਗ ॥੧॥
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥
उस याद करने योग्य ईश्वर का सदैव ध्यान करना चाहिए॥ १॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਹਢਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि पाट पट्मबर हढावहि ॥
जिसकी कृपा से तुम रेशमी वस्त्र पहनते हो,

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਕਤ ਅਵਰ ਲੁਭਾਵਹਿ ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥
उसे भुलाकर क्यों दूसरों में मस्त हो रहे हो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸੇਜ ਸੋਈਜੈ ॥
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
जिसकी कृपा से तुम सुखपूर्वक सेज पर सोते हो।

ਮਨ ਆਠ ਪਹਰ ਤਾ ਕਾ ਜਸੁ ਗਾਵੀਜੈ ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥
हे मेरे मन ! उस प्रभु का आठों प्रहर यशोगान करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁਝੁ ਸਭੁ ਕੋਊ ਮਾਨੈ ॥
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
जिसकी कृपा से प्रत्येक व्यक्ति तेरा आदर-सत्कार करता है,

ਮੁਖਿ ਤਾ ਕੋ ਜਸੁ ਰਸਨ ਬਖਾਨੈ ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥
अपने मुँह एवं जिह्वा से सदा उस प्रभु का यशोगान करो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੋ ਰਹਤਾ ਧਰਮੁ ॥
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥
जिनकी कृपा से तेरा धर्म स्थिर रहता है,

ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥
हे मेरे मन ! तू हमेशा उस पारब्रह्म का ध्यान कर।

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਜਪਤ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ਪਾਵਹਿ ॥
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
पूज्य परमेश्वर की आराधना करने से तू उसके दरबार में शोभा प्राप्त करेगा।

ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਵਹਿ ॥੨॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥
हे नानक ! इस तरह तुम प्रतिष्ठा सहित अपने धाम (परलोक) जाओगे॥ २॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਰੋਗ ਕੰਚਨ ਦੇਹੀ ॥
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
हे मन ! जिनकी कृपा से तुझे सोने जैसा सुन्दर शरीर मिला है,

ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ਤਿਸੁ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
उस प्रियतम राम से वृति लगा।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਓਲਾ ਰਹਤ ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
जिनकी कृपा से तेरे पापों पर पर्दा रहता है,

ਮਨ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤ ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥
उस प्रभु-परमेश्वर की स्तुति करने से तुम सुख प्राप्त कर लोगे।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਸਗਲ ਛਿਦ੍ਰ ਢਾਕੇ ॥
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
जिनकी कृपा से तेरे सभी पाप छिप जाते हैं।

ਮਨ ਸਰਨੀ ਪਰੁ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕੈ ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥
हे मन ! उस प्रभु-परमेश्वर की शरण ले।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁਝੁ ਕੋ ਨ ਪਹੂਚੈ ॥
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
जिनकी कृपा से कोई तेरे बराबर नहीं पहुँचता,

ਮਨ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਊਚੇ ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥
हे मेरे मन! अपने श्वास-श्वास से सर्वोपरि प्रभु को याद कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਈ ਦ੍ਰੁਲਭ ਦੇਹ ॥
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
जिनकी कृपा से तुझे दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹ ॥੩॥
नानक ता की भगति करेह ॥३॥
हे नानक ! उस भगवान् की भक्ति किया कर ॥ ३॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਭੂਖਨ ਪਹਿਰੀਜੈ ॥
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
जिनकी कृपा से आभूषण पहने जाते हैं,

ਮਨ ਤਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਕਿਉ ਆਲਸੁ ਕੀਜੈ ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥
हे मन ! उसकी आराधना करते हुए आलस्य क्यों किया जाए?

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅਸ੍ਵ ਹਸਤਿ ਅਸਵਾਰੀ ॥
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
जिनकी कृपा से तुम घोड़ों एवं हाथियों की सवारी करते हो,

ਮਨ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਸਾਰੀ ॥
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥
हे मन! उस ईश्वर को कभी विस्मृत न कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਧਨਾ ॥
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥
जिनकी कृपा से उद्यान, धरती एवं धन प्राप्त हुए हैं,

ਰਾਖੁ ਪਰੋਇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨੇ ਮਨਾ ॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥
उस ईश्वर को अपने मन में पिरोकर रख।

ਜਿਨਿ ਤੇਰੀ ਮਨ ਬਨਤ ਬਨਾਈ ॥
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
हे मन! जिस ईश्वर ने तेरी रचना की है,

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸਦ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਈ ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥
उठते-बैठते हर समय उसका ध्यान करते रहना चाहिए।

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਇ ਜੋ ਏਕ ਅਲਖੈ ॥
तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥
हे नानक ! उस एक अदृश्य प्रभु का चिन्तन कर।

ਈਹਾ ਊਹਾ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਰਖੈ ॥੪॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥
वह लोक-परलोक दोनों में तेरी रक्षा करेगा ॥ ४ ॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਹਿ ਪੁੰਨ ਬਹੁ ਦਾਨ ॥
जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥
जिनकी कृपा से तुम बड़ा दान-पुण्य करते हो,

ਮਨ ਆਠ ਪਹਰ ਕਰਿ ਤਿਸ ਕਾ ਧਿਆਨ ॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥
हे मन ! आठों पहर उसका ही ध्यान करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
जिनकी कृपा से तू धार्मिक संस्कार एवं सांसारिक कर्म करता है,

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰੀ ॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥
अपने श्वास-श्वास से उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਸੁੰਦਰ ਰੂਪੁ ॥
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
जिनकी कृपा से तुम्हें सुन्दर रूप प्राप्त हुआ है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਹੁ ਸਦਾ ਅਨੂਪੁ ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
उस अनुपम प्रभु का हमेशा सिमरन करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਨੀਕੀ ਜਾਤਿ ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
जिनकी दया से तुझे उच्च (मनुष्य) जाति मिली है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥
सदा उस प्रभु का दिन-रात चिन्तन कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਪਤਿ ਰਹੈ ॥
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
जिसकी कृपा से तेरी प्रतिष्ठा बनी है,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਜਸੁ ਕਹੈ ॥੫॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से उसकी महिमा किया कर ॥५॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਨਹਿ ਕਰਨ ਨਾਦ ॥
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिनकी दया से तू कानों से शब्द सुनता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੇਖਹਿ ਬਿਸਮਾਦ ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिनकी दया से तू आश्चर्यजनक कौतुक देखता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि बोलहि अम्रित रसना ॥
जिनकी दया से तू अपनी जिह्वा से मीठे वचन बोलता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜੇ ਬਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिनकी कृपा से तू सहज ही सुखपूर्वक रहता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਸਤ ਕਰ ਚਲਹਿ ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिनकी दया से तेरे हाथ हिलते और काम करते हैं।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੰਪੂਰਨ ਫਲਹਿ ॥
जिह प्रसादि स्मपूरन फलहि ॥
जिनकी दया से तेरे सम्पूर्ण काम सफल होते हैं।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥
जिनकी दया से तुझे परमगति मिलती है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥
जिनकी दया से तुम सहज सुख में लीन हो जाओगे,

ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਕਤ ਲਾਗਹੁ ॥
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
ऐसे प्रभु को छोड़कर तुम क्यों किसी दूसरे से लग रहे हो ?

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਜਾਗਹੁ ॥੬॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से अपने मन को ईश्वर की ओर जागृत कर ॥६॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂੰ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥
जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
जिनकी कृपा से तू दुनिया में लोकप्रिय हुआ है,

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਮੂਲਿ ਨ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿ ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
उस प्रभु को कभी अपने हृदय से न भुला।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਪਰਤਾਪੁ ॥
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥
जिनकी कृपा से तेरा तेज-प्रताप बना है,

ਰੇ ਮਨ ਮੂੜ ਤੂ ਤਾ ਕਉ ਜਾਪੁ ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
हे मेरे मूर्ख मन ! तू उसकी आराधना करता रह।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਕਾਰਜ ਪੂਰੇ ॥
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
जिनकी दया से तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं,

ਤਿਸਹਿ ਜਾਨੁ ਮਨ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥
अपने हृदय में उसको सदा निकट समझ।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂੰ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੁ ॥
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥
जिनकी दया से तुझे सत्य प्राप्त होता है,

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂੰ ਤਾ ਸਿਉ ਰਾਚੁ ॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
हे मेरे मन ! तू उससे प्रेम कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
जिनकी कृपा से सबकी गति हो जाती है,

ਨਾਨਕ ਜਾਪੁ ਜਪੈ ਜਪੁ ਸੋਇ ॥੭॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥
हे नानक ! उसकी स्तुति गाओ और उसके नाम पर ध्यान करो। ॥ ७ ॥

ਆਪਿ ਜਪਾਏ ਜਪੈ ਸੋ ਨਾਉ ॥
आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
वही पुरुष ईश्वर का नाम जपता है, जिससे वह स्वयं जपाते हैं।

ਆਪਿ ਗਾਵਾਏ ਸੁ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥
केवल वही ईश्वर का यशोगान करता है, जिससे वह स्वयं गुणगान करवाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभु की कृपा से हृदय में दिव्य ज्ञान का प्रकाश होता है।

ਪ੍ਰਭੂ ਦਇਆ ਤੇ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸੁ ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभु की कृपा से हृदय-कमल प्रफुल्लित होता है।

ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਬਸੈ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥
जब प्रभु सुप्रसन्न होते हैं, तो वह मनुष्य के हृदय में आ निवास करते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਦਇਆ ਤੇ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥
प्रभु की दया से मनुष्य की बुद्धि उत्तम हो जाती है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਮਇਆ ॥
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
हे प्रभु ! समस्त खजाने आपकी दया में हैं।

ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਕਿਨਹੂ ਲਇਆ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥
अपने आप किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਲਗਹਿ ਹਰਿ ਨਾਥ ॥
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
हे हरि-परमेश्वर ! आप जिस ओर प्राणियों को लगाते हो, वे उधर ही लग जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਇਨ ਕੈ ਕਛੂ ਨ ਹਾਥ ॥੮॥੬॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥
हे नानक ! इन प्राणियों के वश में कुछ नहीं है ॥८॥६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋਇ ॥
अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
वह पारब्रह्म प्रभु अगम्य एवं अनन्त है।

ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੁ ਮੁਕਤਾ ਹੋਇ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
जो कोई भी उसके नाम का जाप करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਸੁਨਿ ਮੀਤਾ ਨਾਨਕੁ ਬਿਨਵੰਤਾ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
नानक प्रार्थना करते हैं, हे मेरे मित्र ! ध्यानपूर्वक सुन,

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਅਚਰਜ ਕਥਾ ॥੧॥
साध जना की अचरज कथा ॥१॥
साधुओं की कथा बड़ी अद्भुत है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਤ ॥
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साधुओं की संगति करने से मुख उज्ज्वल हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਤ ॥
साधसंगि मलु सगली खोत ॥
साधुओं की संगति करने से विकारों की समस्त मैल दूर हो जाती है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साधुओं की संगति करने से अभिमान मिट जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਗਟੈ ਸੁਗਿਆਨੁ ॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥
साधुओं की संगति करने से आत्म-ज्ञान प्रगट हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬੁਝੈ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साधुओं की संगति करने से प्रभु निकट ही रहता हुआ प्रतीत होता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਭੁ ਹੋਤ ਨਿਬੇਰਾ ॥
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥
साधुओं की संगति करने से सभी विवाद निपट जाते हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਏ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साधुओं की संगति करने से नाम-रत्न प्राप्त हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਊਪਰਿ ਜਤਨੁ ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य केवल एक ईश्वर हेतु ही प्रयास करता है।

ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬਰਨੈ ਕਉਨੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
कौन-सा प्राणी साधुओं की महिमा का वर्णन कर सकता है ?

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਪ੍ਰਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥੧॥
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥
हे नानक ! साधुओं की शोभा प्रभु (की महिमा) में ही लीन हुई है॥ १॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਗੋਚਰੁ ਮਿਲੈ ॥
साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साधुओं की संगति करने से अगोचर प्रभु मिल जाते हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਪਰਫੁਲੈ ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी सदा प्रफुल्लित रहता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਆਵਹਿ ਬਸਿ ਪੰਚਾ ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साधुओं की संगति करने से पाँच शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) वश में आ जाते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਭੁੰਚਾ ॥
साधसंगि अम्रित रसु भुंचा ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य अमृत रूप नाम का रस चख लेता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਇ ਸਭ ਕੀ ਰੇਨ ॥
साधसंगि होइ सभ की रेन ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य सबकी धूलि बन जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਨੋਹਰ ਬੈਨ ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साधुओं की संगति करने से वाणी मनोहर हो जाती है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਤਹੂੰ ਧਾਵੈ ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साधुओं की संगति करने से मन कहीं नहीं भटकता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਸਥਿਤਿ ਮਨੁ ਪਾਵੈ ॥
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥
साधुओं की संगति करने से मन स्थिरता प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਤੇ ਭਿੰਨ ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साधुओं की संगति में यह माया से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥੨॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥
हे नानक ! साधुओं की संगति में रहने से प्रभु सुप्रसन्न हो जाते हैं। ॥ २॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਸਮਨ ਸਭਿ ਮੀਤ ॥
साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥
साधु की संगति करने से सभी दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਹਾ ਪੁਨੀਤ ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥
साधु की संगति करने से मनुष्य महापवित्र हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਿਸ ਸਿਉ ਨਹੀ ਬੈਰੁ ॥
साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥
साधुओं की संगति करने से वह किसी से वैर नहीं करता।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬੀਗਾ ਪੈਰੁ ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य कुमार्ग की ओर नहीं चलता।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੰਦਾ ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साधु की संगति करने से कुछ भी बुरा दिखाई नहीं देता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾਨੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
साधसंगि जाने परमानंदा ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य महान सुख के स्वामी ईश्वर को ही जानता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਹਉ ਤਾਪੁ ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य के अहंकार का ताप उतर जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਜੈ ਸਭੁ ਆਪੁ ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य समस्त अहंत्व को त्याग देता है।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਸਾਧ ਬਡਾਈ ॥
आपे जानै साध बडाई ॥
ईश्वर स्वयं ही साधुओं की महिमा को जानते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭੂ ਬਨਿ ਆਈ ॥੩॥
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥
हे नानक ! साधु एवं परमेश्वर का प्रेम परिपक्व हो जाता है॥ ३ ॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਬਹੂ ਧਾਵੈ ॥
साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साधु की संगति करने से प्राणी का मन कभी नहीं भटकता।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साधु की संगति करने से वह सदा सुख प्राप्त करता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਲਹੈ ॥
साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधुओं की संगति करने से नाम रूपी अगोचर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਜਰੁ ਸਹੈ ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य शिथिल न होने वाली शक्ति को सहन कर लेता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬਸੈ ਥਾਨਿ ਊਚੈ ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी सर्वोच्च स्थान में निवास करता है।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਹਲਿ ਪਹੂਚੈ ॥
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य आत्मस्वरूप में पहुँच जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਦ੍ਰਿੜੈ ਸਭਿ ਧਰਮ ॥
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी का धर्म पूरी तरह सुदृढ़ हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य केवल पारब्रह्म की ही आराधना करता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਏ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨ ॥
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य नाम रूपी खजाना प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਕੈ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥
हे नानक ! मैं उन साधुओं पर तन-मन से न्यौछावर हूँ॥ ४॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਭ ਕੁਲ ਉਧਾਰੈ ॥
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य के समूचे वंश का उद्धार हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਾਜਨ ਮੀਤ ਕੁਟੰਬ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥
साधसंगि साजन मीत कुट्मब निसतारै ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य के मित्र-सज्जन एवं परिवार का भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਵੈ ॥
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
साधुओं की संगति में रहने से वह धन प्राप्त हो जाता है,

ਜਿਸੁ ਧਨ ਤੇ ਸਭੁ ਕੋ ਵਰਸਾਵੈ ॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥
जिस धन से प्रत्येक पुरुष लाभ प्राप्त करता है और तृप्त हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਰੇ ਸੇਵਾ ॥
साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साधुओं की संगति में रहने से यमराज भी सेवा करता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੋਭਾ ਸੁਰਦੇਵਾ ॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥
जो साधुओं की संगति में रहता है, देवदूत एवं देवतागण भी उसका यशोगान करते हैं।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਪ ਪਲਾਇਨ ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साधुओं की संगति करने से समूचे पाप नाश हो जाते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਨ ਗਾਇਨ ॥
साधसंगि अम्रित गुन गाइन ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य अमृतमयी नाम का यश गायन करता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸ੍ਰਬ ਥਾਨ ਗੰਮਿ ॥
साध कै संगि स्रब थान गमि ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य की समस्त स्थानों पर पहुँच हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਫਲ ਜਨੰਮ ॥੫॥
नानक साध कै संगि सफल जनम ॥५॥
हे नानक ! साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है॥ ५॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਘਾਲ ॥
साध कै संगि नही कछु घाल ॥
पवित्र संगति में प्रायश्चित जैसा कोई आंतरिक संघर्ष नहीं होता।

ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲ ॥
दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साधुओं के दर्शनमात्र एवं भेंट से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਲੂਖਤ ਹਰੈ ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਰਕ ਪਰਹਰੈ ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य नरक से बच जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸੁਹੇਲਾ ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी लोक-परलोक में सुखी हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਛੁਰਤ ਹਰਿ ਮੇਲਾ ॥
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥
साधुओं की संगति करने से जो ईश्वर से विमुख हुए हैं, वे उससे मिल जाते हैं।

ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य जिस फल का इच्छुक होता है, उसे वह मिल जाता है

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬਿਰਥਾ ਜਾਵੈ ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
साधुओं की संगति करने से वह खाली हाथ नहीं जाता।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਾਧ ਰਿਦ ਬਸੈ ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥
पारब्रह्म-प्रभु साधुओं के हृदय में निवास करता है।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੈ ਸਾਧ ਸੁਨਿ ਰਸੈ ॥੬॥
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥
हे नानक ! साधुओं की जिह्वा से ईश्वर का नाम सुनकर जीव पार हो जाता है॥ ६॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੁਨਉ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साधु की संगति में रहकर भगवान् का नाम सुनो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥
साधुओं की संगति में ईश्वर का गुणानुवाद करो।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰੈ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य प्रभु को अपने हृदय से नहीं भुलाता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਰਪਰ ਨਿਸਤਰੈ ॥
साधसंगि सरपर निसतरै ॥
साधुओं की संगति में उसका निश्चित ही भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਲਗੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य को प्रभु अच्छे लगने लगते हैं।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਡੀਠਾ ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साधुओं की संगति में ईश्वर प्रत्येक हृदय में दिखाई देते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਏ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
साधसंगि भए आगिआकारी ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य ईश्वर का आज्ञाकारी हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥
साधसंगि गति भई हमारी ॥
साधुओं की संगति में हमारी गति हो गई है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
साधुओं की संगति में रहने से तमाम रोग मिट जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਭੇਟੇ ਸੰਜੋਗ ॥੭॥
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥
हे नानक ! साधुओं का संग संयोग से ही मिलता है।॥ ७॥

ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬੇਦ ਨ ਜਾਨਹਿ ॥
साध की महिमा बेद न जानहि ॥
साधु की महिमा वेद भी नहीं जानते।

ਜੇਤਾ ਸੁਨਹਿ ਤੇਤਾ ਬਖਿਆਨਹਿ ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
वे उनके बारे जितना सुनते हैं, उतना ही वर्णन करते हैं।

ਸਾਧ ਕੀ ਉਪਮਾ ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साधु की उपमा (माया के) तीनों ही गुणों से दूर है।

ਸਾਧ ਕੀ ਉਪਮਾ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰਿ ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥
साधु की उपमा सर्वव्यापक है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਾ ਨਾਹੀ ਅੰਤ ॥
साध की सोभा का नाही अंत ॥
साधु की शोभा का कोई अन्त नहीं।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਦਾ ਬੇਅੰਤ ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साधु की शोभा सदैव ही अनन्त है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਊਚ ਤੇ ਊਚੀ ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साधु की शोभा उच्च -सर्वोच्च है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਮੂਚ ਤੇ ਮੂਚੀ ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साधु की शोभा महानों में बड़ी महान है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਾਧ ਬਨਿ ਆਈ ॥
साध की सोभा साध बनि आई ॥
साधु की शोभा केवल साधु को ही उपयुक्त लगती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੮॥੭॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥
नानक कहते हैं कि हे मेरे भाई ! साधु एवं प्रभु में कोई भेद नहीं ॥ ८ ॥ ७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
जिसके मन में सत्य है और मुँह में भी वही सत्य है

ਅਵਰੁ ਨ ਪੇਖੈ ਏਕਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
और जो एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे को नहीं देखता,

ਨਾਨਕ ਇਹ ਲਛਣ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥
हे नानक ! यह गुण ब्रह्मज्ञानी के होते हैं।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪ ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा निर्लिप्त रहता है,

ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲ ਅਲੇਪ ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥
जैसे जल में कमल का फूल स्वच्छ होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਦੋਖ ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥
ब्रह्मज्ञानी सदा निर्दोष है,

ਜੈਸੇ ਸੂਰੁ ਸਰਬ ਕਉ ਸੋਖ ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
जैसे सूर्य समस्त (रसों को) सुखा देता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਮਾਨਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
ब्रह्मज्ञानी सबको एक आँख से देखता है,

ਜੈਸੇ ਰਾਜ ਰੰਕ ਕਉ ਲਾਗੈ ਤੁਲਿ ਪਵਾਨ ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
जैसे हवा राजा और कंगाल को एक समान लगती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਧੀਰਜੁ ਏਕ ॥
ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
ब्रह्मज्ञानी की सहनशीलता एक समान होती है,

ਜਿਉ ਬਸੁਧਾ ਕੋਊ ਖੋਦੈ ਕੋਊ ਚੰਦਨ ਲੇਪ ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
जैसे कोई धरती को खोदता है और कोई चन्दन का लेप करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਇਹੈ ਗੁਨਾਉ ॥
ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
ब्रह्मज्ञानी का यही गुण है।

ਨਾਨਕ ਜਿਉ ਪਾਵਕ ਕਾ ਸਹਜ ਸੁਭਾਉ ॥੧॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥
हे नानक ! जैसे अग्नि का सहज स्वभाव होता है। १॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਨਿਰਮਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
ब्रह्मज्ञानी निर्मल से भी परम निर्मल है,

ਜੈਸੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਜਲਾ ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥
जैसे जल को मैल नहीं लगती।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਨਿ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
ब्रह्मज्ञानी के मन में यूं प्रकाश होता है जैसे

ਜੈਸੇ ਧਰ ਊਪਰਿ ਆਕਾਸੁ ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥
पृथ्वी के ऊपर आकाश ।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਿਤ੍ਰ ਸਤ੍ਰੁ ਸਮਾਨਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रह्मज्ञानी के लिए मित्र एवं शत्रु एक समान होते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਹੀ ਅਭਿਮਾਨ ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥
ब्रह्मज्ञानी में थोड़ा-सा भी अभिमान नहीं होता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
ब्रह्मज्ञानी उच्च -सर्वोच्च है।

ਮਨਿ ਅਪਨੈ ਹੈ ਸਭ ਤੇ ਨੀਚਾ ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
परन्तु अपने मन में वह सबसे निम्न होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੇ ਜਨ ਭਏ ॥
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
हे नानक ! केवल वही पुरुष ब्रह्मज्ञानी बनता है,

ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥
जिन्हें परमेश्वर स्वयं बनाता है ॥२॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
ब्रह्मज्ञानी सबकी चरण-धूलि है।

ਆਤਮ ਰਸੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਚੀਨਾ ॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥
ब्रह्मज्ञानी आत्मिक आनन्द को अनुभव करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਸਭ ਊਪਰਿ ਮਇਆ ॥
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रह्मज्ञानी सब पर कृपा करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਤੇ ਕਛੁ ਬੁਰਾ ਨ ਭਇਆ ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
ब्रह्मज्ञानी के पास कोई बुराई नहीं होती और वह कुछ भी बुरा नहीं करता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਸਮਦਰਸੀ ॥
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रह्मज्ञानी सदैव समदर्शी होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਰਸੀ ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥
ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि से अमृत की वर्षा होती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬੰਧਨ ਤੇ ਮੁਕਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रह्मज्ञानी बन्धनों से मुक्त रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਜੁਗਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रह्मज्ञानी का जीवन-आचरण बड़ा पवित्र है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਭੋਜਨੁ ਗਿਆਨ ॥
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन
ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान होता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਬ੍ਰਹਮ ਧਿਆਨੁ ॥੩॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी भगवान् के ध्यान में ही मग्न रहता है॥ ३॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਏਕ ਊਪਰਿ ਆਸ ॥
ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रह्मज्ञानी की एक ईश्वर पर ही आशा होती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸ ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥
ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਗਰੀਬੀ ਸਮਾਹਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रह्मज्ञानी नम्रता में ही स्थिर रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਪਰਉਪਕਾਰ ਉਮਾਹਾ ॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥
ब्रह्मज्ञानी को परोपकार करने का उत्साह बना रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਹੀ ਧੰਧਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रह्मज्ञानी सांसारिक विवादों से परे होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਲੇ ਧਾਵਤੁ ਬੰਧਾ ॥
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥
ब्रह्मज्ञानी अपने भागते मन को नियंत्रण में कर लेता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਹੋਇ ਸੁ ਭਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रह्मज्ञानी के कर्म श्रेष्ठ हैं, वह जो भी करता है, भला ही करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥
ब्रह्मज्ञानी भलीभाँति सफल होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੰਗਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥
ब्रह्मज्ञानी की संगति में रहने से सबका उद्धार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਪੈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥੪॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥
हे नानक ! सारी दुनिया ब्रह्मज्ञानी की प्रशंसा करती है॥ ४॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਏਕੈ ਰੰਗ ॥
ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रह्मज्ञानी केवल एक ईश्वर से ही प्रेम करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਬਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੰਗ ॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ईश्वर ब्रह्मज्ञानी के साथ-साथ रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥
ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का आधार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਮੁ ਪਰਵਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥
ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का परिवार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਸਦ ਜਾਗਤ ॥
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा आध्यात्मिक रूप से जाग्रत रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਅਹੰਬੁਧਿ ਤਿਆਗਤ ॥
ब्रहम गिआनी अह्मबुधि तिआगत ॥
ब्रह्मज्ञानी अपनी अहंबुद्धि को त्याग देता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਨਿ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रह्मज्ञानी के हृदय में परमानन्द प्रभु निवास करते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਘਰਿ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥
ब्रह्मज्ञानी के हृदय-रूपी घर में सदा आनंद बना रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੁਖ ਸਹਜ ਨਿਵਾਸ ॥
ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा सहज सुख में निवास करता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸ ॥੫॥
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता।॥५॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ज्ञाता होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਏਕ ਸੰਗਿ ਹੇਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रह्मज्ञानी एक ईश्वर से ही प्रेम करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਹੋਇ ਅਚਿੰਤ ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रह्मज्ञानी का हृदय हमेशा चिन्तामुक्त रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रह्मज्ञानी का उपदेश पवित्र करने वाला होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਿਸੁ ਕਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रह्मज्ञानी वही होता है, जिसे ईश्वर स्वयं लोकप्रिय बनाता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਬਡ ਪਰਤਾਪ ॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥
ब्रह्मज्ञानी का बड़ा प्रताप है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਦਰਸੁ ਬਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रह्मज्ञानी के दर्शन किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रह्मज्ञानी पर हमेशा बलिहारी जाना चाहिए।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਖੋਜਹਿ ਮਹੇਸੁਰ ॥
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
ब्रह्मज्ञानी को शिवशंकर भी खोजते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਆਪਿ ਪਰਮੇਸੁਰ ॥੬॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥
हे नानक ! परमेश्वर स्वयं ही ब्रह्मज्ञानी है॥ ६ ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾਹਿ ॥
ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रह्मज्ञानी के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਸਗਲ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥
सब गुण ब्रह्मज्ञानी के हृदय में विद्यमान हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਕਉਨ ਜਾਨੈ ਭੇਦੁ ॥
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रह्मज्ञानी के भेद को कौन जान सकता है ?

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਸਦਾ ਅਦੇਸੁ ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥
ब्रह्मज्ञानी को सदैव प्रणाम करना चाहिए।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਕਥਿਆ ਨ ਜਾਇ ਅਧਾਖ੍ਯਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रह्मज्ञानी की महिमा का एक आधा अक्षर भी वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਰਬ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रह्मज्ञानी समस्त जीवों का पूज्य स्वामी है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਮਿਤਿ ਕਉਨੁ ਬਖਾਨੈ ॥
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रह्मज्ञानी का अनुमान कौन लगा सकता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਗਤਿ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਾਨੈ ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥
केवल ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्मज्ञानी की गति को जानता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
ब्रह्मज्ञानी के गुणों का कोई आर-पार नहीं।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੭॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी को हमेशा ही प्रणाम करते रहो ॥ ७ ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਕਰਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रह्मज्ञानी सारी दुनिया का निर्माता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦ ਜੀਵੈ ਨਹੀ ਮਰਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रह्मज्ञानी सदैव ही जीवित रहता है और मरता नहीं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रह्मज्ञानी जीवों को मुक्ति, युक्ति एवं जीवन देने वाले दाता हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥
ब्रह्मज्ञानी पूर्ण पुरुष विधाता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਅਨਾਥ ਕਾ ਨਾਥੁ ॥
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रह्मज्ञानी अनाथों का नाथ है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਸਭ ਊਪਰਿ ਹਾਥੁ ॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रह्मज्ञानी का रक्षक हाथ समस्त मानव जाति पर है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਸਗਲ ਅਕਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
यह सारा जगत्-प्रसार ब्रह्मज्ञानी का ही है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥
ब्रह्मज्ञानी स्वयं ही निरंकार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਸੋਭਾ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬਨੀ ॥
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥
ब्रह्मज्ञानी व्यक्ति की महिमा केवल भगवान् के प्रति जागरूकता के लिए जाती है

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਰਬ ਕਾ ਧਨੀ ॥੮॥੮॥
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी सबका स्वामी है॥ ८ ॥ ८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਉਰਿ ਧਾਰੈ ਜੋ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ॥
उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
जो व्यक्ति अपने हृदय में भगवान् के नाम को बसाता है,

ਸਰਬ ਮੈ ਪੇਖੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥
जो सब में भगवान् के दर्शन करता है और

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਠਾਕੁਰ ਨਮਸਕਾਰੈ ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
क्षण-क्षण प्रभु को प्रणाम करता है,

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਅਪਰਸੁ ਸਗਲ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੧॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥
हे नानक ! ऐसा सत्यवादी निर्लिप्त महापुरुष समस्त प्राणियों का भवसागर से उद्धार कर देता है। १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਮਿਥਿਆ ਨਾਹੀ ਰਸਨਾ ਪਰਸ ॥
मिथिआ नाही रसना परस ॥
जो व्यक्ति जिह्वा से झूठ नहीं बोलता,

ਮਨ ਮਹਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਿਰੰਜਨ ਦਰਸ ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
जिसके हृदय में पवित्र प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है,

ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਰੂਪੁ ਨ ਪੇਖੈ ਨੇਤ੍ਰ ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
जिसके नेत्र पराई नारी के सौन्दर्य को नहीं देखते,

ਸਾਧ ਕੀ ਟਹਲ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹੇਤ ॥
साध की टहल संतसंगि हेत ॥
जो साधुओं की श्रद्धापूर्वक सेवा करता है और संतों की संगति से प्रेम करता है,

ਕਰਨ ਨ ਸੁਨੈ ਕਾਹੂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
जो अपने कानों से किसी की निन्दा नहीं सुनता,

ਸਭ ਤੇ ਜਾਨੈ ਆਪਸ ਕਉ ਮੰਦਾ ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
जो अपने आपको बुरा (निम्न) समझता है,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਿਖਿਆ ਪਰਹਰੈ ॥
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
जो गुरु की कृपा से बुराई को त्याग देता है,

ਮਨ ਕੀ ਬਾਸਨਾ ਮਨ ਤੇ ਟਰੈ
मन की बासना मन ते टरै ॥
जो अपने मन की वासना अपने मन से दूर कर देता है

ਇੰਦ੍ਰੀ ਜਿਤ ਪੰਚ ਦੋਖ ਤੇ ਰਹਤ ॥
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
और जो अपनी ज्ञान-इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है और पाँचों ही विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से बचा रहता है,

ਨਾਨਕ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਐਸਾ ਅਪਰਸ ॥੧॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥
हे नानक ! करोड़ों में से कोई ऐसा विरला पुरुष 'अपरस' (पवित्र-पावन) होता है।॥ १॥

ਬੈਸਨੋ ਸੋ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
जिस व्यक्ति पर परमात्मा प्रसन्न है, वही वैष्णव है।

ਬਿਸਨ ਕੀ ਮਾਇਆ ਤੇ ਹੋਇ ਭਿੰਨ ॥
बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥
वह विष्णु की माया से अलग रहता है

ਕਰਮ ਕਰਤ ਹੋਵੈ ਨਿਹਕਰਮ ॥
करम करत होवै निहकरम ॥
और शुभकर्म करता हुआ निष्कर्मी ही रहता है।

ਤਿਸੁ ਬੈਸਨੋ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਧਰਮ ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
उस वैष्णव का धर्म भी पवित्र है।

ਕਾਹੂ ਫਲ ਕੀ ਇਛਾ ਨਹੀ ਬਾਛੈ ॥
काहू फल की इछा नही बाछै ॥
वह किसी फल की इच्छा नहीं करता।

ਕੇਵਲ ਭਗਤਿ ਕੀਰਤਨ ਸੰਗਿ ਰਾਚੈ ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
वह केवल प्रभु-भक्ति एवं उसके कीर्तन में ही समाया रहता है।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਸਿਮਰਨ ਗੋਪਾਲ ॥
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
उसकी आत्मा एवं शरीर में सृष्टि के पालनहार गोपाल का स्मरण ही होता है।

ਸਭ ਊਪਰਿ ਹੋਵਤ ਕਿਰਪਾਲ ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
वह समस्त जीवों पर कृपालु होता है।

ਆਪਿ ਦ੍ਰਿੜੈ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥
वह स्वयं ईश्वर का नाम अपने मन में बसाता है और दूसरों से नाम का जाप करवाता है।

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਬੈਸਨੋ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥੨॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥
हे नानक ! ऐसा वैष्णव परमगति प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਭਗਉਤੀ ਭਗਵੰਤ ਭਗਤਿ ਕਾ ਰੰਗੁ ॥
भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
जिसके चित्त में भगवान् की भक्ति का प्रेम होता है, वही भगवान् का वास्तविक भक्त है।

ਸਗਲ ਤਿਆਗੈ ਦੁਸਟ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥
वह समस्त दुष्टों की संगति त्याग देता है

ਮਨ ਤੇ ਬਿਨਸੈ ਸਗਲਾ ਭਰਮੁ ॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
और उसके मन से हर प्रकार की दुविधा मिट जाती है।

ਕਰਿ ਪੂਜੈ ਸਗਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
वह पारब्रह्म को हर जगह समाहित समझता है और केवल उसकी ही पूजा करता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਪਾ ਮਲੁ ਖੋਵੈ ॥
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥
जो साधु-संतों की संगति में रहकर पापों की मैल मन से निवृत कर देता है,

ਤਿਸੁ ਭਗਉਤੀ ਕੀ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਵੈ ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥
ऐसे भक्त की बुद्धि उत्तम हो जाती है।

ਭਗਵੰਤ ਕੀ ਟਹਲ ਕਰੈ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
वह अपने भगवान की नित्य सेवा करता रहता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੈ ਬਿਸਨ ਪਰੀਤਿ ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
वह अपना मन एवं तन अपने प्रभु के प्रेम में समर्पित कर देता है।

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵੈ ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥
वह भगवान् के चरण अपने हृदय में बसाता है।

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਭਗਉਤੀ ਭਗਵੰਤ ਕਉ ਪਾਵੈ ॥੩॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥
हे नानक ! ऐसा भक्त ही भगवान् को प्राप्त करता है॥ ३॥

ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਜੋ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧੈ ॥
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
पण्डित वही है, जो अपने मन को उपदेश प्रदान करता है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਤਮ ਮਹਿ ਸੋਧੈ ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
वह राम के नाम को अपने हृदय में खोजता है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਾਰੁ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
जो राम-नाम का मीठा रस सेवन करता है।

ਉਸੁ ਪੰਡਿਤ ਕੈ ਉਪਦੇਸਿ ਜਗੁ ਜੀਵੈ ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
उस पण्डित के उपदेश द्वारा सारा जगत् जीता है,

ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵੈ ॥
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
जो पण्डित हरि की कथा को अपने हृदय में बसाता है,

ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵੈ ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
ऐसा पण्डित पुनः योनियों में प्रवेश नहीं करता।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਬੂਝੈ ਮੂਲ ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
वह वेद, पुराणों एवं स्मृतियों के मूल तत्व का विचार करता है,

ਸੂਖਮ ਮਹਿ ਜਾਨੈ ਅਸਥੂਲੁ ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
वह दृष्टिगोचर संसार को अदृश्य प्रभु में अनुभव करता है

ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਕਉ ਦੇ ਉਪਦੇਸੁ ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
और चारों ही वर्णो (जातियों) को उपदेश देता है।

ਨਾਨਕ ਉਸੁ ਪੰਡਿਤ ਕਉ ਸਦਾ ਅਦੇਸੁ ॥੪॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥
हे नानक ! उस पण्डित को सदैव ही प्रणाम है॥ ४ ॥

ਬੀਜ ਮੰਤ੍ਰੁ ਸਰਬ ਕੋ ਗਿਆਨੁ ॥ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਮਹਿ ਜਪੈ ਕੋਊ ਨਾਮੁ ॥
बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
समस्त मंत्रों का बीज मंत्र ज्ञान है।चारों ही वर्णो में कोई भी पुरुष नाम का जाप करे।

ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਤਿਸ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
जो जो नाम जपता है, उसकी गति हो जाती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥
कोई भी पुरुष इसे सत्संगति में रहकर ही प्राप्त कर सकता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅੰਤਰਿ ਉਰ ਧਾਰੈ ॥
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥
यदि प्रभु अपनी कृपा से हृदय में नाम बसा दे

ਪਸੁ ਪ੍ਰੇਤ ਮੁਘਦ ਪਾਥਰ ਕਉ ਤਾਰੈ ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
तो पशु, प्रेत, मूर्ख, पत्थर दिल भी पार हो जाते हैं।

ਸਰਬ ਰੋਗ ਕਾ ਅਉਖਦੁ ਨਾਮੁ ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥
ईश्वर का नाम समस्त रोगों की औषधि है।

ਕਲਿਆਣ ਰੂਪ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥
भगवान् की गुणस्तुति करना कल्याण एवं मुक्ति का रूप है।

ਕਾਹੂ ਜੁਗਤਿ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਈਐ ਧਰਮਿ ॥
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
किसी युक्ति अथवा किसी धर्म-कर्म द्वारा ईश्वर का नाम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ॥੫॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥
हे नानक ! भगवान् का नाम उस मनुष्य को ही मिलता हैं, जिसके भाग्य में आदि से ही लिखा होता है॥ ५॥

ਜਿਸ ਕੈ ਮਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਨਿਵਾਸੁ ॥
जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥
जिसके मन में भगवान् का निवास है।

ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥
तिस का नामु सति रामदासु ॥
उसका नाम सत्य ही रामदास है।

ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਤਿਸੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥
आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥
उसे अपने अन्तर में ही राम दिखाई दे गया है।

ਦਾਸ ਦਸੰਤਣ ਭਾਇ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥
सेवकों का सेवक होने के स्वभाव से उसने ईश्वर को पाया है।

ਸਦਾ ਨਿਕਟਿ ਨਿਕਟਿ ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥
जो हमेशा ही भगवान् को अपने समीप समझता है,

ਸੋ ਦਾਸੁ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥
सो दासु दरगह परवानु ॥
वह सेवक प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਆਪਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
ईश्वर अपने सेवक पर स्वयं कृपा-दृष्टि करता है

ਤਿਸੁ ਦਾਸ ਕਉ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਰੈ ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥
और उस सेवक को समस्त ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

ਸਗਲ ਸੰਗਿ ਆਤਮ ਉਦਾਸੁ ॥
सगल संगि आतम उदासु ॥
समूचे परिवार में (रहता हुआ भी) वह मन से निर्लिप्त रहता है,

ਐਸੀ ਜੁਗਤਿ ਨਾਨਕ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥੬॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥
हे नानक ! ऐसी जीवन-युक्ति वाला रामदास होता है॥ ६॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਆਤਮ ਹਿਤਾਵੈ ॥
प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जो प्रभु की आज्ञा को सच्चे मन से मानता है,

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਸੋਊ ਕਹਾਵੈ ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
वही जीवन मुक्त कहलाता है।

ਤੈਸਾ ਹਰਖੁ ਤੈਸਾ ਉਸੁ ਸੋਗੁ ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
उसके लिए सुख एवं दुःख एक समान होते हैं।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਤਹ ਨਹੀ ਬਿਓਗੁ ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
उसे हमेशा ही आनंद मिलता है और कोई वियोग नहीं होता।

ਤੈਸਾ ਸੁਵਰਨੁ ਤੈਸੀ ਉਸੁ ਮਾਟੀ ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
सोना तथा मिट्टी भी उस पुरुष के लिए एक समान हैं,

ਤੈਸਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤੈਸੀ ਬਿਖੁ ਖਾਟੀ ॥
तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
उसके लिए अमृत एवं खट्टा विष भी एक समान है।

ਤੈਸਾ ਮਾਨੁ ਤੈਸਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
उसके लिए मान एवं अभिमान भी एक समान है।

ਤੈਸਾ ਰੰਕੁ ਤੈਸਾ ਰਾਜਾਨੁ ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
रंक तथा राजा भी उसकी दृष्टि में बराबर हैं।

ਜੋ ਵਰਤਾਏ ਸਾਈ ਜੁਗਤਿ ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
जो भगवान करता है, वही उसकी जीवन-युक्ति होती है।

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਪੁਰਖੁ ਕਹੀਐ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ॥੭॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥
हे नानक ! वह पुरुष ही जीवन मुक्त कहा जाता है॥ ७ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸਗਲੇ ਠਾਉ ॥
पारब्रहम के सगले ठाउ ॥
परमात्मा के ही समस्त स्थान हैं।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਰਾਖੈ ਤੈਸਾ ਤਿਨ ਨਾਉ ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥
जिस-जिस स्थान पर ईश्वर प्राणियों को रखता है, वैसा ही वह नाम धारण कर लेते हैं।

ਆਪੇ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਜੋਗੁ ॥
आपे करन करावन जोगु ॥
भगवान् स्वयं ही सब कुछ करने और (प्राणियों से) करवाने में समर्थ है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਹੋਗੁ ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥
जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है

ਪਸਰਿਓ ਆਪਿ ਹੋਇ ਅਨਤ ਤਰੰਗ ॥
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
परमात्मा ने अपने आपको अनन्त लहरों में समाहित होकर फैलाया हुआ है।

ਲਖੇ ਨ ਜਾਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਰੰਗ ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥
परमात्मा के चमत्कार जाने नहीं जा सकते।

ਜੈਸੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ਤੈਸਾ ਪਰਗਾਸ ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
परमात्मा जैसी बुद्धि प्रदान करता है, वैसा ही प्रकाश होता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਤਾ ਅਬਿਨਾਸ ॥
पारब्रहमु करता अबिनास ॥
सृष्टिकर्ता परमात्मा अनश्वर है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਇਆਲ ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥
ईश्वर हमेशा ही दयालु है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੮॥੯॥
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥
हे नानक ! उस परमात्मा का समरण करके कितने ही जीव कृतार्थ हो गए हैं। ८॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਉਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਅਨੇਕ ਜਨ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
बहुत सारे मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति करते रहते हैं, परन्तु परमात्मा के गुणों का कोई ओर-छोर नहीं मिलता।

ਨਾਨਕ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਭਿ ਰਚੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥੧॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा ने जो यह सृष्टि-रचना की है, वह अनेक प्रकार की होने के कारण बहुत सारी विधियों से रची है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਹੋਏ ਪੂਜਾਰੀ ॥
कई कोटि होए पूजारी ॥
कई करोड़ जीव उसकी पूजा करने वाले हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥
कई करोड़ धार्मिक एवं सांसारिक आचरण-व्यवहार करने वाले हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਤੀਰਥ ਵਾਸੀ ॥
कई कोटि भए तीरथ वासी ॥
कई करोड़ जीव तीर्थों के निवासी हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬਨ ਭ੍ਰਮਹਿ ਉਦਾਸੀ ॥
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
कई करोड़ जीव वैरागी बनकर जंगलों में भटकते रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੇਦ ਕੇ ਸ੍ਰੋਤੇ ॥
कई कोटि बेद के स्रोते ॥
कई करोड़ वेदों के श्रोता हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਤਪੀਸੁਰ ਹੋਤੇ ॥
कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई करोड़ तपस्वी बने हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਆਤਮ ਧਿਆਨੁ ਧਾਰਹਿ ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई करोड़ अपनी आत्मा में प्रभु-ध्यान को धारण करने वाले हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕਬਿ ਕਾਬਿ ਬੀਚਾਰਹਿ ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई करोड़ कवि काव्य-रचनाओं द्वारा विचार करते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਵਤਨ ਨਾਮ ਧਿਆਵਹਿ ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
कई करोड़ पुरुष नित्य नवीन नाम का ध्यान करते रहते हैं,

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥੧॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥
तो भी हे नानक ! उस परमात्मा का कोई भेद नहीं पा सकते॥ १॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥
कई कोटि भए अभिमानी ॥
इस दुनिया में कई करोड़ (पुरुष) अभिमानी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨੀ ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई करोड़ (पुरुष) अन्धे अज्ञानी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕਿਰਪਨ ਕਠੋਰ ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई करोड़ (पुरुष) पत्थर दिल व् कृपण हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਭਿਗ ਆਤਮ ਨਿਕੋਰ ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥
कई करोड़ (मनुष्य) शुष्क एवं संवेदनहीन हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰ ਦਰਬ ਕਉ ਹਿਰਹਿ ॥
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों का धन चुराते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰ ਦੂਖਨਾ ਕਰਹਿ ॥
कई कोटि पर दूखना करहि ॥
कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों की निन्दा करते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਇਆ ਸ੍ਰਮ ਮਾਹਿ ॥
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई करोड़ (पुरुष) धन संग्रह करने हेतु श्रम में लगे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰਦੇਸ ਭ੍ਰਮਾਹਿ ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
कई करोड़ दूसरे देशों में भटक रहे हैं।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਨਾ ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
हे प्रभु ! जहाँ कहीं आप जीवों को (काम में) लगाते हो, वहाँ-वहाँ वे लग जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀ ਜਾਨੈ ਕਰਤਾ ਰਚਨਾ ॥੨॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥
हे नानक ! कर्ता-प्रभु की सृष्टि रचना (का भेद) कर्ता-प्रभु ही जानता है॥ २ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਸਿਧ ਜਤੀ ਜੋਗੀ ॥
कई कोटि सिध जती जोगी ॥
दुनिया में कई करोड़ सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं योगी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਰਾਜੇ ਰਸ ਭੋਗੀ ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई करोड़ रस भोगने वाले राजा हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪੰਖੀ ਸਰਪ ਉਪਾਏ ॥
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई करोड़ पक्षी एवं साँप परमात्मा ने पैदा किए हैं,

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਥਰ ਬਿਰਖ ਨਿਪਜਾਏ ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥
कई करोड़ पत्थर एवं वृक्ष उगाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰ ॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई करोड़ हवाएँ, जल एवं अग्नियां हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦੇਸ ਭੂ ਮੰਡਲ ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥
कई करोड़ देश एवं भूमण्डल हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖ੍ਯ੍ਯਤ੍ਰ ॥
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥
कई करोड़ चन्द्रमा, सूर्य एवं तारे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਇੰਦ੍ਰ ਸਿਰਿ ਛਤ੍ਰ ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥
कई करोड़ देवता, राक्षस एवं इन्द्र हैं, जिनके सिर पर छत्र हैं।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਅਪਨੈ ਸੂਤਿ ਧਾਰੈ ॥
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
ईश्वर ने सारी सृष्टि को अपने (आदेश के) धागे में पिरोया हुआ है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੩॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥
हे नानक ! जो जो परमात्मा को भला लगता है, उसे ही वह भवसागर से पार कर देते हैं।॥ ३ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਰਾਜਸ ਤਾਮਸ ਸਾਤਕ ॥
कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई करोड़ रजोगुणी, तमोगुणी एवं सतोगुणी जीव हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਅਰੁ ਸਾਸਤ ॥
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥
कई करोड़ वेद, पुराण, स्मृतियां एवं शास्त्र हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਰਤਨ ਸਮੁਦ ॥
कई कोटि कीए रतन समुद ॥
कई करोड़ समुद्रो में रत्न पैदा कर दिए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਨਾ ਪ੍ਰਕਾਰ ਜੰਤ ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥
कई करोड़ विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਚਿਰ ਜੀਵੇ ॥
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥
करोड़ों प्राणी लम्बी आयु वाले बनाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਗਿਰੀ ਮੇਰ ਸੁਵਰਨ ਥੀਵੇ ॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥
(परमात्मा की आज्ञा द्वारा) कई करोड़ ही सोने के सुमेरु पर्वत बन गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਖ੍ਯ ਕਿੰਨਰ ਪਿਸਾਚ ॥
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥
कई करोड़ यक्ष, किन्नर एवं पिशाच हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭੂਤ ਪ੍ਰੇਤ ਸੂਕਰ ਮ੍ਰਿਗਾਚ ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥
कई करोड़ ही भूत-प्रेत, सूअर एवं शेर हैं।

ਸਭ ਤੇ ਨੇਰੈ ਸਭਹੂ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥
ईश्वर सबके समीप और सबके ही दूर है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੪॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥
हे नानक ! ईश्वर सभी में परिपूर्ण हो रहा है, जबकि वह स्वयं निर्लिप्त रहते हैं।॥ ४ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਤਾਲ ਕੇ ਵਾਸੀ ॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई करोड़ जीव पाताल के निवासी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਨਿਵਾਸੀ ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई करोड़ जीव नरकों तथा स्वर्गों में रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਨਮਹਿ ਜੀਵਹਿ ਮਰਹਿ ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
कई करोड़ जीव जन्म लेते, जीते और मरते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਫਿਰਹਿ ॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई करोड़ जीव अनेक योनियों में भटक रहे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੈਠਤ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई करोड़ (व्यर्थ) बैठकर खाते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਘਾਲਹਿ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
करोड़ों ही जीव परिश्रम से थककर टूट जाते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਧਨਵੰਤ ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई करोड़ जीव धनवान बनाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਚਿੰਤ ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
करोड़ों ही जीव धन-दौलत की चिन्ता में लीन हैं।

ਜਹ ਜਹ ਭਾਣਾ ਤਹ ਤਹ ਰਾਖੇ ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
ईश्वर जहाँ कहीं चाहते हैं, वहाँ ही वह जीवों को रखते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਹਾਥੇ ॥੫॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥
हे नानक ! सब कुछ ईश्वर के अपने हाथ में है॥ ५ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਬੈਰਾਗੀ ॥
कई कोटि भए बैरागी ॥
इस दुनिया में कई करोड़ जीव वैराग्यवान बने हुए हैं

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਤਿਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥
और राम के नाम से उनकी वृत्ति लगी हुई है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਖੋਜੰਤੇ ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
करोड़ों ही जीव परमात्मा को खोजते रहते हैं

ਆਤਮ ਮਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਲਹੰਤੇ ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
और अपनी आत्मा में ही भगवान् को पा लेते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਸ ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
करोड़ों ही प्राणियों को ईश्वर के दर्शनों की प्यास (अभिलाषा) लगी रहती है,

ਤਿਨ ਕਉ ਮਿਲਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸ ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
उन्हें अनश्वर प्रभु मिल जाता है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਗਹਿ ਸਤਸੰਗੁ ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
कई करोड़ प्राणी सत्संगति की माँग करते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਿਨ ਲਾਗਾ ਰੰਗੁ ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
वे भगवान् के प्रेम में ही मग्न रहते हैं।

ਜਿਨ ਕਉ ਹੋਏ ਆਪਿ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
हे नानक ! जिन पर ईश्वर स्वयं सुप्रसन्न होते हैं,

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਦਾ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ॥੬॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥
ऐसे व्यक्ति हमेशा ही भाग्यवान हैं।॥ ६॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਖਾਣੀ ਅਰੁ ਖੰਡ ॥
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
धरती के नौ खण्डों एवं (चार) दिशाओं में करोड़ों ही प्राणी पैदा हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਕਾਸ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥
कई करोड़ आकाश एवं ब्रह्माण्ड हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਹੋਏ ਅਵਤਾਰ ॥
कई कोटि होए अवतार ॥
करोड़ों ही अवतार हो चुके हैं।

ਕਈ ਜੁਗਤਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰ ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥
कई युक्तियों से ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है।

ਕਈ ਬਾਰ ਪਸਰਿਓ ਪਾਸਾਰ ॥
कई बार पसरिओ पासार ॥
इस सृष्टि का कई बार प्रसार हुआ है

ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਕੁ ਏਕੰਕਾਰ ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥
लेकिन परमात्मा हमेशा से एक ही है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਨੇ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
कई करोड़ जीव ईश्वर ने अनेक विधियों के बनाए हैं।

ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਤਿ ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
परमेश्वर से वे (जीव) उत्पन्न हुए हैं और परमेश्वर में ही समा गए हैं।

ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥
उसके अन्त को कोई नहीं जानता।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੭॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥
हे नानक ! वह परमेश्वर सब कुछ आप ही हैं। ॥ ७॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਦਾਸ ॥
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
इस दुनिया में कई करोड़ जीव परमात्मा के दास हैं

ਤਿਨ ਹੋਵਤ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸ ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
और उनकी आत्मा में प्रकाश हो जाता है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਤਤ ਕੇ ਬੇਤੇ ॥
कई कोटि तत के बेते ॥
कई करोड़ जीव तत्त्वज्ञाता हैं,

ਸਦਾ ਨਿਹਾਰਹਿ ਏਕੋ ਨੇਤ੍ਰੇ ॥
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥
और अपने नेत्रों से वे सदैव एक ईश्वर के दर्शन करते रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪੀਵਹਿ ॥
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥
कई करोड़ जीव नाम-रस पीते रहते हैं,

ਅਮਰ ਭਏ ਸਦ ਸਦ ਹੀ ਜੀਵਹਿ ॥
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥
जो अमर होकर हमेशा ही जीते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ॥
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥
करोड़ों ही जीव नाम का यशोगान करते रहते हैं।

ਆਤਮ ਰਸਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥
वे आत्म-रस के सुख में सहज ही समा जाते हैं।

ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੇ ॥
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥
अपने भक्तों की प्रभु श्वास-श्वास से देखभाल करते हैं।

ਨਾਨਕ ਓਇ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੇ ਪਿਆਰੇ ॥੮॥੧੦॥
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥
हे नानक ! ऐसे भक्त ही परमेश्वर के प्रिय होते हैं ॥८॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
एक ईश्वर ही सृष्टि का मूल कारण (सर्जक) है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥
हे नानक ! मैं उस ईश्वर पर न्योछावर जाता हूँ, जो जल, धरती, पाताल एवं आकाश में विद्यमान है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥
करन करावन करनै जोगु ॥
हर कार्य करने और जीवों से कराने वाला एक ईश्वर सब कुछ करने में समर्थ है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਹੋਗੁ ॥
जो तिसु भावै सोई होगु ॥
जो कुछ उसे भला लगता है, वही होता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ॥
खिन महि थापि उथापनहारा ॥
वह क्षण भर में इस सृष्टि को उत्पन्न करने एवं नाश भी करने वाले (प्रभु) हैं।

ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥
अंतु नही किछु पारावारा ॥
उसकी शक्ति का कोई ओर-छोर नहीं।

ਹੁਕਮੇ ਧਾਰਿ ਅਧਰ ਰਹਾਵੈ ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥
अपनी आज्ञा द्वारा उसने धरती की स्थापना की है और बिना किसी सहारे के प्रभु ने इसे स्थिर कर रखा हुआ है।

ਹੁਕਮੇ ਉਪਜੈ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥
जो कुछ उसकी आज्ञा द्वारा उत्पन्न हुआ है, अन्त में उनकी आज्ञा में लीन हो जाता है।

ਹੁਕਮੇ ਊਚ ਨੀਚ ਬਿਉਹਾਰ ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
भले तथा बुरे कर्म उनकी इच्छा अनुसार हैं।

ਹੁਕਮੇ ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਪਰਕਾਰ ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥
उनकी आज्ञा से ही अनेकों प्रकार के कौतुक एवं लीलाएं हो रही हैं।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਅਪਨੀ ਵਡਿਆਈ ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
सृष्टि-रचना करके वह अपनी महिमा को देखते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥
हे नानक ! ईश्वर समस्त जीवों में व्याप्त है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਮਾਨੁਖ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥
प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਾਥਰ ਤਰਾਵੈ ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो पत्थर को भी पार कर देते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਾਸ ਤੇ ਰਾਖੈ ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो श्वासों के बिना भी प्राणी को (मृत्यु से) बचाकर रखते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਭਾਖੈ ॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰੈ ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो वह पापियों का भी उद्धार कर देते हैं।

ਆਪਿ ਕਰੈ ਆਪਨ ਬੀਚਾਰੈ ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥
ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करते हैं और स्वयं ही विचार करते हैं।

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਕਾ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ॥
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥
ईश्वर स्वयं ही लोक-परलोक के स्वामी है।

ਖੇਲੈ ਬਿਗਸੈ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥
सभी हृदयों के ज्ञाता प्रभु संसार रूपी नाटक रचते हैं और उसे देखकर आनन्दित होते हैं ।

ਜੋ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਾਰ ਕਰਾਵੈ ॥
जो भावै सो कार करावै ॥
जो कुछ प्रभु को लुभाता है, वो वही काम मनुष्य से करवाते हैं ।

ਨਾਨਕ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਅਵਰੁ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥
नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥
हे नानक ! उस जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता ॥ २ ॥

ਕਹੁ ਮਾਨੁਖ ਤੇ ਕਿਆ ਹੋਇ ਆਵੈ ॥
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
बताओ, मनुष्य से कौन-सा काम हो सकता है?

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਾਵੈ ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥
जो ईश्वर को भला लगता है, वही (काम) प्राणी से करवाते हैं ।

ਇਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ਹੋਇ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਲੇਇ ॥
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
यदि मनुष्य के वश में हो तो वह सब पदार्थ सँभाल ले।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰੇਇ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
जो कुछ परमात्मा को उपयुक्त लगता है, वह वही कुछ करते हैं।

ਅਨਜਾਨਤ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਰਚੈ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
ज्ञान न होने के कारण मनुष्य विषय-विकारों में मग्न रहता है।

ਜੇ ਜਾਨਤ ਆਪਨ ਆਪ ਬਚੈ ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥
यदि वह जानता हो तो वह अपने आपको (विकारों से) बचा ले।

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵੈ ॥
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥
भ्रम में भूला हुआ उसका मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है।

ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ॥
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
चारों कोनों में चक्कर काट कर वह एक क्षण में वापिस लौट आता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਅਪਨੀ ਭਗਤਿ ਦੇਇ ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥
जिसे कृपा करके प्रभु अपनी भक्ति प्रदान करते हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਨਾਮਿ ਮਿਲੇਇ ॥੩॥
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥
हे नानक ! वह पुरुष नाम में लीन हो जाता है॥ ३॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਨੀਚ ਕੀਟ ਕਉ ਰਾਜ ॥
खिन महि नीच कीट कउ राज ॥
क्षण में ही ईश्वर कीड़े समान निम्न (पुरुष) को (राज्य प्रदान करके) राजा बना देते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ॥
पारब्रहम गरीब निवाज ॥
भगवान् गरीबों पर दया करने वाले हैं।

ਜਾ ਕਾ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਛੂ ਨ ਆਵੈ ॥
जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥
जिस प्राणी का कोई गुण दिखाई नहीं देता,

ਤਿਸੁ ਤਤਕਾਲ ਦਹ ਦਿਸ ਪ੍ਰਗਟਾਵੈ ॥
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥
उसे क्षण भर में तुरन्त ही दसों दिशाओं में लोकप्रिय कर देते हैं।

ਜਾ ਕਉ ਅਪੁਨੀ ਕਰੈ ਬਖਸੀਸ ॥
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥
विश्व के स्वामी जगदीश जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि कर देते हैं,

ਤਾ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨ ਗਨੈ ਜਗਦੀਸ ॥
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥
वह प्रभु उस जीव के कर्मों का लेखा-जोखा नहीं गिनते ।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਤਿਸ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥
यह आत्मा एवं शरीर सब उनकी दी हुई पूंजी है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥
पूर्ण ब्रह्म का प्रत्येक हृदय में प्रकाश है।

ਅਪਨੀ ਬਣਤ ਆਪਿ ਬਨਾਈ ॥
अपनी बणत आपि बनाई ॥
यह सृष्टि-रचना उसने स्वयं ही रची है।

ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਦੇਖਿ ਬਡਾਈ ॥੪॥
नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥
हे नानक ! मैं उनकी महिमा को देखकर जी रहा हूँ ॥४॥

ਇਸ ਕਾ ਬਲੁ ਨਾਹੀ ਇਸੁ ਹਾਥ ॥
इस का बलु नाही इसु हाथ ॥
इस जीव का बल इसके अपने हाथ में नहीं है क्योंकि

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਰਬ ਕੋ ਨਾਥ ॥
करन करावन सरब को नाथ ॥
सबका मालिक एक परमात्मा ही सब कुछ करने एवं जीव से कराने वाला है,

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਬਪੁਰਾ ਜੀਉ ॥
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
असहाय जीव तो परमात्मा का आज्ञाकारी है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਥੀਉ ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
जो कुछ ईश्वर को भला लगता है, अंतः वही होता है।

ਕਬਹੂ ਊਚ ਨੀਚ ਮਹਿ ਬਸੈ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
मनुष्य कभी उच्च जातियों एवं कभी निम्न जातियों में बसता है।

ਕਬਹੂ ਸੋਗ ਹਰਖ ਰੰਗਿ ਹਸੈ ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥
कभी वह दुःख में दुःखी होता है और कभी ख़ुशी में प्रसन्नता से हंसता है।

ਕਬਹੂ ਨਿੰਦ ਚਿੰਦ ਬਿਉਹਾਰ ॥
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कभी निन्दा करना ही उसका व्यवसाय होता है।

ਕਬਹੂ ਊਭ ਅਕਾਸ ਪਇਆਲ ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कभी वह आकाश में होता है और कभी पाताल में।

ਕਬਹੂ ਬੇਤਾ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰ ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
कभी वह ब्रह्म विचार का ज्ञाता होता है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰ ॥੫॥
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥
हे नानक ! ईश्वर मनुष्य को अपने साथ मिलाने वाला स्वयं ही है॥ ५॥

ਕਬਹੂ ਨਿਰਤਿ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
कबहू निरति करै बहु भाति ॥
यह जीव कभी अनेक प्रकार के नृत्य कर रहा है।

ਕਬਹੂ ਸੋਇ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कभी वह दिन-रात सोया रहता है।

ਕਬਹੂ ਮਹਾ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਕਰਾਲ ॥
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥
कभी वह अपने महाक्रोध में भयानक हो जाता है।

ਕਬਹੂੰ ਸਰਬ ਕੀ ਹੋਤ ਰਵਾਲ ॥
कबहूं सरब की होत रवाल ॥
कभी वह सब की चरण-धूलि बना रहता है।

ਕਬਹੂ ਹੋਇ ਬਹੈ ਬਡ ਰਾਜਾ ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥
कभी वह महान राजा बन बैठता है।

ਕਬਹੁ ਭੇਖਾਰੀ ਨੀਚ ਕਾ ਸਾਜਾ ॥
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥
कभी वह नीच भिखारी का वेष धारण कर लेता है।

ਕਬਹੂ ਅਪਕੀਰਤਿ ਮਹਿ ਆਵੈ ॥
कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कभी वह अपकीर्ति (बदनामी) प्राप्त करता है।

ਕਬਹੂ ਭਲਾ ਭਲਾ ਕਹਾਵੈ ॥
कबहू भला भला कहावै ॥
कभी वह बहुत भला कहलवाता है।

ਜਿਉ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖੈ ਤਿਵ ਹੀ ਰਹੈ ॥
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥
जिस तरह प्रभु उसको रखते हैं, वैसे ही जीव रहता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕਹੈ ॥੬॥
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥
गुरु की कृपा से भक्त नानक सत्य ही कहते हैं॥ ६॥

ਕਬਹੂ ਹੋਇ ਪੰਡਿਤੁ ਕਰੇ ਬਖ੍ਹਾਨੁ ॥
कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥
कभी मनुष्य पण्डित बनकर उपदेश देता है।

ਕਬਹੂ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ਲਾਵੈ ਧਿਆਨੁ ॥
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥
कभी वह मौनधारी साधु बनकर ध्यान लगाए बैठा है।

ਕਬਹੂ ਤਟ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨ ॥
कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कभी वह तीर्थों के किनारे जाकर स्नान करता है।

ਕਬਹੂ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਮੁਖਿ ਗਿਆਨ ॥
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥
कभी वह सिद्ध, साधक बनकर मुख से ज्ञान उच्चारित करता है।

ਕਬਹੂ ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਪਤੰਗ ਹੋਇ ਜੀਆ ॥
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
कभी मनुष्य कीड़ा, हाथी अथवा पतंगा बना रहता है

ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭਰਮੈ ਭਰਮੀਆ ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
और अनेक योनियों में लगातार भटकता रहता है।

ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਜਿਉ ਸ੍ਵਾਗੀ ਦਿਖਾਵੈ ॥
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
बहुरूपिए की भाँति वह अत्याधिक रूप धारण करता हुआ भी दिखाई देता है।

ਜਿਉ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਨਚਾਵੈ ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥
जिस तरह प्रभु को उपयुक्त लगता है, वैसे ही नचाता है

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਹੋਇ ॥
जो तिसु भावै सोई होइ ॥
जैसे उसको अच्छा लगता है, वही होता है।

ਨਾਨਕ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੭॥
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥
हे नानक ! उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं ॥ ७॥

ਕਬਹੂ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਇਹੁ ਪਾਵੈ ॥
कबहू साधसंगति इहु पावै ॥
यह जीव कभी सत्संगति को पाता है तो

ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵੈ ॥
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥
उस (पवित्र) स्थान से दोबारा वह लौटकर नहीं आता।

ਅੰਤਰਿ ਹੋਇ ਗਿਆਨ ਪਰਗਾਸੁ ॥
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है।

ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ ॥
उसु असथान का नही बिनासु ॥
उस निवास का कभी विनाश नहीं होता।

ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਇਕ ਰੰਗਿ ॥
मन तन नामि रते इक रंगि ॥
जिसका मन एवं तन ईश्वर के नाम एवं प्रेम में मग्न रहता हैं।

ਸਦਾ ਬਸਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥
यह हमेशा ही परमात्मा के संग बसता है।

ਜਿਉ ਜਲ ਮਹਿ ਜਲੁ ਆਇ ਖਟਾਨਾ ॥
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
जैसे जल आकर जल में ही मिल जाता है,

ਤਿਉ ਜੋਤੀ ਸੰਗਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨਾ ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥
वैसे ही उसकी ज्योति परम ज्योति में लीन हो जाती है।

ਮਿਟਿ ਗਏ ਗਵਨ ਪਾਏ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥
उसका आवागमन (जन्म-मरण) मिट जाता है और वह सुख पा लेता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨ ॥੮॥੧੧॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥
हे नानक ! ऐसे प्रभु पर मैं सदैव बलिहार जाता हूँ ॥८॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸੁਖੀ ਬਸੈ ਮਸਕੀਨੀਆ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਤਲੇ ॥
सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
विनम्र स्वभाव वाला पुरुष सुख में रहता है। वह अपने अहंकार को त्याग कर विनीत हो जाता है।

ਬਡੇ ਬਡੇ ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਨਾਨਕ ਗਰਬਿ ਗਲੇ ॥੧॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥
(परन्तु) हे नानक ! बड़े-बड़े अहंकारी पुरुष अपने अहंकार में ही नाश हो जाते हैं।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਰਾਜ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में शासन का अभिमान होता है,

ਸੋ ਨਰਕਪਾਤੀ ਹੋਵਤ ਸੁਆਨੁ ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥
ऐसा व्यक्ति नरक में पड़ने वाला कुत्ता होता है।

ਜੋ ਜਾਨੈ ਮੈ ਜੋਬਨਵੰਤੁ ॥
जो जानै मै जोबनवंतु ॥
जो पुरुष अहंकार में अपने आपको अति सुन्दर (यौवन सम्पन्न) समझता है,

ਸੋ ਹੋਵਤ ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਜੰਤੁ ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥
वह विष्टा का कीड़ा होता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਕਰਮਵੰਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जो व्यक्ति स्वयं को शुभकर्मों वाला कहलाता है,

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਵੈ ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
वह जन्म-मरण के चक्र में फंसकर अधिकतर योनियों में भटकता रहता है।

ਧਨ ਭੂਮਿ ਕਾ ਜੋ ਕਰੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
जो प्राणी अपने धन एवं भूमि का घमण्ड करता है,

ਸੋ ਮੂਰਖੁ ਅੰਧਾ ਅਗਿਆਨੁ ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
वह मूर्ख, अन्धा एवं अज्ञानी है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਗਰੀਬੀ ਬਸਾਵੈ ॥
करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु कृपा करके विनम्रता बसा देता है,

ਨਾਨਕ ਈਹਾ ਮੁਕਤੁ ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥
हे नानक ! ऐसा मनुष्य इहलोक में मोक्ष तथा परलोक में सुख प्राप्त करता है॥ १॥

ਧਨਵੰਤਾ ਹੋਇ ਕਰਿ ਗਰਬਾਵੈ ॥
धनवंता होइ करि गरबावै ॥
जो आदमी धनवान होकर अपने धन का अभिमान करता है,

ਤ੍ਰਿਣ ਸਮਾਨਿ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਵੈ ॥
त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥
एक तिनके के बराबर भी कुछ भी उसके साथ नहीं जाता।

ਬਹੁ ਲਸਕਰ ਮਾਨੁਖ ਊਪਰਿ ਕਰੇ ਆਸ ॥
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
जो आदमी बहुत बड़ी सेना एवं लोगों पर आशा लगाए रखता है,

ਪਲ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਕਾ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸ ॥
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥
उसका एक क्षण में ही नाश हो जाता है।

ਸਭ ਤੇ ਆਪ ਜਾਨੈ ਬਲਵੰਤੁ ॥
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
जो आदमी अपने आपको सबसे शक्तिशाली समझता है,

ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਜਾਇ ਭਸਮੰਤੁ ॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥
वह एक क्षण में भस्म हो जाता है।

ਕਿਸੈ ਨ ਬਦੈ ਆਪਿ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
जो आदमी अपने अहंकार में किसी की भी परवाह नहीं करता,

ਧਰਮ ਰਾਇ ਤਿਸੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥
यमराज अन्त में उसे बड़ा दुःख देता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से जिस मनुष्य का अभिमान मिट जाता है,

ਸੋ ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥
ऐसा मनुष्य ही प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है॥ २॥

ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਹਉ ਧਾਰੇ ॥
कोटि करम करै हउ धारे ॥
यदि व्यक्ति करोड़ों शुभ कर्म करता हुआ अभिमान करे,

ਸ੍ਰਮੁ ਪਾਵੈ ਸਗਲੇ ਬਿਰਥਾਰੇ ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
तो वह दुःख ही उठाता है, उसके सभी कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

ਅਨਿਕ ਤਪਸਿਆ ਕਰੇ ਅਹੰਕਾਰ ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
जो व्यक्ति अनेक तपस्या करके अहंकार करता है,

ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
वह पुनः पुनः नरक-स्वर्ग में जन्म लेता रहता है।

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਆਤਮ ਨਹੀ ਦ੍ਰਵੈ ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
जिसका हृदय अधिकतर यत्न करने के बाद भी विनम्र नहीं होता,

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਗਵੈ ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
तो बताओ, वह पुरुष भगवान् के दरबार में कैसे जा सकता है?

ਆਪਸ ਕਉ ਜੋ ਭਲਾ ਕਹਾਵੈ ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
जो पुरुष अपने आपको भला कहलाता है,

ਤਿਸਹਿ ਭਲਾਈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
भलाई उसके निकट नहीं आती।

ਸਰਬ ਕੀ ਰੇਨ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
हे नानक ! जिसका मन सबकी चरण-धूलि बन जाता है,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥੩॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥
उसकी निर्मल शोभा होती है॥ ३॥

ਜਬ ਲਗੁ ਜਾਨੈ ਮੁਝ ਤੇ ਕਛੁ ਹੋਇ ॥
जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
जब तक पुरुष यह समझने लगता है कि मुझ से कुछ हो सकता है,

ਤਬ ਇਸ ਕਉ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥
तब तक उसको कोई सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਜਬ ਇਹ ਜਾਨੈ ਮੈ ਕਿਛੁ ਕਰਤਾ ॥
जब इह जानै मै किछु करता ॥
जब तक मनुष्य यह समझने लगता है कि मैं कुछ करता हूँ,

ਤਬ ਲਗੁ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਫਿਰਤਾ ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥
तब तक वह गर्भ की योनियों में भटकता रहता है।

ਜਬ ਧਾਰੈ ਕੋਊ ਬੈਰੀ ਮੀਤੁ ॥
जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥
जब तक मनुष्य किसी को शत्रु एवं किसी को मित्र समझता है,

ਤਬ ਲਗੁ ਨਿਹਚਲੁ ਨਾਹੀ ਚੀਤੁ ॥
तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥
तब तक उसका मन स्थिर नहीं होता।

ਜਬ ਲਗੁ ਮੋਹ ਮਗਨ ਸੰਗਿ ਮਾਇ ॥
जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥
जब तक मनुष्य माया के मोह में मग्न रहता है,

ਤਬ ਲਗੁ ਧਰਮ ਰਾਇ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥
तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥
तब तक यमराज उसको दण्डित करता रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬੰਧਨ ਤੂਟੈ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥
प्रभु की कृपा से मनुष्य के बन्धन टूट जाते हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਹਉ ਛੂਟੈ ॥੪॥
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से अहंकार मिट जाता है॥ ४॥

ਸਹਸ ਖਟੇ ਲਖ ਕਉ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
मनुष्य हजारों कमा कर भी लाखों के लिए भाग-दौड़ करता है।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਆਵੈ ਮਾਇਆ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
धन-दौलत की खोज में उसकी तृप्ति नहीं होती।

ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਕਰੈ ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
मनुष्य अधिकतर विषय-विकारों के भोग में लगा रहता है,

ਨਹ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮਰੈ ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
परन्तु वह तृप्त नहीं होता और उसकी अभिलाषा करता हुआ मर मिटता है।

ਬਿਨਾ ਸੰਤੋਖ ਨਹੀ ਕੋਊ ਰਾਜੈ ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
संतोष के बिना किसी को तृप्ति नहीं होती।

ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਬ੍ਰਿਥੇ ਸਭ ਕਾਜੈ ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
उसके सब कार्य स्वप्न के मनोरथ की भाँति व्यर्थ हैं।

ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
भगवान् के नाम रंग द्वारा सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਬਡਭਾਗੀ ਕਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥
किसी भाग्यशाली पुरुष को ही नाम की प्राप्ति होती है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
करन करावन आपे आपि ॥
प्रभु स्वयं सब कुछ करने तथा जीवों से कराने में समर्थ है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੫॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥
हे नानक ! हरि के नाम का जाप सदैव करो ॥५॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
करन करावन करनैहारु ॥
केवल परमात्मा ही करने एवं कराने वाले हैं।

ਇਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
विचार कर देख लो, प्राणी के वश में कुछ नहीं।

ਜੈਸੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ॥
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥
जैसी दृष्टि परमात्मा धारण करते हैं, मनुष्य वैसा ही हो जाता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥
वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਨੋ ਸੁ ਅਪਨੈ ਰੰਗਿ ॥
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥
जो कुछ उसने किया है, वह उसकी इच्छा के अनुकूल है।

ਸਭ ਤੇ ਦੂਰਿ ਸਭਹੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥
वह सबसे दूर है, फिर भी सबके साथ है।

ਬੂਝੈ ਦੇਖੈ ਕਰੈ ਬਿਬੇਕ ॥
बूझै देखै करै बिबेक ॥
वह समझता, देखता और निर्णय करता है।

ਆਪਹਿ ਏਕ ਆਪਹਿ ਅਨੇਕ ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
परमात्मा स्वयं ही एक है और स्वयं ही अनेक रूप है।

ਮਰੈ ਨ ਬਿਨਸੈ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
परमात्मा न ही मरता है और न ही नाश होता है, वह न ही आता है और न ही जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਦ ਹੀ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥
हे नानक ! परमात्मा सदा सब में समाया हुआ है ॥६॥

ਆਪਿ ਉਪਦੇਸੈ ਸਮਝੈ ਆਪਿ ॥
आपि उपदेसै समझै आपि ॥
वह स्वयं ही उपदेश देते हैं और स्वयं ही समझते हैं।

ਆਪੇ ਰਚਿਆ ਸਭ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
परमात्मा स्वयं ही सबके साथ मिले हुए हैं।

ਆਪਿ ਕੀਨੋ ਆਪਨ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
अपना विस्तार उसने स्वयं ही किया है।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਉਸ ਕਾ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥
प्रत्येक वस्तु उनकी है, वह सृजनहार है।

ਉਸ ਤੇ ਭਿੰਨ ਕਹਹੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥
बताओ, उससे अलग कुछ हो सकता है?

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਏਕੈ ਸੋਇ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
एक ईश्वर स्थानों एवं उनकी सीमाओं पर सर्वत्र उपस्थित है।

ਅਪੁਨੇ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਣੈਹਾਰ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
अपनी लीलाओं को वह स्वयं ही करने वाले हैं।

ਕਉਤਕ ਕਰੈ ਰੰਗ ਆਪਾਰ
कउतक करै रंग आपार ॥
वह कौतुक रचते हैं और उनके रंग अनन्त हैं।

ਮਨ ਮਹਿ ਆਪਿ ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਮਾਹਿ ॥
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
"(जीवों के) मन में स्वयं वास करते हैं, (जीवों को) अपने मन में स्थिर किए बैठे हैं।

ਨਾਨਕ ਕੀਮਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥੭॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥
हे नानक ! उस (परमात्मा) का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ ७॥

ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਆਮੀ ॥
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
जगत् के स्वामी परमात्मा सदैव सत्य है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਖਿਆਨੀ ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥
यह बात गुरु की कृपा से किसी दुर्लभ व्यक्ति ने ही वर्णित की है।

ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਭੁ ਕੀਨਾ ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
परमात्मा जिसने सबकी रचना की है, वह भी सत्य है।

ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਬਿਰਲੈ ਚੀਨਾ ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
करोड़ों में कोई दुर्लभ व्यक्ति ही उनको जानता है।

ਭਲਾ ਭਲਾ ਭਲਾ ਤੇਰਾ ਰੂਪ ॥
भला भला भला तेरा रूप ॥
हे प्रभु ! आपका रूप कितना भला-सुन्दर है।

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਅਪਾਰ ਅਨੂਪ ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥
हे ईश्वर ! आप अत्यंत सुन्दर, अपार एवं अनूप हो।

ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥
निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥
हे परमात्मा ! आपकी वाणी अति पवित्र, निर्मल एवं मधुर है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੁਨੀ ਸ੍ਰਵਨ ਬਖ੍ਯ੍ਯਾਣੀ ॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
प्रत्येक व्यक्ति इसको कानों से सुनता एवं व्याख्या करता है।

ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਪੁਨੀਤ ॥
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
वह पवित्र पावन हो जाता है

ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੮॥੧੨॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति अपने मन में प्रेम से भगवान् के नाम का जाप करता है। ॥ ८ ॥ १२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
शलोक॥

ਸੰਤ ਸਰਨਿ ਜੋ ਜਨੁ ਪਰੈ ਸੋ ਜਨੁ ਉਧਰਨਹਾਰ ॥
संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥
जो व्यक्ति संतों की शरण में आता है, उस व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥੧॥
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥
हे नानक ! संतों की निन्दा करने से प्राणी पुनः पुनः जन्म लेता रहता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਆਰਜਾ ਘਟੈ ॥
संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत को दुःखी करने से मनुष्य की आयु कम हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਛੁਟੈ ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत को दुःखी करने से मनुष्य यमदूतों से नहीं बच सकता।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸੁਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य के समस्त सुख नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਨਰਕ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य नरक में जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਮਤਿ ਹੋਇ ਮਲੀਨ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥
संत को दु:खी करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸੋਭਾ ਤੇ ਹੀਨ ॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य की शोभा समाप्त हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੇ ਹਤੇ ਕਉ ਰਖੈ ਨ ਕੋਇ ॥
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥
संत से तिरस्कृत पुरुष की कोई भी रक्षा नहीं कर सकता।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਥਾਨ ਭ੍ਰਸਟੁ ਹੋਇ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत को दु:खी करने से स्थान भ्रष्ट हो जाता है।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜੇ ਕਰੈ ॥
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥
यदि कृपा के घर संत स्वयं कृपा करे तो

ਨਾਨਕ ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਿੰਦਕੁ ਭੀ ਤਰੈ ॥੧॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥
हे नानक ! सत्संगति में निंदक भी (भवसागर से) पार हो जाता है॥ १॥

ਸੰਤ ਕੇ ਦੂਖਨ ਤੇ ਮੁਖੁ ਭਵੈ ॥
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संत को दु:खी करने से मुख भ्रष्ट हो जाता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਕਾਗ ਜਿਉ ਲਵੈ ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥
संत को दु:खी करने वाला पुरुष कौए के समान निन्दा करता रहता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸਰਪ ਜੋਨਿ ਪਾਇ ॥
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य सर्पयोनि में पड़ता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤ੍ਰਿਗਦ ਜੋਨਿ ਕਿਰਮਾਇ ॥
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥
संत को दु:खी करने वाला मनुष्य कीड़े इत्यादि की त्रिगद योनि में भटकता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਹਿ ਜਲੈ ॥
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥
संत को दु:खी करने वाला मनुष्य तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸਭੁ ਕੋ ਛਲੈ ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत को दु:खी करने वाला सबके साथ छल-कपट करता रहता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤੇਜੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य का सारा तेज-प्रताप नाश हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਨੀਚੁ ਨੀਚਾਇ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत को दु:खी करने से मनुष्य नीचों से भी नीच महानीच हो जाता है।

ਸੰਤ ਦੋਖੀ ਕਾ ਥਾਉ ਕੋ ਨਾਹਿ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
संत के दोषी का कोई सुख का सहारा नहीं रहता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਓਇ ਭੀ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो निंदक भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ २ ॥

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਅਤਤਾਈ ॥
संत का निंदकु महा अतताई ॥
संत की निन्दा करने वाला सबसे बुरे कर्म करने वाला महानीच है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਖਿਨੁ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਈ ॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥
संत की निन्दा करने वाले को क्षण भर भी सुख नहीं मिलता।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਹਤਿਆਰਾ ॥
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥
संत की निन्दा करने वाला महा हत्यारा है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਮਾਰਾ ॥
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥
संत की निन्दा करने वाला परमेश्वर की ओर से तिरस्कृत होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਰਾਜ ਤੇ ਹੀਨੁ ॥
संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत की निन्दा करने वाला शासन से रिक्त रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਦੁਖੀਆ ਅਰੁ ਦੀਨੁ ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
संत की निन्दा करने वाला दु:खी तथा निर्धन हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਉ ਸਰਬ ਰੋਗ ॥
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥
संत की निन्दा करने वाले को सर्व रोग लग जाते हैं।

ਸੰਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਉ ਸਦਾ ਬਿਜੋਗ ॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥
संत की निन्दा करने वाला सदा वियोग में रहता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਦੋਖ ਮਹਿ ਦੋਖੁ ॥
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥
संत की निंदा दोषों का भी दोष महापाप है।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਉਸ ਕਾ ਭੀ ਹੋਇ ਮੋਖੁ ॥੩॥
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो उसकी भी मुक्ति हो जाती है।॥ ३॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਅਪਵਿਤੁ ॥
संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोषी सदैव अपवित्र है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਸੈ ਕਾ ਨਹੀ ਮਿਤੁ ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥
संत का दोषी किसी भी मनुष्य का मित्र नहीं होता।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਡਾਨੁ ਲਾਗੈ ॥
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोषी को (धर्मराज से) दण्ड मिलता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਸਭ ਤਿਆਗੈ ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥
संत के दोषी को सभी त्याग देते हैं।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਮਹਾ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोषी महा अहंकारी होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਬਿਕਾਰੀ ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥
संत का दोषी सदैव पापी होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਜਨਮੈ ਮਰੈ ॥
संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत का दोषी जन्मता-मरता रहता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਦੂਖਨਾ ਸੁਖ ਤੇ ਟਰੈ ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥
संत का निन्दक सुख से खाली हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ॥
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥
संत के दोषी को कोई रहने का स्थान नहीं मिलता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो ऐसा निंदक भी मुक्त हो जाएगा। ॥४॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅਧ ਬੀਚ ਤੇ ਟੂਟੈ ॥
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत की निंदा करने वाले के मन में विचार हमेशा दूषित रहते हैं।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਤੈ ਕਾਜਿ ਨ ਪਹੂਚੈ ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥
संत का दोषी किसी काम में सफल नहीं होता।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਉਦਿਆਨ ਭ੍ਰਮਾਈਐ ॥
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥
संत का दोषी भयानक जंगलों में भटकता रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਉਝੜਿ ਪਾਈਐ ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥
संत का दोषी कुमार्ग में डाल दिया जाता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅੰਤਰ ਤੇ ਥੋਥਾ ॥
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
संत का दोषी वैसे ही भीतर से खाली होता है,

ਜਿਉ ਸਾਸ ਬਿਨਾ ਮਿਰਤਕ ਕੀ ਲੋਥਾ ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥
जैसे मृतक व्यक्ति का शव श्वास के बिना होता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਜੜ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
संत के दोषी की जड़ बिल्कुल ही नहीं होती।

ਆਪਨ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥
जो कुछ उसने बोया है, वह स्वयं ही खाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਅਵਰੁ ਨ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥
संत के दोषी का कोई भी रक्षक नहीं हो सकता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਉਬਾਰਿ ॥੫॥
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो वह उसको बचा लेता है ॥५॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਇਉ ਬਿਲਲਾਇ ॥
संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
संत का दोषी ऐसे विलाप करता है,

ਜਿਉ ਜਲ ਬਿਹੂਨ ਮਛੁਲੀ ਤੜਫੜਾਇ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥
जैसे जल के बिना मछली दुःख में तड़पती है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਭੂਖਾ ਨਹੀ ਰਾਜੈ ॥
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
संत का दोषी हमेशा भूखा ही रहता है और तृप्त नहीं होता,

ਜਿਉ ਪਾਵਕੁ ਈਧਨਿ ਨਹੀ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥
जैसे अग्नि ईंधन से तृप्त नहीं होती।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਛੁਟੈ ਇਕੇਲਾ ॥
संत का दोखी छुटै इकेला ॥
संत का दोषी वैसे ही अकेला रह जाता है,

ਜਿਉ ਬੂਆੜੁ ਤਿਲੁ ਖੇਤ ਮਾਹਿ ਦੁਹੇਲਾ ॥
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥
जैसे भीतर से जला हुआ तिल का पौधा खेत में व्यर्थ पड़ा रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਧਰਮ ਤੇ ਰਹਤ ॥
संत का दोखी धरम ते रहत ॥
संत का दोषी धर्म से भ्रष्ट होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦ ਮਿਥਿਆ ਕਹਤ ॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥
संत का दोषी सदा झूठ बोलता रहता है।

ਕਿਰਤੁ ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਧੁਰਿ ਹੀ ਪਇਆ ॥
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥
निन्दक का भाग्य आदि से ही ऐसा लिखा हुआ है।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥਿਆ ॥੬॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥
हे नानक ! जो कुछ प्रभु को भला लगता है, वही होता है॥ ६॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਬਿਗੜ ਰੂਪੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥
संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
संत का दोषी कुरूप रूप वाला हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥
संत पर दोष लगाने वाला ईश्वर के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਸਹਕਾਈਐ ॥
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
संत का दोषी सदा मृत्यु-निकट होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਨ ਮਰੈ ਨ ਜੀਵਾਈਐ ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥
संत का दोषी जीवन एवं मृत्यु के बीच लटकता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਪੁਜੈ ਨ ਆਸਾ ॥
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥
संत के दोषी की आशा पूर्ण नहीं होती।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਉਠਿ ਚਲੈ ਨਿਰਾਸਾ ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥
संत का दोषी निराश चला जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੋਖਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਟੈ ਕੋਇ ॥
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥
संत को दोषी को स्थिरता प्राप्त नहीं होती।

ਜੈਸਾ ਭਾਵੈ ਤੈਸਾ ਕੋਈ ਹੋਇ ॥
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥
जैसे ईश्वर की इच्छा होती है, वैसा ही मनुष्य हो जाता है।

ਪਇਆ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥
कोई भी व्यक्ति पूर्व जन्म के कर्मों को मिटा नहीं सकता।

ਨਾਨਕ ਜਾਨੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੭॥
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥
हे नानक ! वह सच्चा प्रभु सब कुछ जानता है॥ ७ ॥

ਸਭ ਘਟ ਤਿਸ ਕੇ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥
समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के हैं।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਤਿਸ ਕਉ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥
उसको हमेशा प्रणाम करते रहो।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
भगवान् का गुणानुवाद दिन-रात करते रहो।

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ही ध्यान करते रहो।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਵਰਤੈ ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ॥
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
सब कुछ उस (परमात्मा) का किया ही होता है।

ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਕੋ ਥੀਆ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
ईश्वर जैसे मनुष्य को बनाता है, वैसा ही वह बन जाता है।

ਅਪਨਾ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
अपने खेल का वह स्वयं ही निर्माता है।

ਦੂਸਰ ਕਉਨੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
दूसरा कौन उसका विचार कर सकता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੈ ਤਿਸੁ ਆਪਨ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ॥
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
परमात्मा जिस पर अपनी कृपा करते हैं, उसे ही अपना नाम दे देते हैं।

ਬਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਜਨ ਸੇਇ ॥੮॥੧੩॥
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली है॥ ८ ॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਤਜਹੁ ਸਿਆਨਪ ਸੁਰਿ ਜਨਹੁ ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
हे भद्रपुरुषो ! अपनी चतुराई त्याग कर हरि-परमेश्वर का स्मरण करो।

ਏਕ ਆਸ ਹਰਿ ਮਨਿ ਰਖਹੁ ਨਾਨਕ ਦੂਖੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਜਾਇ ॥੧॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥
अपने मन में भगवान् की आशा रखो। हे नानक ! इस तरह दुःख, भ्रम एवं भय दूर हो जाएँगे ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਟੇਕ ਬ੍ਰਿਥੀ ਸਭ ਜਾਨੁ ॥
मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥
(हे प्राणी!) किसी मनुष्य पर भरोसा रखना सब व्यर्थ है।

ਦੇਵਨ ਕਉ ਏਕੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥
एक भगवान् ही सब को देने वाले हैं।

ਜਿਸ ਕੈ ਦੀਐ ਰਹੈ ਅਘਾਇ ॥
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
जिसके देने से ही तृप्ति होती है

ਬਹੁਰਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥
और फिर सांसारिक इच्छाओं की तृष्णा नहीं लगती।

ਮਾਰੈ ਰਾਖੈ ਏਕੋ ਆਪਿ ॥
मारै राखै एको आपि ॥
ईश्वर स्वयं ही मारते हैं और रक्षा करते हैं।

ਮਾਨੁਖ ਕੈ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਹਾਥਿ ॥
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥
मनुष्य के वश में कुछ भी नहीं है।

ਤਿਸ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥
उसका आज्ञा को समझने से सुख उपलब्ध होता है।

ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਖੁ ਕੰਠਿ ਪਰੋਇ ॥
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥
उसके नाम को पिरोकर अपने कण्ठ में डालकर रखो।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥
हे नानक ! उस प्रभु को हमेशा स्मरण करते रहो,

ਨਾਨਕ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥
कोई विघ्न नहीं आएगा ॥ १॥

ਉਸਤਤਿ ਮਨ ਮਹਿ ਕਰਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
उसतति मन महि करि निरंकार ॥
अपने मन में परमात्मा की महिमा-स्तुति करो।

ਕਰਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿ ਬਿਉਹਾਰ ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥
हे मेरे मन ! सत्य का कार्य-व्यवहार कर।

ਨਿਰਮਲ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਉ ॥
निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥
नाम का अमृत पान करने से तेरी जिह्वा पवित्र हो जाएगी

ਸਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਕਰਿ ਲੇਹਿ ਜੀਉ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
और तू अपनी आत्मा को हमेशा के लिए सुखदायक बना लेगा।

ਨੈਨਹੁ ਪੇਖੁ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਰੰਗੁ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
अपने नेत्रों से ईश्वर के कौतुक देख।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਨਸੈ ਸਭ ਸੰਗੁ ॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥
सत्संगति में मिलने से दूसरे समस्त मेल-मिलाप लुप्त हो जाते हैं।

ਚਰਨ ਚਲਉ ਮਾਰਗਿ ਗੋਬਿੰਦ ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
अपने चरणों से गोबिन्द के मार्ग पर चलो।

ਮਿਟਹਿ ਪਾਪ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਬਿੰਦ ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
एक क्षण भर के लिए भी हरि का जाप करने से पाप मिट जाते हैं।

ਕਰ ਹਰਿ ਕਰਮ ਸ੍ਰਵਨਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
प्रभु की सेवा करो और कानों से हरि कथा सुनो।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਨਾਨਕ ਊਜਲ ਮਥਾ ॥੨॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥
हे नानक ! (इस प्रकार) प्रभु के दरबार में आपका मस्तक उज्जवल हो जाएगा ॥ २॥

ਬਡਭਾਗੀ ਤੇ ਜਨ ਜਗ ਮਾਹਿ ॥
बडभागी ते जन जग माहि ॥
दुनिया में वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं,

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਹਿ ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥
जो हमेशा भगवान् की महिमा गाते रहते हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜੋ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰ ॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
जो व्यक्ति राम के नाम का चिन्तन करते रहते हैं,

ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਗਨੀ ਸੰਸਾਰ ॥
से धनवंत गनी संसार ॥
वही व्यक्ति जगत् में धनवान गिने जाते हैं।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹਿ ਹਰਿ ਮੁਖੀ ॥
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥
जो व्यक्ति अपने मन, तन एवं मुख से परमेश्वर के नाम का उच्चारण करते हैं,

ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਨਹੁ ਤੇ ਸੁਖੀ ॥
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
समझ लीजिए कि वे हमेशा सुखी हैं।

ਏਕੋ ਏਕੁ ਏਕੁ ਪਛਾਨੈ ॥
एको एकु एकु पछानै ॥
जो पुरुष केवल एक प्रभु को ही पहचानता है,

ਇਤ ਉਤ ਕੀ ਓਹੁ ਸੋਝੀ ਜਾਨੈ ॥
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥
उसे इहलोक एवं परलोक का ज्ञान हो जाता है।

ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਜਿਸ ਕਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥
हे नानक ! जिसका मन ईश्वर के नाम में मिल जाता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਨਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਾਨਿਆ ॥੩॥
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥
वह प्रभु को पहचान लेता है॥ ३॥

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਪਨ ਆਪੁ ਸੁਝੈ ॥
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
गुरु की कृपा से जो व्यक्ति अपने आपको समझ लेता है,

ਤਿਸ ਕੀ ਜਾਨਹੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥
जान लीजिए कि उसकी तृष्णा मिट गई है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤ ॥
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
जो व्यक्ति संतों की संगति में हरि-परमेश्वर का यश करता रहता है,

ਸਰਬ ਰੋਗ ਤੇ ਓਹੁ ਹਰਿ ਜਨੁ ਰਹਤ ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥
वह प्रभु भक्त समस्त रोगों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਕੇਵਲ ਬਖ੍ਯਾਨੁ ॥
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
जो व्यक्ति रात-दिन केवल ईश्वर के भजन का ही गुणगान करता है,

ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਮਹਿ ਸੋਈ ਨਿਰਬਾਨੁ ॥
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥
वह अपने गृहस्थ में ही निर्लिप्त रहता है।

ਏਕ ਊਪਰਿ ਜਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਆਸਾ ॥
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
जिस मनुष्य ने एक ईश्वर पर आशा रखी है,

ਤਿਸ ਕੀ ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥
उसके लिए मृत्यु का फँदा कट जाता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਭੂਖ ॥
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
जिसके मन में पारब्रह्म की भूख है,

ਨਾਨਕ ਤਿਸਹਿ ਨ ਲਾਗਹਿ ਦੂਖ ॥੪॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥
हे नानक ! उसको कोई दुःख नहीं लगता ॥ ४ ॥

ਜਿਸ ਕਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ॥
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥
जिसको हरि-प्रभु मन में याद आता है,

ਸੋ ਸੰਤੁ ਸੁਹੇਲਾ ਨਹੀ ਡੁਲਾਵੈ ॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥
वह संत सुखी है और उसका मन कभी नहीं डगमगाता।

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
जिस पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करते हैं,

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਕਹੁ ਕਿਸ ਤੇ ਡਰੈ ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
कहो वह सेवक किससे डर सकता है?

ਜੈਸਾ ਸਾ ਤੈਸਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
जैसा ईश्वर है, वैसा ही उसको दिखाई देता है।

ਅਪੁਨੇ ਕਾਰਜ ਮਹਿ ਆਪਿ ਸਮਾਇਆ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
अपनी रचना में प्रभु स्वयं ही समाया हुआ है।

ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੀਝਿਆ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
अनेक बार विचार करके विचार लिया है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤਤੁ ਸਭੁ ਬੂਝਿਆ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
गुरु की कृपा से समस्त वास्तविकता को समझ लिया है।

ਜਬ ਦੇਖਉ ਤਬ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੂਲੁ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
जब मैं देखता हूँ तो सब कुछ परमात्मा ही है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੂਖਮੁ ਸੋਈ ਅਸਥੂਲੁ ॥੫॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥
हे नानक ! वह स्वयं ही सूक्ष्म और स्वयं ही अस्थूल है॥ ५॥

ਨਹ ਕਿਛੁ ਜਨਮੈ ਨਹ ਕਿਛੁ ਮਰੈ ॥
नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
न कुछ जन्मता है, न कुछ मरता है।

ਆਪਨ ਚਲਿਤੁ ਆਪ ਹੀ ਕਰੈ ॥
आपन चलितु आप ही करै ॥
भगवान् अपनी लीला स्वयं ही करते हैं।

ਆਵਨੁ ਜਾਵਨੁ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਅਨਦ੍ਰਿਸਟਿ ॥
आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥
जन्म-मरण, गोचर(दृश्य) एवं अगोचर(अदृश्य)-"

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਧਾਰੀ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ॥
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥
यह सारा जगत् उसने अपना आज्ञाकारी बनाया हुआ है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਗਲ ਮਹਿ ਆਪਿ ॥
आपे आपि सगल महि आपि ॥
सब कुछ वह अपने आप से ही है। वह स्वयं ही सब (जीव-जन्तुओं) में विद्यमान है।

ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਰਚਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥
अनेक युक्तियों द्वारा वह सृष्टि की रचना करते एवं उसका नाश भी करते हैं।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਖੰਡ ॥
अबिनासी नाही किछु खंड ॥
लेकिन अनश्वर परमात्मा का कुछ भी नाश नहीं होता।

ਧਾਰਣ ਧਾਰਿ ਰਹਿਓ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥
वह ब्रह्माण्ड को सहारा दे रहे हैं।

ਅਲਖ ਅਭੇਵ ਪੁਰਖ ਪਰਤਾਪ ॥
अलख अभेव पुरख परताप ॥
प्रभु का तेज-प्रताप अलक्ष्य एवं भेद रहित है।

ਆਪਿ ਜਪਾਏ ਤ ਨਾਨਕ ਜਾਪ ॥੬॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥
हे नानक ! यदि वह अपना जाप मनुष्य से स्वयं करवाएं तो ही वह जाप करता है ॥६॥

ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ਸੁ ਸੋਭਾਵੰਤ ॥
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
जो प्रभु को जानते हैं, वे शोभायमान हैं।

ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਉਧਰੈ ਤਿਨ ਮੰਤ ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥
समस्त संसार उनके मंत्र (उपदेश) द्वारा बच जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸਗਲ ਉਧਾਰਨ ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभु के सेवक सबका कल्याण कर देते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਦੂਖ ਬਿਸਾਰਨ ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥
प्रभु के सेवकों की संगति द्वारा दुःख भूल जाता है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਕਿਰਪਾਲ ॥
आपे मेलि लए किरपाल ॥
कृपालु प्रभु उनको अपने साथ मिला लेते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਜਪਿ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥
गुरु के शब्द का जाप करने से वह कृतार्थ हो जाते हैं।

ਉਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋਈ ਲਾਗੈ ॥
उन की सेवा सोई लागै ॥
केवल वही सौभाग्यशाली उनकी सेवा में लगता है,

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਬਡਭਾਗੈ ॥
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥
जिस पर प्रभु कृपा करते हैं।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਾਵਹਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥
जो प्रभु के नाम का जाप करते हैं, वे सुख पाते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਪੁਰਖ ਕਉ ਊਤਮ ਕਰਿ ਮਾਨੁ ॥੭॥
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥
हे नानक ! उन पुरुषों को महान समझो ॥ ७॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥
वह जो कुछ करता है, प्रभु की आज्ञा में करता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਬਸੈ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ॥
सदा सदा बसै हरि संगि ॥
वह हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहता है।

ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਹੋਵੈ ਸੋ ਹੋਇ ॥
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥
जो कुछ होता है, वह सहज स्वभाव ही होता है।

ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਣੈ ਸੋਇ ॥
करणैहारु पछाणै सोइ ॥
वह उस सृजनहार प्रभु को ही पहचानता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਕੀਆ ਜਨ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥
प्रभु का किया उसके सेवकों को मीठा लगता है।

ਜੈਸਾ ਸਾ ਤੈਸਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਨਾ ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥
जैसा प्रभु है, वैसा ही उसको दिखाई देता है।

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜੇ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ॥
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥
वह उसमें लीन हो जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था।

ਓਇ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਉਨਹੂ ਬਨਿ ਆਏ ॥
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥
वह सुखों का भण्डार है। यह प्रतिष्ठा केवल उसको ही शोभा देती है।

ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਿ ਦੀਨੋ ਮਾਨੁ ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
अपने सेवक को प्रभु ने स्वयं ही शोभा प्रदान की है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਜਨੁ ਏਕੋ ਜਾਨੁ ॥੮॥੧੪॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥
हे नानक ! समझो कि प्रभु एवं उसका सेवक एक समान ही हैं ॥८॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਥਾ ਜਾਨਨਹਾਰ ॥
सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥
प्रभु सर्वकला सम्पूर्ण है और हमारे दु:खों को जानने वाला है।

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਉਧਰੀਐ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰ ॥੧॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥
हे नानक ! जिसका सिमरन करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਟੂਟੀ ਗਾਢਨਹਾਰ ਗੋੁਪਾਲ ॥
टूटी गाढनहार गोपाल ॥
जगतपालक गोपाल टूटों को जोड़ने वाला है।

ਸਰਬ ਜੀਆ ਆਪੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥
वह स्वयं ही समस्त प्राणियों का पालन-पोषण करते हैं।

ਸਗਲ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਜਿਸੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥
जिसके मन में सब की चिन्ता है,

ਤਿਸ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥
उससे कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता।

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥
हे मेरे मन ! सदा ही परमात्मा का जाप कर।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
अनश्वर प्रभु सब कुछ स्वयं ही है।

ਆਪਨ ਕੀਆ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ॥
आपन कीआ कछू न होइ ॥
प्राणी के अपने करने से कुछ नहीं हो सकता,

ਜੇ ਸਉ ਪ੍ਰਾਨੀ ਲੋਚੈ ਕੋਇ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
चाहे वह सैकड़ों बार इसकी इच्छा करे।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਤੇਰੈ ਕਿਛੁ ਕਾਮ ॥
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
उसके अतिरिक्त कुछ भी तेरे काम का नहीं।

ਗਤਿ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਏਕ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥੧॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥
हे नानक ! एक ईश्वर के नाम का जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है ॥१॥

ਰੂਪਵੰਤੁ ਹੋਇ ਨਾਹੀ ਮੋਹੈ ॥
रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
यदि प्राणी अति सुन्दर है तो अपने आप वह दूसरों को मोहित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਜੋਤਿ ਸਗਲ ਘਟ ਸੋਹੈ ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
प्रभु की ज्योति ही समस्त शरीरों में सुन्दर लगती है।

ਧਨਵੰਤਾ ਹੋਇ ਕਿਆ ਕੋ ਗਰਬੈ ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
धनवान होकर कोई पुरुष क्या अभिमान करे,

ਜਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਦੀਆ ਦਰਬੈ ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
जब समस्त धन उसका दिया हुआ है।

ਅਤਿ ਸੂਰਾ ਜੇ ਕੋਊ ਕਹਾਵੈ ॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
यदि कोई पुरुष अपने आपको महान शूरवीर कहलवाता हो,

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਕਲਾ ਬਿਨਾ ਕਹ ਧਾਵੈ ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
प्रभु की कला (शक्ति) बिना वह क्या प्रयास कर सकता है?

ਜੇ ਕੋ ਹੋਇ ਬਹੈ ਦਾਤਾਰੁ ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥
यदि कोई पुरुष दानी बन बैठे

ਤਿਸੁ ਦੇਨਹਾਰੁ ਜਾਨੈ ਗਾਵਾਰੁ ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
तो दाता प्रभु उसको मूर्ख समझता है।

ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂਟੈ ਹਉ ਰੋਗੁ ॥
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
गुरु की कृपा से जिसके अहंकार का रोग दूर होता है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਸਦਾ ਅਰੋਗੁ ॥੨॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥
हे नानक ! वह मनुष्य सदैव स्वस्थ है॥ २ ॥

ਜਿਉ ਮੰਦਰ ਕਉ ਥਾਮੈ ਥੰਮਨੁ ॥
जिउ मंदर कउ थामै थमनु ॥
जैसे मन्दिर को एक सतम्भ (खम्भा) सहारा देता है,

ਤਿਉ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਹਿ ਅਸਥੰਮਨੁ ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथमनु ॥
वैसे ही गुरु का शब्द मन को सहारा देता है।

ਜਿਉ ਪਾਖਾਣੁ ਨਾਵ ਚੜਿ ਤਰੈ ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
जैसे नाव में रखा पत्थर पार हो जाता है,

ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਗਤੁ ਨਿਸਤਰੈ ॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥
वैसे ही प्राणी गुरु के चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है।

ਜਿਉ ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਕ ਪਰਗਾਸੁ ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
जैसे दीपक अन्धेरे में प्रकाश कर देता है,

ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਹੋਇ ਬਿਗਾਸੁ ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
वैसे ही गुरु के दर्शन करके मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ਜਿਉ ਮਹਾ ਉਦਿਆਨ ਮਹਿ ਮਾਰਗੁ ਪਾਵੈ ॥
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
जैसे मनुष्य को महा जंगल में पथ मिल जाता है,

ਤਿਉ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਟਾਵੈ ॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥
वैसे ही सत्संगति में रहने से प्रभु की ज्योति मनुष्य के भीतर प्रकट हो जाती है।

ਤਿਨ ਸੰਤਨ ਕੀ ਬਾਛਉ ਧੂਰਿ ॥
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
मैं उन संतों के चरणों की धूलि मांगता हूँ।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਹਰਿ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ॥੩॥
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥
हे ईश्वर ! नानक की आकांक्षा पूर्ण करो॥ ३॥

ਮਨ ਮੂਰਖ ਕਾਹੇ ਬਿਲਲਾਈਐ ॥
मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
हे मूर्ख मन ! क्यों विलाप करते हो !

ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਿਖਿਆ ਪਾਈਐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥
तुझे वह सब कुछ मिलेगा, जो तेरे पूर्व जन्म के कर्मों द्वारा लिखा हुआ है।

ਦੂਖ ਸੂਖ ਪ੍ਰਭ ਦੇਵਨਹਾਰੁ ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
प्रभु दुःख एवं सुख देने वाले हैं।

ਅਵਰ ਤਿਆਗਿ ਤੂ ਤਿਸਹਿ ਚਿਤਾਰੁ ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
अन्य सब कुछ छोड़कर तू उसकी ही आराधना कर।

ਜੋ ਕਛੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਮਾਨੁ ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
परमात्मा जो कुछ करता है, उसको सुख समझ।

ਭੂਲਾ ਕਾਹੇ ਫਿਰਹਿ ਅਜਾਨ ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥
हे मूर्ख ! तुम क्यों भटकते फिरते हो।

ਕਉਨ ਬਸਤੁ ਆਈ ਤੇਰੈ ਸੰਗ ॥
कउन बसतु आई तेरै संग ॥
कौन-सी वस्तु तेरे साथ आई है।

ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਰਸਿ ਲੋਭੀ ਪਤੰਗ ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥
हे लालची परवाने ! तुम सांसारिक ऐश्वर्य-भोग में मस्त हो रहे हो ?

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪਿ ਹਿਰਦੇ ਮਾਹਿ ॥
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
तू अपने मन में राम के नाम का जाप कर।

ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਹਿ ॥੪॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥
हे नानक ! इस तरह तुम सम्मानपूर्वक अपने धाम (परलोक) को जाओगे ॥ ४॥

ਜਿਸੁ ਵਖਰ ਕਉ ਲੈਨਿ ਤੂ ਆਇਆ ॥
जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
हे जीव ! राम नाम का धन, जिसे पाने लिए तुम इस दुनिया में आए हो,

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
वह राम नाम रूपी सौदा संतों के घर से मिलता है।

ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਲੇਹੁ ਮਨ ਮੋਲਿ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
अपने अभिमान को त्याग दे,

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੇ ਮਹਿ ਤੋਲਿ ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
राम का नाम अपने हृदय में तोल और अपने मन से इसे खरीद।

ਲਾਦਿ ਖੇਪ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਚਾਲੁ ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥
संतों के पवित्र संग में चलकर भगवान् के नाम का धन प्यार से ध्यान द्वारा धारण कर लो,

ਅਵਰ ਤਿਆਗਿ ਬਿਖਿਆ ਜੰਜਾਲ ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥
माया के दूसरे जंजाल त्याग दे।

ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
प्रत्येक तुझे धन्य ! धन्य ! कहेगा।

ਮੁਖ ਊਜਲ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਇ ॥
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥
उस प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा।

ਇਹੁ ਵਾਪਾਰੁ ਵਿਰਲਾ ਵਾਪਾਰੈ ॥
इहु वापारु विरला वापारै ॥
यह व्यापार कोई दुर्लभ व्यापारी ही करता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ॥੫॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥
हे नानक ! मैं ऐसे व्यापारी पर सदा बलिहारी जाता हूँ॥ ५ ॥

ਚਰਨ ਸਾਧ ਕੇ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪੀਉ ॥
चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
हे जीव !साधुओं के चरण धो-धोकर पी।

ਅਰਪਿ ਸਾਧ ਕਉ ਅਪਨਾ ਜੀਉ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥
साधुओं पर अपनी आत्मा भी अर्पण कर दे,

ਸਾਧ ਕੀ ਧੂਰਿ ਕਰਹੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥
साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साधुओं के चरणों की धूलि से स्नान कर।

ਸਾਧ ਊਪਰਿ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥
साधु पर न्यौछावर हो जाना चाहिए।

ਸਾਧ ਸੇਵਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साधु की सेवा सौभाग्य से ही मिलती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
साधु की संगति में हरि भजन का गुणगान करना चाहिए।

ਅਨਿਕ ਬਿਘਨ ਤੇ ਸਾਧੂ ਰਾਖੈ ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
साधु अनेक विघ्नों से मनुष्य की रक्षा करता है।

ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ॥
हरि गुन गाइ अम्रित रसु चाखै ॥
जो प्रभु की गुणस्तुति करता है, वह अमृत रस का आस्वादन करता है।

ਓਟ ਗਹੀ ਸੰਤਹ ਦਰਿ ਆਇਆ ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
जिसने संतों का सहारा पकड़ा है और उनके द्वार पर आ गिरा है,

ਸਰਬ ਸੁਖ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਪਾਇਆ ॥੬॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥
हे नानक ! वह सर्व सुख प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

ਮਿਰਤਕ ਕਉ ਜੀਵਾਲਨਹਾਰ ॥
मिरतक कउ जीवालनहार ॥
परमात्मा मृतक प्राणी को भी जीवित करने वाले हैं।

ਭੂਖੇ ਕਉ ਦੇਵਤ ਅਧਾਰ ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥
वह भूखे को भी भोजन प्रदान करते हैं।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਮਾਹਿ ॥
सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥
सभी खजाने उसकी दृष्टि में हैं।

ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਣਾ ਪਾਹਿ ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
परन्तु प्राणी अपने पूर्व जन्म के किए कर्मों का फल भोगते हैं।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਓਹੁ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
सब कुछ उस परमात्मा का ही है और वही सब कुछ करने में समर्थवान है।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਸਰ ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
उसके अतिरिक्त कोई दूसरा न ही था और न ही होगा।

ਜਪਿ ਜਨ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣੀ ॥
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
हे जीव ! दिन-रात सदैव उसकी आराधना कर।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਨਿਰਮਲ ਇਹ ਕਰਣੀ ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
यह जीवन-आचरण सबसे ऊँचा एवं पवित्र है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਕਉ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ॥
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
जिस पुरुष पर परमात्मा ने कृपा धारण करके अपना नाम प्रदान किया है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਆ ॥੭॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥
हे नानक ! वह पवित्र हो जाता है॥ ७ ॥

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ॥
जा कै मनि गुर की परतीति ॥
जिसके मन में गुरु जी पर आस्था है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੀਤਿ ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
वह मनुष्य हरि-प्रभु को स्मरण करने लग जाता है।

ਭਗਤੁ ਭਗਤੁ ਸੁਨੀਐ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध भक्त हो जाता है

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਏਕੋ ਹੋਇ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥
जिसके हृदय में एक ईश्वर विद्यमान होता है।

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਚੁ ਤਾ ਕੀ ਰਹਤ ॥
सचु करणी सचु ता की रहत ॥
उसका कर्म सत्य है और जीवन-मर्यादा भी सत्य है।

ਸਚੁ ਹਿਰਦੈ ਸਤਿ ਮੁਖਿ ਕਹਤ ॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥
उसके मन में सत्य है और वह अपने मुख से सत्य ही बोलता है।

ਸਾਚੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਚਾ ਆਕਾਰੁ ॥
साची द्रिसटि साचा आकारु ॥
उसकी दृष्टि सत्य है और उसका स्वरूप भी सत्य है।

ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਸਾਚਾ ਪਾਸਾਰੁ ॥
सचु वरतै साचा पासारु ॥
वह सत्य बांटता है और सत्य ही फैलाता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਤਾ ॥
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
हे नानक ! जो पुरुष परब्रह्म को सत्य समझता है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਤਾ ॥੮॥੧੫॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥
वह पुरुष सत्य में ही समा जाता है ॥८॥१५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਨ ਰੰਗੁ ਕਿਛੁ ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣ ਤੇ ਪ੍ਰਭ ਭਿੰਨ ॥
रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
परमेश्वर का न कोई रूप अथवा चिन्ह है और न ही कोई रंग है। वह माया के तीनों गुणों से परे है।

ਤਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥੧॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा स्वयं उस पुरुष को समझाता है, जिस पर स्वयं प्रसन्न होता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖੁ ॥
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
(हे जीव!) अपने मन में अनश्वर प्रभु को याद रख

ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਤੂ ਪ੍ਰੀਤਿ ਤਿਆਗੁ ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
और मनुष्य का प्रेम (मोह) त्याग दे।

ਤਿਸ ਤੇ ਪਰੈ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਕੋਇ ॥
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
उससे परे कोई वस्तु नहीं।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
वह एक ईश्वर समस्त जीव-जन्तुओं के भीतर स्थित है।

ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ॥
आपे बीना आपे दाना ॥
वह स्वयं सब कुछ देखने वाले और स्वयं ही सब कुछ जानने वाले हैं।

ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਗਹੀਰੁ ਸੁਜਾਨਾ ॥
गहिर ग्मभीरु गहीरु सुजाना ॥
प्रभु अथाह गम्भीर, गहरा एवं परम बुद्धिमान है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
वह पारब्रह्म, परमेश्वर एवं गोबिन्द

ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਾਨ ਦਇਆਲ ਬਖਸੰਦ ॥
क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥
कृपा का भण्डार, बड़ा दयालु एवं क्षमाशील है।

ਸਾਧ ਤੇਰੇ ਕੀ ਚਰਨੀ ਪਾਉ ॥
साध तेरे की चरनी पाउ ॥
हे प्रभु ! आपके साधुओं के चरणों पर नतमस्तक होवे

ਨਾਨਕ ਕੈ ਮਨਿ ਇਹੁ ਅਨਰਾਉ ॥੧॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥
नानक के मन में यही अभिलाषा है ॥ १॥

ਮਨਸਾ ਪੂਰਨ ਸਰਨਾ ਜੋਗ ॥
मनसा पूरन सरना जोग ॥
भगवान् मनोकामना पूर्ण करने वाले एवं शरण देने योग्य है।

ਜੋ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਸੋਈ ਹੋਗੁ ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥
जो कुछ ईश्वर ने अपने हाथ से लिख दिया है, वही होता है।

ਹਰਨ ਭਰਨ ਜਾ ਕਾ ਨੇਤ੍ਰ ਫੋਰੁ ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
वह पलक झपकते ही सृष्टि की रचना एवं विनाश कर देते हैं।

ਤਿਸ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ਹੋਰੁ ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
दूसरा कोई उसके भेद को नहीं जानता।

ਅਨਦ ਰੂਪ ਮੰਗਲ ਸਦ ਜਾ ਕੈ ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
वह प्रसन्नता का रूप है एवं उसके मन्दिर में सदैव मंगल-खुशियाँ हैं।

ਸਰਬ ਥੋਕ ਸੁਨੀਅਹਿ ਘਰਿ ਤਾ ਕੈ ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥
मैंने सुना है कि समस्त पदार्थ उसके घर में उपस्थित हैं।

ਰਾਜ ਮਹਿ ਰਾਜੁ ਜੋਗ ਮਹਿ ਜੋਗੀ ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
राजाओं में वह महान राजा एवं योगीयों में महायोगी है।

ਤਪ ਮਹਿ ਤਪੀਸਰੁ ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਮਹਿ ਭੋਗੀ ॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥
तपस्वियों में वह महान तपस्वी है और गृहस्थियों में भी स्वयं ही गृहस्थी है।

ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਭਗਤਹ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
उस एक ईश्वर का ध्यान करने से भक्तजनों ने सुख प्राप्त कर लिया है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਪੁਰਖ ਕਾ ਕਿਨੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥
हे नानक ! उस परमात्मा का किसी ने भी अन्त नहीं पाया ॥ २ ॥

ਜਾ ਕੀ ਲੀਲਾ ਕੀ ਮਿਤਿ ਨਾਹਿ ॥
जा की लीला की मिति नाहि ॥
जिस भगवान् की (सृष्टि-रूपी) लीला का कोई अंत नहीं,

ਸਗਲ ਦੇਵ ਹਾਰੇ ਅਵਗਾਹਿ ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥
उसे खोज-खोजकर देवता भी थक चुके हैं।

ਪਿਤਾ ਕਾ ਜਨਮੁ ਕਿ ਜਾਨੈ ਪੂਤੁ ॥
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
चूंकि अपने पिता के जन्म बारे पुत्र क्या जानता है ?

ਸਗਲ ਪਰੋਈ ਅਪੁਨੈ ਸੂਤਿ ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सारी सृष्टि ईश्वर ने अपने (आदेश रूपी) धागे में पिरोई हुई है।

ਸੁਮਤਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਜਿਨ ਦੇਇ ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जिन्हें प्रभु सुमति, ज्ञान एवं ध्यान प्रदान करता है,

ਜਨ ਦਾਸ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਸੇਇ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥
उसके सेवक एवं दास उसका ही ध्यान करते रहते हैं।

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਜਾ ਕਉ ਭਰਮਾਏ ॥
तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥
जिसको प्रभु माया के तीन गुणों में भटकाते हैं,

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
वह जन्मता-मरता रहता है और आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है।

ਊਚ ਨੀਚ ਤਿਸ ਕੇ ਅਸਥਾਨ ॥
ऊच नीच तिस के असथान ॥
ऊँच-नीच सब उसके ही स्थान हैं।

ਜੈਸਾ ਜਨਾਵੈ ਤੈਸਾ ਨਾਨਕ ਜਾਨ ॥੩॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥
हे नानक ! जैसी सूझ वह देते हैं, वैसे ही सूझ वाला प्राणी बन जाता है ॥३॥

ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਨਾਨਾ ਜਾ ਕੇ ਰੰਗ ॥
नाना रूप नाना जा के रंग ॥
ईश्वर के अनेक रूप हैं और अनेक उसके रंग हैं।

ਨਾਨਾ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਇਕ ਰੰਗ ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
अनेक वेष धारण करते हुए वह फ़िर भी एक ही हैं।

ਨਾਨਾ ਬਿਧਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
उसने विभिन्न विधियों से अपनी सृष्टि का प्रसार किया हुआ है।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥
अनश्वर प्रभु जो एक ही है,

ਨਾਨਾ ਚਲਿਤ ਕਰੇ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ॥
नाना चलित करे खिन माहि ॥
एक क्षण में वह विभिन्न खेल रच देता है।

ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪੂਰਨੁ ਸਭ ਠਾਇ ॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥
पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों में समा रहा है।

ਨਾਨਾ ਬਿਧਿ ਕਰਿ ਬਨਤ ਬਨਾਈ ॥
नाना बिधि करि बनत बनाई ॥
अनेक विधियों से उसने सृष्टि-रचना की है।

ਅਪਨੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਈ ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥
अपना मूल्यांकन उसने स्वयं ही पाया है।

ਸਭ ਘਟ ਤਿਸ ਕੇ ਸਭ ਤਿਸ ਕੇ ਠਾਉ ॥
सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥
समस्त हृदय उसके हैं और उसके ही समस्त स्थान हैं।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੪॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥
हे नानक ! मैं हरि का नाम जप-जप कर ही जीता हूँ ॥४॥

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਗਲੇ ਜੰਤ ॥
नाम के धारे सगले जंत ॥
ईश्वर नाम ने ही समस्त जीव-जन्तुओं को सहारा दिया हुआ है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
धरती के खण्ड एवं ब्रह्माण्ड ईश्वर नाम ने ही टिकाए हुए हैं।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥
ईश्वर के नाम ने ही स्मृतियों, वेदों एवं पुराणों को सहारा दिया हुआ है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸੁਨਨ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के सहारे द्वारा प्राणी ज्ञान एवं मनन बारे सुनते हैं।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਆਗਾਸ ਪਾਤਾਲ ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
परमेश्वर का नाम ही आकाशों एवं पातालों का सहारा है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਗਲ ਆਕਾਰ ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
ईश्वर का नाम समस्त शरीरों का सहारा है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਪੁਰੀਆ ਸਭ ਭਵਨ ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
तीनों भवन एवं चौदह लोक ईश्वर के नाम ने टिकाए हुए हैं।

ਨਾਮ ਕੈ ਸੰਗਿ ਉਧਰੇ ਸੁਨਿ ਸ੍ਰਵਨ ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
नाम की संगति करने एवं कानों से इसको श्रवण करने से मनुष्य पार हो गए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਨੈ ਨਾਮਿ ਲਾਏ ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
जिस पर प्रभु कृपा धारण करके अपने नाम के साथ मिलाते हैं,

ਨਾਨਕ ਚਉਥੇ ਪਦ ਮਹਿ ਸੋ ਜਨੁ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥੫॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥
हे नानक ! वह मनुष्य भक्ति की चतुर्थ अवस्था में पहुँचकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

ਰੂਪੁ ਸਤਿ ਜਾ ਕਾ ਸਤਿ ਅਸਥਾਨੁ ॥
रूपु सति जा का सति असथानु ॥
जिस भगवान् का रूप सत्य है, उसका निवास भी सत्य है।

ਪੁਰਖੁ ਸਤਿ ਕੇਵਲ ਪਰਧਾਨੁ ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥
केवल वह सद्पुरुष ही प्रधान है।

ਕਰਤੂਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਜਾ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
करतूति सति सति जा की बाणी ॥
वह जिसके कर्म अनन्त है और जिसके शब्द सच है,

ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥
वह सत्यस्वरूप भगवान् सब में व्यापक है।

ਸਤਿ ਕਰਮੁ ਜਾ ਕੀ ਰਚਨਾ ਸਤਿ ॥
सति करमु जा की रचना सति ॥
उसके कर्म सत्य हैं और उसकी सृष्टि भी सत्य है।

ਮੂਲੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਉਤਪਤਿ ॥
मूलु सति सति उतपति ॥
उसका मूल सत्य है एवं जो कुछ उससे उत्पन्न होता है, वह भी सत्य है।

ਸਤਿ ਕਰਣੀ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲੀ ॥
सति करणी निरमल निरमली ॥
उसकी करनी सत्य है और पवित्र से भी पवित्र है।

ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਤਿਸਹਿ ਸਭ ਭਲੀ ॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥
भगवान् जिसे समझाते हैं, उसे सब भला ही लगता है।

ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸੁਖਦਾਈ ॥
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
प्रभु का सत्यनाम सुख देने वाला है।

ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਸਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ॥੬॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥
हे नानक ! (प्राणी को) यह सच्चा विश्वास गुरु से मिलता है॥ ६ ॥

ਸਤਿ ਬਚਨ ਸਾਧੂ ਉਪਦੇਸ ॥
सति बचन साधू उपदेस ॥
साधु का उपदेश सत्य वचन हैं।

ਸਤਿ ਤੇ ਜਨ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਪ੍ਰਵੇਸ ॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥
वे पुरुष सत्य हैं, जिनके हृदय में सत्य प्रवेश करता है।

ਸਤਿ ਨਿਰਤਿ ਬੂਝੈ ਜੇ ਕੋਇ ॥
सति निरति बूझै जे कोइ ॥
यदि कोई व्यक्ति सत्य को समझे और प्रेम करे,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
नामु जपत ता की गति होइ ॥
तो नाम जपने से उसकी गति हो जाती है।

ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ ॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
प्रभु स्वयं सत्यस्वरूप है और उसका किया सब सत्य है।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਅਪਨੀ ਮਿਤਿ ਗਤਿ ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ॥
वह स्वयं ही अपने अनुमान एवं अवस्था को जानता है।

ਜਿਸ ਕੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸੁ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ॥
जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥
जिसकी यह सृष्टि है, वही इसका सृजनहार है।

ਅਵਰ ਨ ਬੂਝਿ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥
उस परमेश्वर के अतिरिक्त किसी और को इस ब्रह्मांड का रक्षक मत समझो।

ਕਰਤੇ ਕੀ ਮਿਤਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੀਆ ॥
करते की मिति न जानै कीआ ॥
सृष्टिकर्ता की महानता का मूल्यांकन उसकी रचना से नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਵਰਤੀਆ ॥੭॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥
हे नानक ! जो कुछ उसे अच्छा लगता है, केवल वही होता है। ७॥

ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦ ॥
बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
प्रभु के अद्‌भुत, आश्चर्यजनक चमत्कार देखकर भक्त चकित हो जाते हैं।

ਜਿਨਿ ਬੂਝਿਆ ਤਿਸੁ ਆਇਆ ਸ੍ਵਾਦ ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥
जो प्रभु की महिमा को समझता है, वही आनन्द प्राप्त करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਾਚਿ ਜਨ ਰਹੇ ॥
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
प्रभु के विनम्र सेवक उनके प्रेम में लीन रहते हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਪਦਾਰਥ ਲਹੇ ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह (नाम) पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं।

ਓਇ ਦਾਤੇ ਦੁਖ ਕਾਟਨਹਾਰ ॥
ओइ दाते दुख काटनहार ॥
वह स्वयं दूसरों के लिए दाता तथा दुःख दूर करने वाले बन जाते हैं।

ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰ ॥
जा कै संगि तरै संसार ॥
और उनकी संगति में मनुष्य बुराइयों के संसार-सागर को पार कर लेता है।

ਜਨ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ॥
जन का सेवकु सो वडभागी ॥
जो ऐसे भक्तों का सेवक बन जाता है, वही वास्तव में सौभाग्यशाली है।

ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
जन कै संगि एक लिव लागी ॥
उसके सेवक की संगति में मनुष्य की वृति एक ईश्वर से लग जाती है।

ਗੁਨ ਗੋਬਿਦ ਕੀਰਤਨੁ ਜਨੁ ਗਾਵੈ ॥
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥
प्रभु का सेवक उसकी गुणस्तुति एवं भजन गायन करता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧੬॥
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से उसे प्रभु के नाम का फल प्राप्त होता है॥ ८॥ १६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥
आदि सचु जुगादि सचु ॥
भगवान् समय के आरंभ से पूर्व ही विद्यमान हैं; वे युगों के आदि से अस्तित्व में हैं।

ਹੈ ਭਿ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭਿ ਸਚੁ ॥੧॥
है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥
हे नानक ! प्रभु वर्तमान में भी अस्तित्वमान हैं और अनंत काल तक रहेंगे। ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਚਰਨ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪਰਸਨਹਾਰ ॥
चरन सति सति परसनहार ॥
भगवान् की उपस्थिति शाश्वत है; जो उनकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं, वे भी जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर अमर हो जाते हैं।

ਪੂਜਾ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸੇਵਦਾਰ ॥
पूजा सति सति सेवदार ॥
उनकी पूजा शाश्वत है, और जो लोग प्रेम से उनका ध्यान करके उनकी सेवा करते हैं वे भी शाश्वत हो जाते हैं।

ਦਰਸਨੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪੇਖਨਹਾਰ ॥
दरसनु सति सति पेखनहार ॥
उनके दर्शन सत्य है और जो लोग उन्हें देखते हैं वे भी सत्य हो जाते हैं (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त)।

ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਧਿਆਵਨਹਾਰ ॥
नामु सति सति धिआवनहार ॥
उसका नाम सत्य है और जो प्रेमपूर्वक उस पर ध्यान करते हैं, वे भी सत्य बन जाते हैं।

ਆਪਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਭ ਧਾਰੀ ॥
आपि सति सति सभ धारी ॥
वह स्वयं सत्यस्वरूप है और जो कुछ भी वे अपने भीतर समाहित करते हैं, वह भी सत्य है।

ਆਪੇ ਗੁਣ ਆਪੇ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥
वे स्वयं सद्गुणों के अवतार हैं, और सभी सद्गुणों के प्रदाता भी हैं।

ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਕਤਾ ॥
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
उनकी स्तुति का शब्द अनंत है, और जो उसे सत्य भाव से उच्चारित करता है, वह भी शाश्वत हो जाता है।

ਸੁਰਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਜਸੁ ਸੁਨਤਾ ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥
ईश्वर का ध्यान करना सत्य का कार्य है, और जो भक्त उनकी स्तुति का श्रवण करता है, वह भी सत्य बन जाता है।

ਬੁਝਨਹਾਰ ਕਉ ਸਤਿ ਸਭ ਹੋਇ ॥
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
जो यह जानता है कि भगवान् शाश्वत हैं, वह उनके द्वारा रचित प्रत्येक वस्तु को भी शाश्वत और वास्तविक मानता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥
हे नानक ! वह प्रभु निश्चित रूप से सनातन और शाश्वत हैं।॥ १॥

ਸਤਿ ਸਰੂਪੁ ਰਿਦੈ ਜਿਨਿ ਮਾਨਿਆ ॥
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥
जो व्यक्ति भगवान् को सत्य स्वरूप में अपने हृदय में स्थिर कर लेता है,

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਤਿਨਿ ਮੂਲੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥
उसने परमात्मा को सभी कारणों का कारण और सबका मूल समझ लिया है।

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ॥
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
जिसके हृदय में प्रभु की उपस्थिति में पूर्ण विश्वास है,

ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥
उसके मन में पवित्र आध्यात्मिक ज्ञान प्रकाशित होता है।

ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਬਸਾਨਾ ॥
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥
सभी भय छोड़कर, ऐसा व्यक्ति निर्भीक हृदय की अवस्था में वास करता है,

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥
और अंततः वह उसी में समाहित हो जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था।

ਬਸਤੁ ਮਾਹਿ ਲੇ ਬਸਤੁ ਗਡਾਈ ॥
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥
जब एक वस्तु अपनी प्रकार की दूसरी वस्तु से मिल जाती है तो वह इससे भिन्न नहीं कही जा सकती,

ਤਾ ਕਉ ਭਿੰਨ ਨ ਕਹਨਾ ਜਾਈ ॥
ता कउ भिंन न कहना जाई ॥
उसी तरह जो भगवान् के प्रेम में लीन हो जाता है, वह उनके साथ अभिन्न हो जाता है।

ਬੂਝੈ ਬੂਝਨਹਾਰੁ ਬਿਬੇਕ ॥
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥
इस विचार को कोई विरला विवेकी पुरूष ही समझता है।

ਨਾਰਾਇਨ ਮਿਲੇ ਨਾਨਕ ਏਕ ॥੨॥
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥
हे नानक ! जिन्होंने परमात्मा को प्राप्त किया, वे उनसे अभिन्न हो गए हैं।॥ २॥

ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥
भगवान् का सेवक उनका आज्ञाकारी होता है।

ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸਦਾ ਪੂਜਾਰੀ ॥
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥
भगवान् का सेवक सदा उनकी ही पूजा करता रहता है।

ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੈ ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ॥
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥
भक्त के मन में भगवान् के प्रति पूर्ण विश्वास होता है।

ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥
ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥
प्रभु के सेवक का जीवन-आचरण पवित्र होता है।

ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਸੇਵਕੁ ਜਾਨੈ ਸੰਗਿ ॥
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥
भगवान् के भक्त को विश्वास है कि परमात्मा हमेशा उसके साथ हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਨਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥
भगवान् के भक्त का मन हमेशा नाम की भक्ति और प्रेम में डूबा रहता है।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਪਾਲਨਹਾਰਾ ॥
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥
ईश्वर अपने भक्तों का पालन-पोषण करने वाले हैं।

ਸੇਵਕ ਕੀ ਰਾਖੈ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
सेवक की राखै निरंकारा ॥
निरंकार प्रभु अपने सेवक की प्रतिष्ठा रखते हैं।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੈ ॥
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥
सच्चा भक्त वही है जिस पर जिस पर प्रभु दया करते हैं।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥
हे नानक ! ऐसा सेवक प्रत्येक श्वास से ईश्वर को स्मरण करता रहता है। ॥ ३ ॥

ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਾ ਪਰਦਾ ਢਾਕੈ ॥
अपुने जन का परदा ढाकै ॥
ईश्वर अपने भक्त के दोषों और कमियों को ढक देते हैं,

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸਰਪਰ ਰਾਖੈ ॥
अपने सेवक की सरपर राखै ॥
वह अपने भक्त के सम्मान और प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं।

ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ॥
अपने दास कउ देइ वडाई ॥
प्रभु अपने सेवक को मान-सम्मान प्रदान करते हैं।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਨਾਮੁ ਜਪਾਈ ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥
ईश्वर अपने भक्त को नाम का जप करने का वरदान देते हैं।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪਿ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ॥
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
प्रभु स्वयं अपने सेवक का सम्मान बनाए रखते हैं।

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕੋਇ ਨ ਲਾਖੈ ॥
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥
भगवान् के भक्त की उच्च आध्यात्मिक अवस्था का अनुमान कोई नहीं लगा सकता।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਕੋ ਨ ਪਹੂਚੈ ॥
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
कोई भी व्यक्ति प्रभु के सेवक की बराबरी नहीं कर सकता।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਊਚ ਤੇ ਊਚੇ ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥
ईश्वर के सेवक सर्वोच्च हैं।

ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੀ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
प्रभु जिसको अपनी सेवा में लगाते हैं,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਦਹ ਦਿਸਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥੪॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥
हे नानक ! वह सेवक दसों दिशाओं में लोकप्रिय हो जाता है। ॥४॥

ਨੀਕੀ ਕੀਰੀ ਮਹਿ ਕਲ ਰਾਖੈ ॥
नीकी कीरी महि कल राखै ॥
यदि भगवान् अपनी शक्ति एक अत्यंत कमजोर व्यक्ति (जैसे एक छोटी चींटी) में डाल दें

ਭਸਮ ਕਰੈ ਲਸਕਰ ਕੋਟਿ ਲਾਖੈ ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥
वह लाखों, करोड़ों लश्करों को भस्म बना सकती है।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾਸੁ ਨ ਕਾਢਤ ਆਪਿ ॥
जिस का सासु न काढत आपि ॥
जिस प्राणी का श्वास परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं है;

ਤਾ ਕਉ ਰਾਖਤ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥ ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
उसको वह अपना हाथ देकर बचा लेते हैं।

ਮਾਨਸ ਜਤਨ ਕਰਤ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
मनुष्य अनेक विधियों से यत्न करता है,

ਤਿਸ ਕੇ ਕਰਤਬ ਬਿਰਥੇ ਜਾਤਿ ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
परन्तु उसके काम असफल हो जाते हैं।

ਮਾਰੈ ਨ ਰਾਖੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई मार अथवा बचा नहीं सकता।

ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਾ ਰਾਖਾ ਸੋਇ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
समस्त जीव-जन्तुओं का परमात्मा ही रखवाले हैं।

ਕਾਹੇ ਸੋਚ ਕਰਹਿ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
हे नश्वर प्राणी ! तुम क्यों चिन्ता करते हो ?

ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਅਲਖ ਵਿਡਾਣੀ ॥੫॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥
हे नानक ! अलक्ष्य एवं आश्चर्यजनक परमात्मा को स्मरण कर॥ ५ ॥

ਬਾਰੰ ਬਾਰ ਬਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਪੀਐ ॥
बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥
बार-बार ईश्वर के नाम का जाप करना चाहिए।

ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਧ੍ਰਪੀਐ ॥
पी अम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम-अमृत पीकर यह मन एवं शरीर तृप्त हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
जिस गुरमुख को नाम-रत्न प्राप्त हुआ है,

ਤਿਸੁ ਕਿਛੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥
वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे को नहीं देखता।

ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਾਮੋ ਰੂਪੁ ਰੰਗੁ ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
नाम उसका धन है और नाम ही उसका रूप, रंग है।

ਨਾਮੋ ਸੁਖੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥
नाम उसका सुख है और हरि का नाम ही उसका साथी होता है।

ਨਾਮ ਰਸਿ ਜੋ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੇ ॥
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥
जो मनुष्य नाम-अमृत से तृप्त हो जाते हैं,

ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਹਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੇ ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
उनकी आत्मा एवं शरीर केवल नाम में ही लीन हो जाते हैं।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਨਾਮ ॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
उठते-बैठते, सोते हुए सदैव ईश्वर का नाम-स्मरण ही

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਸਦ ਕਾਮ ॥੬॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥
हे नानक!सेवकों का काम होता है ।।६ ॥

ਬੋਲਹੁ ਜਸੁ ਜਿਹਬਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
अपनी जिह्वा से दिन-रात परमेश्वर की गुणस्तुति करो।

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਜਨ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
यह देन परमेश्वर ने अपने सेवक को प्रदान की है।

ਕਰਹਿ ਭਗਤਿ ਆਤਮ ਕੈ ਚਾਇ ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
वह मन के उत्साह से भक्ति करता है

ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਸਿਉ ਰਹਹਿ ਸਮਾਇ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
और अपने प्रभु में ही लीन रहता है।

ਜੋ ਹੋਆ ਹੋਵਤ ਸੋ ਜਾਨੈ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥
वह जो कुछ हो रहा है, भगवान् की इच्छा से सहर्ष जानता है

ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੈ ॥
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥
और अपने प्रभु की आज्ञा को पहचानता है।

ਤਿਸ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਉਨ ਬਖਾਨਉ ॥
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥
उसकी महिमा कौन वर्णन कर सकता है ?

ਤਿਸ ਕਾ ਗੁਨੁ ਕਹਿ ਏਕ ਨ ਜਾਨਉ ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥
उसकी एक प्रशंसा को भी मैं वर्णन करना नहीं जानता।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਬਸਹਿ ਹਜੂਰੇ ॥
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥
जो सारा दिन प्रभु की उपस्थिति में रहते हैं,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ॥੭॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥
हे नानक ! वह पूर्ण पुरुष हैं।॥ ७ ॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਤਿਨ ਕੀ ਓਟ ਲੇਹਿ ॥
मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥
हे मेरे मन ! तू उनकी शरण ले।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਨਾ ਤਿਨ ਜਨ ਦੇਹਿ ॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥
अपना मन एवं तन उन पुरुषों को समर्पित कर दे।

ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਅਪਨਾ ਪ੍ਰਭੂ ਪਛਾਤਾ ॥
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥
जिस पुरुष ने अपने प्रभु को पहचान लिया है,

ਸੋ ਜਨੁ ਸਰਬ ਥੋਕ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
सो जनु सरब थोक का दाता ॥
वह मनुष्य समस्त वस्तुएँ देने वाला है।

ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ॥
तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥
उसकी शरण में तुम्हें सर्व सुख मिल जाएँगे।

ਤਿਸ ਕੈ ਦਰਸਿ ਸਭ ਪਾਪ ਮਿਟਾਵਹਿ ॥
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥
उसके दर्शन द्वारा समस्त पाप नाश हो जाएँगे।

ਅਵਰ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਛਾਡੁ ॥
अवर सिआनप सगली छाडु ॥
दूसरी चतुराई त्याग कर

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਤੂ ਸੇਵਾ ਲਾਗੁ ॥
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥
प्रभु के उस सेवक की सेवा में स्वयं को लगा ले।

ਆਵਨੁ ਜਾਨੁ ਨ ਹੋਵੀ ਤੇਰਾ ॥
आवनु जानु न होवी तेरा ॥
तेरा आवागमन मिट जाएगा।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੇ ਪੂਜਹੁ ਸਦ ਪੈਰਾ ॥੮॥੧੭॥
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥
हे नानक ! सदैव ही उस सेवक के चरणों की पूजा करो ॥ ८ ॥ १७ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਜਿਨਿ ਜਾਨਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਉ ॥
सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
जिसने सत्य स्वरूप परमात्मा को जान लिया है, उसका नाम सतगुरु है।

ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਿਖੁ ਉਧਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੧॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥
हे नानक ! उसकी संगति में ईश्वर की गुणस्तुति करने से उसका शिष्य भी पार हो जाता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੀ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
सतगुरु अपने शिष्य का पालन-पोषण करते हैं।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਗੁਰੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲ ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
अपने सेवक पर गुरु जी हमेशा दयालु रहते हैं।

ਸਿਖ ਕੀ ਗੁਰੁ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰੈ ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुरु अपने शिष्य की मंदबुद्धि रूपी मैल को साफ कर देते हैं।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਚਰੈ ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह हरि के नाम का जाप करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ॥
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
सतगुरु अपने शिष्य के बन्धन काट देते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਹਾਟੈ ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥
गुरु का शिष्य विकारों से हट जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਉ ਨਾਮ ਧਨੁ ਦੇਇ ॥
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
सतगुरु अपने शिष्य को ईश्वर-नाम रूपी धन प्रदान करते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਵਡਭਾਗੀ ਹੇ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥
गुरु का शिष्य बड़ा भाग्यशाली है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਾ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰੈ ॥
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
सतगुरु अपने शिष्य का इहलोक एवं परलोक सुधार देते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਉ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ਸਮਾਰੈ ॥੧॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥
हे नानक ! सतगुरु अपने शिष्य को अपने हृदय से लगाकर रखता है ॥ १ ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਸੇਵਕੁ ਜੋ ਰਹੈ ॥
गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥
जो सेवक गुरु के घर में रहता है,

ਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਨ ਮਹਿ ਸਹੈ ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥
वह गुरु की आज्ञा सहर्ष मन में स्वीकार करता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਕਰਿ ਕਛੁ ਨ ਜਨਾਵੈ ॥
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
वह अपने आपको बड़ा नहीं जतलाता।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵੈ ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥
वह अपने हृदय में हमेशा ही हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है।

ਮਨੁ ਬੇਚੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
जो अपना मन सतगुरु के समक्ष समर्पित कर देता है,

ਤਿਸੁ ਸੇਵਕ ਕੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸਿ ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥
उस सेवक के सभी कार्य संवर जाते हैं।

ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਹੋਇ ਨਿਹਕਾਮੀ ॥
सेवा करत होइ निहकामी ॥
जो सेवक निष्काम भावना से गुरु की सेवा करता है,

ਤਿਸ ਕਉ ਹੋਤ ਪਰਾਪਤਿ ਸੁਆਮੀ ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
वह प्रभु को पा लेता है।

ਅਪਨੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
हे नानक ! जिस पर गुरु जी स्वयं कृपा करते हैं,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਲੇਇ ॥੨॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥
वह सेवक गुरु की शिक्षा प्राप्त करता है॥ २॥

ਬੀਸ ਬਿਸਵੇ ਗੁਰ ਕਾ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सेवक अपने गुरु का मन पूर्णतया जीत लेता है,

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੀ ਗਤਿ ਜਾਨੈ ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
वह परमेश्वर की गति को जान लेता है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
सतगुरु वही है, जिसके हृदय में हरि का नाम है।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਗੁਰ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
मैं अनेक बार अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
गुरु जी प्रत्येक पदार्थ के खजाने एवं जीवन प्रदान करने वाले हैं।

ਆਠ ਪਹਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
वह आठ प्रहर ही पारब्रह्म के रंग में मग्न रहते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਮਹਿ ਜਨੁ ਜਨ ਮਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
सच्चा गुरु परमेश्वर में लीन रहता है, और परमेश्वर अपने निष्काम भक्तों के हृदय में वास करते हैं।

ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਭਰਮੁ ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
प्रभु केवल एक ही है इसमें कोई सन्देह नहीं।

ਸਹਸ ਸਿਆਨਪ ਲਇਆ ਨ ਜਾਈਐ ॥
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
हे नानक ! हजारों ही चतुराइयों द्वारा गुरु प्राप्त नहीं होते,

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਗੁਰੁ ਬਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੩॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥
ऐसा गुरु बड़े भाग्य से ही मिलते हैं॥ ३ ॥

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਪੁਨੀਤ ॥
सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
गुरु का दर्शन फल प्रदान करने वाला है तथा दर्शन-मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है।

ਪਰਸਤ ਚਰਨ ਗਤਿ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥
उनके चरण स्पर्श करने से मनुष्य की अवस्था एवं जीवन-आचरण निर्मल हो जाते हैं।

ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਰਾਮ ਗੁਨ ਰਵੇ ॥
भेटत संगि राम गुन रवे ॥
गुरु की संगति करने से प्राणी राम की गुणस्तुति करता है

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਦਰਗਹ ਗਵੇ ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥
और पारब्रह्म के दरबार में पहुँच जाता है।

ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਬਚਨ ਕਰਨ ਆਘਾਨੇ ॥
सुनि करि बचन करन आघाने ॥
गुरु के वचन सुनने से कान तृप्त हो जाते हैं तथा

ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਆਤਮ ਪਤੀਆਨੇ ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥
मन में संतोष आ जाता है और आत्मा तृप्त हो जाती है।

ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਅਖ੍ਹਓ ਜਾ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰ ॥
रा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥
गुरु पूर्ण पुरुष हैं और उनका मंत्र सदैव अटल है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪੇਖੈ ਹੋਇ ਸੰਤ ॥
अम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥
जिसे वह अपनी अमृत दृष्टि से देखते हैं, वह संत बन जाता है।

ਗੁਣ ਬਿਅੰਤ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
गुरु के गुण अनन्त हैं, जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥
हे नानक ! ईश्वर को जो प्राणी अच्छा लगता है, उसे वह गुरु से मिला देता है। ४॥

ਜਿਹਬਾ ਏਕ ਉਸਤਤਿ ਅਨੇਕ ॥
जिहबा एक उसतति अनेक ॥
जिह्वा एक है परन्तु ईश्वर के गुण अनन्त हैं।

ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਬਿਬੇਕ ॥
सति पुरख पूरन बिबेक ॥
वह सद्पुरुष पूर्ण विवेक वाला है।

ਕਾਹੂ ਬੋਲ ਨ ਪਹੁਚਤ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥
किसी भी वचन द्वारा प्राणी ईश्वर के गुणों तक पहुँच नहीं सकता।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥
प्रभु अगम्य, अगोचर एवं पवित्र पावन है।

ਨਿਰਾਹਾਰ ਨਿਰਵੈਰ ਸੁਖਦਾਈ ॥
निराहार निरवैर सुखदाई ॥
वह स्वयं में पूर्ण है, उसे किसी साधन या पोषण की आवश्यकता नहीं होती; वह सर्वथा शांत, कल्याणकारी और वैर-रहित है।

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥
ता की कीमति किनै न पाई ॥
कोई भी प्राणी उसका मूल्यांकन नहीं कर पाया।

ਅਨਿਕ ਭਗਤ ਬੰਦਨ ਨਿਤ ਕਰਹਿ ॥
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥
अनेकों भक्त नित्य उसकी वन्दना करते रहते हैं।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਸਿਮਰਹਿ ॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥
उसके चरण कमलों को वह अपने हृदय में स्मरण करते हैं।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ॥
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
हे नानक ! अपने सतगुरु पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ,

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜਪਨੇ ॥੫॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥
जिनकी कृपा से वह ऐसे प्रभु का नाम-स्मरण करता है॥ ५ ॥

ਇਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
यह हरि रस किसी विरले पुरुष को ही प्राप्त होता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਅਮਰੁ ਸੋ ਹੋਇ ॥
अम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥
जो इस अमृत का पान करता है, वह अमर हो जाता है।

ਉਸੁ ਪੁਰਖ ਕਾ ਨਾਹੀ ਕਦੇ ਬਿਨਾਸ ॥
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
उस पुरुष का कभी नाश नहीं होता,

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਨਤਾਸ ॥
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥
जिसके हृदय में गुणों का भण्डार प्रकट हो जाता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲੇਇ ॥
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥
आठ पहर ही वह हरि का नाम लेता है और

ਸਚੁ ਉਪਦੇਸੁ ਸੇਵਕ ਕਉ ਦੇਇ ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥
अपने सेवक को सच्चा उपदेश प्रदान करता है।

ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਲੇਪੁ ॥
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥
मोह-माया के साथ उसका कभी मेल नहीं होता।

ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ॥
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥
वह अपने हृदय में एक हरि-परमेश्वर को ही बसाता है।

ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਕ ਪਰਗਾਸੇ ॥
अंधकार दीपक परगासे ॥
अज्ञानता रूपी अन्धेरे में उसके लिए नाम रूपी दीपक रौशन हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਮੋਹ ਦੁਖ ਤਹ ਤੇ ਨਾਸੇ ॥੬॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥
हे नानक ! दुविधा, मोह एवं दुःख उससे दूर भाग जाते हैं।॥ ६॥

ਤਪਤਿ ਮਾਹਿ ਠਾਢਿ ਵਰਤਾਈ ॥
तपति माहि ठाढि वरताई ॥
गुरु के पूर्ण उपदेश ने मोह-माया की अग्नि में शीतलता प्रविष्ट करा दी है,

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ਭਾਈ ॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥
प्रसन्नता उत्पन्न हो गई है व दुःख दूर हो गया है

ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੇ ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸੇ ॥
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
जन्म-मरण का भय मिट गया है।

ਸਾਧੂ ਕੇ ਪੂਰਨ ਉਪਦੇਸੇ ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥
गुरु के पूर्ण उपदेश से

ਭਉ ਚੂਕਾ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਬਸੇ ॥
भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥
भय नाश हो गया है और निडर रहते हैं।

ਸਗਲ ਬਿਆਧਿ ਮਨ ਤੇ ਖੈ ਨਸੇ ॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥
समस्त रोग नष्ट होकर मन से लुप्त हो गए हैं।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥
जिस गुरु के थे, उसने कृपा की है,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥
सत्संगति में यह मुरारी के नाम का जाप करता है।

ਥਿਤਿ ਪਾਈ ਚੂਕੇ ਭ੍ਰਮ ਗਵਨ ॥
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥
भय एवं दुविधा मिट गए हैं।

ਸੁਨਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸ੍ਰਵਨ ॥੭॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर की महिमा कानों से सुनकर शांति मिल गई है ॥७॥

ਨਿਰਗੁਨੁ ਆਪਿ ਸਰਗੁਨੁ ਭੀ ਓਹੀ ॥
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥
वह स्वयं निर्गुण स्वामी है और वह ही सर्गुण है,

ਕਲਾ ਧਾਰਿ ਜਿਨਿ ਸਗਲੀ ਮੋਹੀ ॥
कला धारि जिनि सगली मोही ॥
जिसने अपनी कला (शक्ति) प्रकट करके समूचे विश्व को मुग्ध किया हुआ है।

ਅਪਨੇ ਚਰਿਤ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਬਨਾਏ ॥
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥
अपने कौतुक प्रभु ने स्वयं ही रचे हैं।

ਅਪੁਨੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਏ ॥
अपुनी कीमति आपे पाए ॥
अपना मूल्यांकन वह स्वयं ही जानता है।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥
ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
सबके भीतर वह अकाल पुरुष स्वयं ही विद्यमान है।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਰਵਿਆ ਰੂਪ ਰੰਗ ॥
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥
वह सभी रूपों और रंगों में व्याप्त है।

ਭਏ ਪ੍ਰਗਾਸ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗ ॥
भए प्रगास साध कै संग ॥
संतों की संगति करने से यह आध्यात्मिक ज्ञान प्रगट हो जाता है।

ਰਚਿ ਰਚਨਾ ਅਪਨੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥
रचि रचना अपनी कल धारी ॥
सृष्टि की रचना करके प्रभु ने उसमें अपनी शक्ति का संचार कर दिया है।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੮॥੧੮॥
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥
हे नानक ! मैं अनेक बार उस (प्रभु) पर बलिहारी जाता हूँ ॥८॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਬਿਖਿਆ ਸਗਲੀ ਛਾਰੁ ॥
साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥
हे प्राणी ! भगवान् के भजन के अतिरिक्त कुछ भी साथ नहीं जाता, सभी विषय-विकार धूल समान हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਾਵਨਾ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਧਨੁ ਸਾਰੁ ॥੧॥
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर के नाम-स्मरण की कमाई करना ही अति उत्तम धन है॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
अष्टपदी॥
अष्टपदी ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
संत जना मिलि करहु बीचारु ॥
संतजनों की संगति में मिलकर यही विचार करो।

ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮ ਆਧਾਰੁ ॥
एकु सिमरि नाम आधारु ॥
एक ईश्वर को स्मरण करो और नाम का सहारा लो।

ਅਵਰਿ ਉਪਾਵ ਸਭਿ ਮੀਤ ਬਿਸਾਰਹੁ ॥
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥
हे मेरे मित्र ! दूसरे सभी प्रयास भुला दो।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਿਦ ਮਹਿ ਉਰਿ ਧਾਰਹੁ ॥
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥
ईश्वर के चरण कमल अपने मन एवं हृदय में बसाओ।

ਕਰਨ ਕਾਰਨ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਮਰਥੁ ॥
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥
वह ईश्वर समस्त कार्य करने व जीव से करवाने में सामर्थ्य रखते हैं।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਗਹਹੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਵਥੁ ॥
द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥
ईश्वर के नाम रूपी वस्तु को दृढ़ करके पकड़ लो।

ਇਹੁ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਹੋਵਹੁ ਭਗਵੰਤ ॥
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥
इस (प्रभु के नाम रूपी) धन को एकत्रित करो और भाग्यशाली बन जाओ।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ॥
संत जना का निरमल मंत ॥
संतजनों का मंत्र पवित्र-पावन है।

ਏਕ ਆਸ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
एक आस राखहु मन माहि ॥
एक ईश्वर की आशा अपने मन में रखो !

ਸਰਬ ਰੋਗ ਨਾਨਕ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥
हे नानक ! इस तरह तेरे समस्त रोग मिट जाएँगे।॥ १ ॥

ਜਿਸੁ ਧਨ ਕਉ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਉਠਿ ਧਾਵਹਿ ॥
जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥
हे मित्र ! जिस धन हेतु तू चारों ओर भागता-फिरता है,

ਸੋ ਧਨੁ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਤੇ ਪਾਵਹਿ ॥
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
वह धन तुझे ईश्वर की सेवा से प्राप्त होगा।

ਜਿਸੁ ਸੁਖ ਕਉ ਨਿਤ ਬਾਛਹਿ ਮੀਤ ॥
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
हे मेरे मित्र ! जिस सुख की तू नित्य इच्छा करता है,

ਸੋ ਸੁਖੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਰੀਤਿ ॥
सो सुखु साधू संगि परीति ॥
वह सुख तुझे संतों की संगति में प्रेम करने से मिलेगा।

ਜਿਸੁ ਸੋਭਾ ਕਉ ਕਰਹਿ ਭਲੀ ਕਰਨੀ ॥
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
जिस शोभा के लिए तू शुभ कर्म करता है,

ਸਾ ਸੋਭਾ ਭਜੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਨੀ ॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
वह शोभा भगवान् की शरण में जाने से मिलती है।

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵੀ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
जो रोग अनेक प्रयासों से नहीं मिटता,

ਰੋਗੁ ਮਿਟੈ ਹਰਿ ਅਵਖਧੁ ਲਾਇ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
वह रोग हरि नाम रूपी औषधि लेने से मिट जाता है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਮਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥
सभी खजानों में ईश्वर का नाम सर्वश्रेष्ठ खजाना है।

ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹਿ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥
हे नानक ! उसके नाम का जाप कर, ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाओगे ॥२॥

ਮਨੁ ਪਰਬੋਧਹੁ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥
मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
अपने मन को भगवान् के नाम द्वारा जगाओ।

ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਤ ਆਵੈ ਠਾਇ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥
दसों दिशाओं में भटकता हुआ यह मन इस तरह अपने गृह आ जाएगा।

ਤਾ ਕਉ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥
उसे कोई संकट नहीं आता

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਸੈ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥
जिसके हृदय में वह ईश्वर बसता है,

ਕਲਿ ਤਾਤੀ ਠਾਂਢਾ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥
यह कलियुग गर्म (अग्नि) है और हरि का नाम शीतल है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖ ਪਾਉ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥
उसे सदैव स्मरण करो एवं सुख पाओ।

ਭਉ ਬਿਨਸੈ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਆਸ ॥
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
नाम-सिमरन से भय नाश हो जाता है और आशा पूर्ण हो जाती है।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸ ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
प्रभु की भक्ति के साथ प्रेम करने से आत्मा उज्ज्वल हो जाती है।

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਇ ਬਸੈ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
जो नाम-स्मरण करता है, उसके हृदय-घर में अनश्वर प्रभु आ बसते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਾਟੀ ਜਮ ਫਾਸੀ ॥੩॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥
हे नानक ! (नाम का जाप करने से) यम की फाँसी कट जाती है॥ ३॥

ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ਕਹੈ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ॥
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
वो ही सच्चा मनुष्य है, जो सार-तत्व के स्मरण का उपदेश देता है।

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਸੋ ਕਾਚੋ ਕਾਚਾ ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
वह बिल्कुल कच्चा (झूठा) है, जो आवागमन (जन्म-मरण के चक्र) में पड़ता है।

ਆਵਾ ਗਵਨੁ ਮਿਟੈ ਪ੍ਰਭ ਸੇਵ ॥
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥
प्रभु की सेवा से आवागमन मिट जाता है।

ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਸਰਨਿ ਗੁਰਦੇਵ ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
अपना अहंकार त्याग दे और गुरुदेव की शरण ले।

ਇਉ ਰਤਨ ਜਨਮ ਕਾ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
इस तरह अनमोल जीवन का उद्धार हो जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਆਧਾਰੁ ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
हरि-परमेश्वर की आराधना कर, जो तेरे प्राणों का आधार है।

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਨ ਛੂਟਨਹਾਰੇ ॥
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
अनेक उपाय करने से छुटकारा नहीं होता।

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥
चाहे स्मृतियों, शास्त्रों व वेदों का विचार करके देख लो।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇ ॥
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मन लगाकर केवल भगवान् की भक्ति ही करो।

ਮਨਿ ਬੰਛਤ ਨਾਨਕ ਫਲ ਪਾਇ ॥੪॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥
हे नानक ! (जो भक्ति करता है) उसे मनोवांछित फल मिलता है॥४॥

ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਸਿ ਤੇਰੈ ਧਨਾ ॥
संगि न चालसि तेरै धना ॥
धन-दौलत तेरे साथ नहीं जाने वाला,

ਤੂੰ ਕਿਆ ਲਪਟਾਵਹਿ ਮੂਰਖ ਮਨਾ ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
हे मूर्ख मन ! फिर तू क्यों इससे लिपटा हुआ है।

ਸੁਤ ਮੀਤ ਕੁਟੰਬ ਅਰੁ ਬਨਿਤਾ ॥
सुत मीत कुट्मब अरु बनिता ॥
पुत्र, मित्र, परिवार एवं पत्नी,

ਇਨ ਤੇ ਕਹਹੁ ਤੁਮ ਕਵਨ ਸਨਾਥਾ ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
इनमें से तू बता कौन तेरा सहायक है ?

ਰਾਜ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਬਿਸਥਾਰ ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
राज्य, भोग एवं धन-दौलत का विस्तार

ਇਨ ਤੇ ਕਹਹੁ ਕਵਨ ਛੁਟਕਾਰ ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
इनमें से बता कौन कब बचा है ?

ਅਸੁ ਹਸਤੀ ਰਥ ਅਸਵਾਰੀ ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
अश्व, हाथी एवं रथों की सवारी करनी

ਝੂਠਾ ਡੰਫੁ ਝੂਠੁ ਪਾਸਾਰੀ ॥
झूठा ड्मफु झूठु पासारी ॥
यह सब झूठा आडम्बर है।

ਜਿਨਿ ਦੀਏ ਤਿਸੁ ਬੁਝੈ ਨ ਬਿਗਾਨਾ ॥
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥
मूर्ख पुरुष उस परमात्मा को नहीं जानता, जिसने ये समस्त पदार्थ दिए हैं।

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਨਾਨਕ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੫॥
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥
हे नानक ! नाम को भुला कर प्राणी अन्त में पश्चाताप करता है॥ ५ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਤੂੰ ਲੇਹਿ ਇਆਨੇ ॥
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥
हे मूर्ख मनुष्य ! तू गुरु की शिक्षा ले।

ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ਬਹੁ ਡੂਬੇ ਸਿਆਨੇ ॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
प्रभु की भक्ति के बिना बड़े बुद्धिमान लोग भी डूब गए हैं।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਮਨ ਮੀਤ ॥
हरि की भगति करहु मन मीत ॥
हे मेरे मित्र ! अपने मन में भगवान् की भक्ति कर,

ਨਿਰਮਲ ਹੋਇ ਤੁਮ੍ਹਾਰੋ ਚੀਤ ॥
निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥
उससे तेरा मन निर्मल हो जाएगा।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
प्रभु के चरण कमल अपने हृदय में बसा,

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਜਾਹਿ ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥
तेरे जन्म-जन्मांतर के पाप दूर हो जाएँगे।

ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
स्वयं ईश्वर के नाम का जाप कर और दूसरों से भी नाम का जाप करवा।

ਸੁਨਤ ਕਹਤ ਰਹਤ ਗਤਿ ਪਾਵਹੁ ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
ईश्वर का नाम सुनने, उच्चारण करने और धार्मिक जीवन जीने से व्यक्ति को ऊँची आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त होती है।

ਸਾਰ ਭੂਤ ਸਤਿ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥
सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सारभूत हरि का सत्य नाम है।

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਨਾਨਕ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੬॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥
नानक ! सहज स्वभाव से प्रभु की गुणस्तुति कर ॥ ६॥

ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤੇਰੀ ਉਤਰਸਿ ਮੈਲੁ ॥
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
(हे जीव !) ईश्वर के गुण गाते हुए तेरी पापों की मैल उतर जाएगी

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਫੈਲੁ ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
एवं अहंकार-रूपी विष का विस्तार भी मिट जाएगा।

ਹੋਹਿ ਅਚਿੰਤੁ ਬਸੈ ਸੁਖ ਨਾਲਿ ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
वह चिन्तामुक्त हो जाएगा और सुखपूर्वक बसेगा

ਸਾਸਿ ਗ੍ਰਾਸਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥
जो अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से हरि के नाम की आराधना करेगा ।

ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਮਨਾ ॥
छाडि सिआनप सगली मना ॥
हे मन ! अपनी सारी चतुराई त्याग दे।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਵਹਿ ਸਚੁ ਧਨਾ ॥
साधसंगि पावहि सचु धना ॥
साध संगत करने से सच्चा धन मिल जाएगा।

ਹਰਿ ਪੂੰਜੀ ਸੰਚਿ ਕਰਹੁ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईश्वर के नाम की पूँजी संचित कर और उसका ही व्यापार कर।

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਦਰਗਹ ਜੈਕਾਰੁ ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥
इस तरह इस जीवन में सुख मिलेगा और प्रभु के दरबार में सत्कार होगा।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਦੇਖੁ ॥
सरब निरंतरि एको देखु ॥
वह एक ईश्वर को सर्वत्र देखता है

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ॥੭॥
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥
हे नानक ! जिसके माथे पर भाग्य विद्यमान है। ॥ ७ ॥

ਏਕੋ ਜਪਿ ਏਕੋ ਸਾਲਾਹਿ ॥
एको जपि एको सालाहि ॥
एक ईश्वर के नाम का जाप कर और केवल उसकी ही सराहना कर।

ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੋ ਮਨ ਆਹਿ ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एक ईश्वर का चिन्तन कर और केवल उसे ही अपने हृदय में बसा।

ਏਕਸ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ਅਨੰਤ ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
उस अनन्त एक ईश्वर के गुण गायन कर।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਜਾਪਿ ਏਕ ਭਗਵੰਤ ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
मन एवं तन से एक भगवान् का जाप कर।

ਏਕੋ ਏਕੁ ਏਕੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
एकमात्र ईश्वर स्वयं में अद्वितीय और एक ही है।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਆਪਿ ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
पूर्ण ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है।

ਅਨਿਕ ਬਿਸਥਾਰ ਏਕ ਤੇ ਭਏ ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥
सृष्टि के अनेक विस्तार एक ही से उत्पन्न हुए हैं।

ਏਕੁ ਅਰਾਧਿ ਪਰਾਛਤ ਗਏ ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥
भगवान् की आराधना करने से पाप मिट जाते हैं।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਏਕੁ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਤਾ ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
मेरा मन एवं शरीर एक प्रभु में मग्न हुए हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਜਾਤਾ ॥੮॥੧੯॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से उसने एक ईश्वर को ही जाना है ॥८॥१९॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ਪਰਿਆ ਤਉ ਸਰਨਾਇ ॥
फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
हे पूज्य प्रभु ! मैं भटक-भटक कर आपकी ही शरण में आया हूँ।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਅਪਨੀ ਭਗਤੀ ਲਾਇ ॥੧॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥
हे प्रभु ! नानक एक यही विनती करता है कि मुझे अपनी भक्ति में लगा ले ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਜਾਚਕ ਜਨੁ ਜਾਚੈ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
हे प्रभु ! मैं भिखारी, आपके नाम का दान माँगता हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥
हे हरि ! कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਮਾਗਉ ਧੂਰਿ ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥
मैं तो साधुओं के चरणों की धूली ही मांगता हूँ।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
हे पारब्रह्म ! मेरी श्रद्धा पूर्ण कीजिए।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
मैं हमेशा ही प्रभु का गुणानुवाद करता रहूँ।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਹਿ ਧਿਆਵਉ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
हे प्रभु ! प्रत्येक श्वास से मैं आपकी ही आराधना करूँ।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
प्रभु के चरणों से मेरा प्रेम पड़ा हुआ है।

ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
मैं हमेशा ही प्रभु की भक्ति करता रहूँ।

ਏਕ ਓਟ ਏਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥
एक ओट एको आधारु ॥
हे भगवान् ! आप ही मेरी एक ओट तथा एक सहारा हो।

ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਸਾਰੁ ॥੧॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥
हे मेरे प्रभु ! नानक आपके सर्वोत्तम नाम की याचना करता है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥
प्रभु की करुणा-दृष्टि से परम सुख उपलब्ध होता है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਬਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही हरि-रस को पाता है।

ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੇ ॥
जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥
जो इसे चखते हैं, वे जीव तृप्त हो जाते हैं।

ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਨਹੀ ਡੋਲਾਨੇ ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥
वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं और कभी (माया में) डगमगाते नहीं।

ਸੁਭਰ ਭਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਰੰਗਿ ॥
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
वह प्रभु के प्रेम की मिठास एवं आनंद से पूर्णता भरे रहते हैं।

ਉਪਜੈ ਚਾਉ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥
साधुओं की संगति में उनके मन में आत्मिक चाव उत्पन्न हो जाता है।

ਪਰੇ ਸਰਨਿ ਆਨ ਸਭ ਤਿਆਗਿ ॥
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
अन्य सब कुछ त्याग कर वह प्रभु की शरण लेते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਅਨਦਿਨੁ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥
उनका हृदय उज्ज्वल हो जाता है और दिन-रात वह अपनी वृती ईश्वर में लगाते हैं।

ਬਡਭਾਗੀ ਜਪਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
भाग्यशाली पुरुषों ने ही प्रभु का जाप किया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥
हे नानक ! जो पुरुष प्रभु के नाम में मग्न रहते हैं, वे सुख पाते हैं।॥ २ ॥

ਸੇਵਕ ਕੀ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀ ਭਈ ॥
सेवक की मनसा पूरी भई ॥
सेवक की मनोकामना पूर्ण हो गई है,

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਮਤਿ ਲਈ ॥
सतिगुर ते निरमल मति लई ॥
जबसे सतगुरु से निर्मल उपदेश लिया है ।

ਜਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇਓ ਦਇਆਲੁ ॥
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥
अपने सेवक पर प्रभु कृपालु हो गया है।

ਸੇਵਕੁ ਕੀਨੋ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲੁ ॥
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥
अपने सेवक को हमेशा के लिए उसने कृतार्थ कर दिया है।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮੁਕਤਿ ਜਨੁ ਭਇਆ ॥
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥
सेवक के (माया के) बन्धन कट गए हैं और उसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੂਖੁ ਭ੍ਰਮੁ ਗਇਆ ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥
उसका जन्म-मरण, दुःख एवं दुविधा दूर हो गए हैं।

ਇਛ ਪੁਨੀ ਸਰਧਾ ਸਭ ਪੂਰੀ ॥
इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥
उसकी इच्छा पूर्ण हो गई है और श्रद्धा भी पूरी हो गई है।

ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦ ਸੰਗਿ ਹਜੂਰੀ ॥
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥
भगवान् हमेशा साथ बस रहा है।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨਿ ਲੀਆ ਮਿਲਾਇ ॥
जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥
जिसका था, उसने अपने साथ मिला लिया है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
नानक भगती नामि समाइ ॥३॥
हे नानक ! प्रभु की भक्ति से सेवक नाम में लीन हो गया है।॥ ३ ॥

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਘਾਲ ਨ ਭਾਨੈ ॥
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥
उस भगवान् को क्यों भुलाएँ, जो मनुष्य की सेवा-भक्ति की उपेक्षा नहीं करता।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਕੀਆ ਜਾਨੈ ॥
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥
उस भगवान् को क्यों भुलाएँ, जो तेरे किए को जानता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੀਆ ॥
सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥
वह ईश्वर क्यों विस्मृत हो, जिसने हमें सब कुछ दिया है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਜੀਵਨ ਜੀਆ ॥
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥
यह परमात्मा क्यों विस्मृत हो, जो जीवों के जीवन का आधार है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ॥
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥
उस अकालपुरुष को क्यों भुलाएँ, जो गर्भ की अग्नि में हमारी रक्षा करता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਬਿਰਲਾ ਲਾਖੈ ॥
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥
गुरु की कृपा से कोई दुर्लभ पुरुष ही इसको देखता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਬਿਖੁ ਤੇ ਕਾਢੈ ॥
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥
उस ईश्वर को क्यों भुलाएँ, जो मनुष्य को पाप से बचाता है

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਟੂਟਾ ਗਾਢੈ ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥
और स्वयं से जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़े हुए को अपने साथ मिला लेता है ?

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤਤੁ ਇਹੈ ਬੁਝਾਇਆ ॥
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे यह वास्तविकता समझाई है।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧਿਆਇਆ ॥੪॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥
हे नानक ! उसने तो अपने प्रभु का ही ध्यान किया है ॥४॥

ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਕਰਹੁ ਇਹੁ ਕਾਮੁ ॥
साजन संत करहु इहु कामु ॥
हे सज्जन, संतजनों ! यह कार्य करो।

ਆਨ ਤਿਆਗਿ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥
अन्य सब कुछ छोड़कर भगवान् के नाम का जाप करो।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖ ਪਾਵਹੁ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥
भगवान् के नाम का सिमरन करके सुख पाओ।

ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥
आप भी नाम का जाप करो और दूसरों से भी नाम का जाप करवाओ।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਤਰੀਐ ਸੰਸਾਰੁ ॥
भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
प्रभु की भक्ति द्वारा यह संसार सागर पार किया जाता है।

ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥
भक्ति के बिना यह शरीर भस्म हो जाएगा।

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸੂਖ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ॥
सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥
प्रभु का नाम सर्व कल्याण एवं सुखों का खजाना है,

ਬੂਡਤ ਜਾਤ ਪਾਏ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥
डूबता हुआ जीव भी इसमें सुख पा लेता है।

ਸਗਲ ਦੂਖ ਕਾ ਹੋਵਤ ਨਾਸੁ ॥
सगल दूख का होवत नासु ॥
समस्त दुःखों का नाश हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਨਤਾਸੁ ॥੫॥
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥
हे नानक ! गुणों के भण्डार के नाम का जाप करते रहो ॥ ५॥

ਉਪਜੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਚਾਉ ॥
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
भगवान् की प्रीति व प्रेम रस का उत्साह उत्पन्न हुआ है।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਇਹੀ ਸੁਆਉ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥
मन-तन के भीतर यही स्वाद भर गया है।

ਨੇਤ੍ਰਹੁ ਪੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥
अपने नेत्रों से प्रभु के दर्शन करके मैं सुख पाता हूँ।

ਮਨੁ ਬਿਗਸੈ ਸਾਧ ਚਰਨ ਧੋਇ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥
संतों के चरण धोकर मेरा मन प्रसन्न हो गया है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰੰਗੁ ॥
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥
भक्तजनों की आत्मा एवं शरीर में प्रभु की प्रीति विद्यमान है।

ਬਿਰਲਾ ਕੋਊ ਪਾਵੈ ਸੰਗੁ ॥
बिरला कोऊ पावै संगु ॥
कोई विरला पुरुष ही उनकी संगति प्राप्त करता है।

ਏਕ ਬਸਤੁ ਦੀਜੈ ਕਰਿ ਮਇਆ ॥
एक बसतु दीजै करि मइआ ॥
हे ईश्वर ! दया करके हमें एक नाम-वस्तु प्रदान कीजिए (ताकि)

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਲਇਆ ॥
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥
गुरु की दया से आपका नाम जप सकें।

ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
ता की उपमा कही न जाइ ॥
उसकी उपमा वर्णन नहीं की जा सकती

ਨਾਨਕ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥
हे नानक ! ईश्वर तो सर्वव्यापक है ॥ ६॥

ਪ੍ਰਭ ਬਖਸੰਦ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥
प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥
परमात्मा क्षमाशील एवं दीनदयाल है।

ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥
भगति वछल सदा किरपाल ॥
वह भक्तवत्सल एवं सदैव कृपालु है।

ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ॥
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥
वह गोविन्द, गोपाल अनाथों का नाथ है।

ਸਰਬ ਘਟਾ ਕਰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब घटा करत प्रतिपाल ॥
वह समस्त जीव-जन्तुओं का पोषण करता है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾਰ ॥
आदि पुरख कारण करतार ॥
वह आदिपुरुष एवं सृष्टि का रचयिता है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥
भगत जना के प्रान अधार ॥
वह भक्तजनों के प्राणों का आधार है।

ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਸੁ ਹੋਇ ਪੁਨੀਤ ॥
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥
जो कोई भी उसका जाप करता है, वह पवित्र-पावन हो जाता है।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਲਾਵੈ ਮਨ ਹੀਤ ॥
भगति भाइ लावै मन हीत ॥
वह अपने मन का प्रेम ईश्वर की भक्ति पर केंद्रित करता है।

ਹਮ ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਨੀਚ ਅਜਾਨ ॥
हम निरगुनीआर नीच अजान ॥
हम गुणविहीन, नीच व मूर्ख है,

ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਸਰਨਿ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨ ॥੭॥
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥
नानक का कथन है कि हे सर्वशक्तिमान भगवान् ! आपकी शरण में आए हैं।॥ ७॥

ਸਰਬ ਬੈਕੁੰਠ ਮੁਕਤਿ ਮੋਖ ਪਾਏ ॥
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥
उसने सभी स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त कर लिए हैं,

ਏਕ ਨਿਮਖ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥
जिस जीव ने एक क्षण भर के लिए भी भगवान् की महिमा-स्तुति की है।

ਅਨਿਕ ਰਾਜ ਭੋਗ ਬਡਿਆਈ ॥
अनिक राज भोग बडिआई ॥
वह अनेक राज्य, भोग-पदार्थ एवं उपलब्धियां प्राप्त करता है

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਕਥਾ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥
जिसके मन को हरि के नाम की कथा भली लगती है।

ਬਹੁ ਭੋਜਨ ਕਾਪਰ ਸੰਗੀਤ ॥
बहु भोजन कापर संगीत ॥
वह अनेक प्रकार के भोजन, वस्त्र एवं संगीत का आनंद प्राप्त करता है

ਰਸਨਾ ਜਪਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥
रसना जपती हरि हरि नीत ॥
जिसकी रसना सदैव हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करती रहती है।

ਭਲੀ ਸੁ ਕਰਨੀ ਸੋਭਾ ਧਨਵੰਤ ॥
भली सु करनी सोभा धनवंत ॥
उसके कर्म शुभ हैं, उसी को शोभा मिलती है और वही धनवान है

ਹਿਰਦੈ ਬਸੇ ਪੂਰਨ ਗੁਰ ਮੰਤ ॥
हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥
जिसके हृदय में पूर्ण गुरु का मंत्र बसता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹੁ ਨਿਵਾਸ ॥
साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥
हे ईश्वर ! अपने संतों की संगति में स्थान दीजिए।

ਸਰਬ ਸੂਖ ਨਾਨਕ ਪਰਗਾਸ ॥੮॥੨੦॥
सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥
हे नानक ! सत्संगति में रहने से सर्व सुखों का आलोक हो जाता है ॥८॥२०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸਰਗੁਨ ਨਿਰਗੁਨ ਨਿਰੰਕਾਰ ਸੁੰਨ ਸਮਾਧੀ ਆਪਿ ॥
सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥
निरंकार प्रभु स्वयं ही सर्गुण एवं निर्गुण है। वह स्वयं ही शून्य समाधि में रहता है।

ਆਪਨ ਕੀਆ ਨਾਨਕਾ ਆਪੇ ਹੀ ਫਿਰਿ ਜਾਪਿ ॥੧॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥
हे नानक ! निरंकार प्रभु ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और फिर स्वयं ही (जीवों द्वारा) जाप करता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਬ ਅਕਾਰੁ ਇਹੁ ਕਛੁ ਨ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
जब इस सृष्टि का प्रसार कुछ भी दिखाई नहीं देता था,

ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਤਬ ਕਹ ਤੇ ਹੋਤਾ ॥
पाप पुंन तब कह ते होता ॥
तब पाप अथवा पुण्य किस (प्राणी) से हो सकता था ?

ਜਬ ਧਾਰੀ ਆਪਨ ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ॥
जब धारी आपन सुंन समाधि ॥
जब परमात्मा स्वयं शून्य समाधि में था,

ਤਬ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਿਸੁ ਸੰਗਿ ਕਮਾਤਿ ॥
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
तब वैर-विरोध कोई किससे करता था।

ਜਬ ਇਸ ਕਾ ਬਰਨੁ ਚਿਹਨੁ ਨ ਜਾਪਤ ॥
जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥
जब (दुनिया का) कोई वर्ण अथवा चिन्ह दिखाई नहीं देता था,

ਤਬ ਹਰਖ ਸੋਗ ਕਹੁ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥
बताओ तब हर्ष एवं शोक किसे स्पर्श कर सकते थे।

ਜਬ ਆਪਨ ਆਪ ਆਪਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥
जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
जब पारब्रह्म स्वयं ही सब कुछ था,

ਤਬ ਮੋਹ ਕਹਾ ਕਿਸੁ ਹੋਵਤ ਭਰਮ ॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥
तब मोह कहाँ हो सकता था और दुविधा किसे हो सकती थी ?

ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਵਰਤੀਜਾ ॥
आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
हे नानक ! (सृष्टि रूपी) अपनी लीला अकाल पुरुष ने स्वयं ही रची है,

ਨਾਨਕ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ॥੧॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥
इसके अतिरिक्त दूसरा कोई रचयिता नहीं ॥ १॥

ਜਬ ਹੋਵਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇਵਲ ਧਨੀ ॥
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
जब जगत् का स्वामी परमात्मा केवल स्वयं ही था,

ਤਬ ਬੰਧ ਮੁਕਤਿ ਕਹੁ ਕਿਸ ਕਉ ਗਨੀ ॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
तब बताओ किसे बन्धनयुक्त एवं किसे बन्धनमुक्त गिना जाता था ?

ਜਬ ਏਕਹਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
जब केवल अगम्य एवं अपार हरि ही था,

ਤਬ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਕਹੁ ਕਉਨ ਅਉਤਾਰ ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
तब बताओ, नरकों तथा स्वर्गों में आने वाले कौन से प्राणी थे।

ਜਬ ਨਿਰਗੁਨ ਪ੍ਰਭ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
जब निर्गुण परमात्मा अपने सहज स्वभाव सहित था,

ਤਬ ਸਿਵ ਸਕਤਿ ਕਹਹੁ ਕਿਤੁ ਠਾਇ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
फिर आत्मा (शिव) कहाँ थी और शक्ति कहाँ थी?

ਜਬ ਆਪਹਿ ਆਪਿ ਅਪਨੀ ਜੋਤਿ ਧਰੈ ॥
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
जब परमात्मा स्वयं ही अपनी ज्योति प्रज्वलित किए बैठा था,

ਤਬ ਕਵਨ ਨਿਡਰੁ ਕਵਨ ਕਤ ਡਰੈ ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
तब कौन निडर था और कौन किससे डरता था ?

ਆਪਨ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
हे नानक ! परमात्मा अगम्य एवं अपार है।

ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥੨॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥
अपने कौतुक स्वयं ही करने वाला है ॥२॥

ਅਬਿਨਾਸੀ ਸੁਖ ਆਪਨ ਆਸਨ ॥
अबिनासी सुख आपन आसन ॥
जब अमर परमात्मा अपने मौन और ध्यान में लीन थे

ਤਹ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਹੁ ਕਹਾ ਬਿਨਾਸਨ ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥
बताओ तब जन्म-मरण और विनाश (काल) कहाँ थे?

ਜਬ ਪੂਰਨ ਕਰਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
जब पूर्ण अकाल पुरुष कर्तार ही था,

ਤਬ ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਕਹਹੁ ਕਿਸੁ ਹੋਇ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥
बताओ तब मृत्यु का भय किसे हो सकता था ?

ਜਬ ਅਬਿਗਤ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਏਕਾ ॥
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
जब केवल अलक्ष्य एवं अगोचर परमात्मा ही था,

ਤਬ ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤ ਕਿਸੁ ਪੂਛਤ ਲੇਖਾ ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥
तब चित्रगुप्त किस से लेखा पूछते थे ?

ਜਬ ਨਾਥ ਨਿਰੰਜਨ ਅਗੋਚਰ ਅਗਾਧੇ ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
जब केवल निरंजन, अगोचर एवं अथाह नाथ (परमात्मा) ही था,

ਤਬ ਕਉਨ ਛੁਟੇ ਕਉਨ ਬੰਧਨ ਬਾਧੇ ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
तब कौन माया के बन्धन से मुक्त थे और कौन बन्धनों में फंसे हुए थे ?

ਆਪਨ ਆਪ ਆਪ ਹੀ ਅਚਰਜਾ ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
परमात्मा सब कुछ अपने आप से ही है, वह स्वयं ही अद्‌भुत है।

ਨਾਨਕ ਆਪਨ ਰੂਪ ਆਪ ਹੀ ਉਪਰਜਾ ॥੩॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥
हे नानक ! अपना रूप उसने स्वयं ही उत्पन्न किया है ॥३॥

ਜਹ ਨਿਰਮਲ ਪੁਰਖੁ ਪੁਰਖ ਪਤਿ ਹੋਤਾ ॥
जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥
जब निष्पाप जीव ही मानवता का अधिपति था।

ਤਹ ਬਿਨੁ ਮੈਲੁ ਕਹਹੁ ਕਿਆ ਧੋਤਾ ॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥
और वहाँ कोई मैल नहीं थी, बताओ ! तब वहाँ स्वच्छ करने को क्या था?

ਜਹ ਨਿਰੰਜਨ ਨਿਰੰਕਾਰ ਨਿਰਬਾਨ ॥
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥
जहाँ केवल निरंजन, निरंकार एवं निर्लिप्त परमात्मा ही था,

ਤਹ ਕਉਨ ਕਉ ਮਾਨ ਕਉਨ ਅਭਿਮਾਨ ॥
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥
वहाँ किसका मान एवं किसका अभिमान होता था ?

ਜਹ ਸਰੂਪ ਕੇਵਲ ਜਗਦੀਸ ॥
जह सरूप केवल जगदीस ॥
जहाँ केवल सृष्टि के स्वामी जगदीश का ही रूप था,

ਤਹ ਛਲ ਛਿਦ੍ਰ ਲਗਤ ਕਹੁ ਕੀਸ ॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥
बताओ, वहाँ छल-कपट एवं पाप किसको दुःखी करते थे ?

ਜਹ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੀ ਜੋਤਿ ਸੰਗਿ ਸਮਾਵੈ ॥
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥
जहाँ ज्योति स्वरूप अपनी ज्योति से ही समाया हुआ था,

ਤਹ ਕਿਸਹਿ ਭੂਖ ਕਵਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥
तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥
तब वहाँ किसे भूख लगती थी और किसे तृप्ति आती थी ?

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
करन करावन करनैहारु ॥
सृष्टि का रचयिता सृजनहार स्वयं ही सबकुछ करने वाला और प्राणियों से कराने वाला है।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰੁ ॥੪॥
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥
हे नानक ! दुनिया का निर्माण करने वाले परमात्मा का कोई अन्त नहीं है ॥४॥

ਜਬ ਅਪਨੀ ਸੋਭਾ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਬਨਾਈ ॥
जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥
जब परमात्मा ने अपनी शोभा अपने साथ ही बनाई थी,

ਤਬ ਕਵਨ ਮਾਇ ਬਾਪ ਮਿਤ੍ਰੁ ਸੁਤ ਭਾਈ ॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥
तब माता-पिता, मित्र, पुत्र एवं भाई कौन थे ?

ਜਹ ਸਰਬ ਕਲਾ ਆਪਹਿ ਪਰਬੀਨ ॥
जह सरब कला आपहि परबीन ॥
जब ईश्वर स्वयं सभी शक्तियों में सर्वोपरि थे,

ਤਹ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਕਹਾ ਕੋਊ ਚੀਨ ॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥
तब वेद तथा धार्मिक पुस्तकों को कहाँ कोई पहचानता था।

ਜਬ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ ਉਰਿ ਧਾਰੈ ॥
जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥
जब अकाल पुरुष अपने आपको अपने हृदय में ही धारण किए रखता था,

ਤਉ ਸਗਨ ਅਪਸਗਨ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੈ ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥
तब शगुन (शुभ) एवं अपशगुन (अशुभ लग्नों) का कौन सोचता था ?

ਜਹ ਆਪਨ ਊਚ ਆਪਨ ਆਪਿ ਨੇਰਾ ॥
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥
जहाँ परमात्मा स्वयं ही ऊँचा और स्वयं ही निकट था,

ਤਹ ਕਉਨ ਠਾਕੁਰੁ ਕਉਨੁ ਕਹੀਐ ਚੇਰਾ ॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥
वहाँ कौन स्वामी और कौन सेवक कहा जा सकता था ?

ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦ ॥
बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
मैं प्रभु के अदभुत चमत्कार देखकर चकित हो रहा हूँ।

ਨਾਨਕ ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪਿ ॥੫॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥
नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! अपनी गति आप स्वयं ही जानते हैं। ॥५॥

ਜਹ ਅਛਲ ਅਛੇਦ ਅਭੇਦ ਸਮਾਇਆ ॥
जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
जहाँ छलरहित, अविनाशी एवं अभेद परमेश्वर अपने आप में लीन था,

ਊਹਾ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ਮਾਇਆ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥
वहाँ माया किस पर प्रभाव करती थी ?

ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਹਿ ਆਦੇਸੁ ॥
आपस कउ आपहि आदेसु ॥
जब ईश्वर स्वयं अपने आपको प्रणाम करता थे,

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਕਾ ਨਾਹੀ ਪਰਵੇਸੁ ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥
तब (माया के) त्रिगुणों का (जगत् में) प्रवेश नहीं हुआ था।

ਜਹ ਏਕਹਿ ਏਕ ਏਕ ਭਗਵੰਤਾ ॥
जह एकहि एक एक भगवंता ॥
जहाँ केवल एक आप ही भगवान् थे,

ਤਹ ਕਉਨੁ ਅਚਿੰਤੁ ਕਿਸੁ ਲਾਗੈ ਚਿੰਤਾ ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥
वहाँ कौन चिन्तामुक्त था और किसे चिन्ता लगती थी ?

ਜਹ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ ਪਤੀਆਰਾ ॥
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥
जहाँ परमात्मा अपने आप से स्वयं संतुष्ट था,

ਤਹ ਕਉਨੁ ਕਥੈ ਕਉਨੁ ਸੁਨਨੈਹਾਰਾ ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥
वहां कौन कहने वाला और कौन सुनने वाला था?

ਬਹੁ ਬੇਅੰਤ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥
हे नानक ! परमात्मा बड़ा अनन्त एवं सर्वोपरि है,

ਨਾਨਕ ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਹਿ ਪਹੂਚਾ ॥੬॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥
केवल वही अपने आप तक पहुँचता है॥ ६॥

ਜਹ ਆਪਿ ਰਚਿਓ ਪਰਪੰਚੁ ਅਕਾਰੁ ॥
जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
जब परमात्मा ने स्वयं सृष्टि का परपंच रच दिया

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
और माया के त्रिगुणों का प्रसार जगत् में कर दिया,

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਤਹ ਭਈ ਕਹਾਵਤ ॥
पापु पुंनु तह भई कहावत ॥
फिर पाप और पुण्य की अवधारणा अस्तित्व में आई।

ਕੋਊ ਨਰਕ ਕੋਊ ਸੁਰਗ ਬੰਛਾਵਤ ॥
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥
कोई नरक में जाने लगा और कोई स्वर्ग की अभिलाषा करने लगा।

ਆਲ ਜਾਲ ਮਾਇਆ ਜੰਜਾਲ ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥
ईश्वर ने सांसारिक विवाद, धन-दौलत के जंजाल,

ਹਉਮੈ ਮੋਹ ਭਰਮ ਭੈ ਭਾਰ ॥
हउमै मोह भरम भै भार ॥
तो अपार रूप में अहंकार, मोह, दुविधा एवं भय बना दिए।

ਦੂਖ ਸੂਖ ਮਾਨ ਅਪਮਾਨ ॥
दूख सूख मान अपमान ॥
दुःख-सुख, मान-अपमान

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਓ ਬਖ੍ਯ਼ਾਨ ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥
अनेक प्रकार से वर्णन होने प्रारम्भ हो गए।

ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ॥
आपन खेलु आपि करि देखै ॥
अपनी लीला प्रभु स्वयं ही रचते और देखते हैं।

ਖੇਲੁ ਸੰਕੋਚੈ ਤਉ ਨਾਨਕ ਏਕੈ ॥੭॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥
हे नानक ! जब परमात्मा अपनी लीला को समेट लेते हैं तो केवल वही रह जाते हैं ॥७॥

ਜਹ ਅਬਿਗਤੁ ਭਗਤੁ ਤਹ ਆਪਿ ॥
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जहाँ पर अनन्त परमात्मा है, वहीं उसका भक्त है, जहाँ पर भक्त है, वहीं परमात्मा स्वयं है।

ਜਹ ਪਸਰੈ ਪਾਸਾਰੁ ਸੰਤ ਪਰਤਾਪਿ ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
वह अपने संतों की महिमा के लिए अपनी रचना का विस्तार प्रकट करते हैं।

ਦੁਹੂ ਪਾਖ ਕਾ ਆਪਹਿ ਧਨੀ ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
दोनों पक्षों के वह स्वयं ही स्वामी है।

ਉਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਉਨਹੂ ਬਨੀ ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥
उसकी शोभा केवल उसी को ही शोभा देती है।

ਆਪਹਿ ਕਉਤਕ ਕਰੈ ਅਨਦ ਚੋਜ ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
भगवान् स्वयं ही लीला एवं खेल करते हैं।

ਆਪਹਿ ਰਸ ਭੋਗਨ ਨਿਰਜੋਗ ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥
वह स्वयं ही आनंद भोगते हैं और फिर भी निर्लिप्त रहते हैं।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਆਪਨ ਨਾਇ ਲਾਵੈ ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिस किसी को वह चाहते हैं, उसको अपने नाम के साथ लगा लेते हैं।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਖੇਲ ਖਿਲਾਵੈ ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
जिस किसी को वह चाहते हैं, उसको संसार का खेल खिलाते हैं।

ਬੇਸੁਮਾਰ ਅਥਾਹ ਅਗਨਤ ਅਤੋਲੈ ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
नानक का कथन है कि हे अनन्त ! हे अथाह ! हे गणना-रहित, अतुलनीय परमात्मा !

ਜਿਉ ਬੁਲਾਵਹੁ ਤਿਉ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਬੋਲੈ ॥੮॥੨੧॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥
जैसे आप अपने सेवक को निर्देशित करते हो, वैसे ही यह दास बोलता है ॥८॥२१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਕੇ ਠਾਕੁਰਾ ਆਪੇ ਵਰਤਣਹਾਰ ॥
जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥
हे जीव-जन्तुओं के पालनहार परमेश्वर ! आप स्वयं ही सर्वव्यापक है।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਪਸਰਿਆ ਦੂਜਾ ਕਹ ਦ੍ਰਿਸਟਾਰ ॥੧॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥
हे नानक ! एक ईश्वर ही सर्वत्र व्यापक है। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई कहाँ दिखाई देता है॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਆਪਿ ਕਥੈ ਆਪਿ ਸੁਨਨੈਹਾਰੁ ॥
आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
वह स्वयं ही वक्ता है और स्वयं ही श्रोता है।

ਆਪਹਿ ਏਕੁ ਆਪਿ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥
वह स्वयं ही एक है और स्वयं ही उसका विस्तार है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਏ ॥
जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥
जब उन्हें भला लगता है तो वह सृष्टि की रचना कर देते हैं।

ਆਪਨੈ ਭਾਣੈ ਲਏ ਸਮਾਏ ॥
आपनै भाणै लए समाए ॥
अपनी इच्छानुसार वह इसे स्वयं में लीन कर देते हैं।

ਤੁਮ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥
हे परमात्मा ! आपके बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता।

ਆਪਨ ਸੂਤਿ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਪਰੋਇ ॥
आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥
आपने सारे जगत् को एक सूत्र में पिरोया हुआ है।

ਜਾ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥
जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥
जिसे पूज्य परमेश्वर स्वयं ज्ञान देते हैं,

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥
सचु नामु सोई जनु पाए ॥
वह मनुष्य सत्यनाम प्राप्त कर लेता है।

ਸੋ ਸਮਦਰਸੀ ਤਤ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
सो समदरसी तत का बेता ॥
वह समदर्शी तथा तत्वज्ञाता है।

ਨਾਨਕ ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਜੇਤਾ ॥੧॥
नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥
हे नानक ! वह समस्त जगत् को विजयी करने वाला है ॥१॥

ਜੀਅ ਜੰਤ੍ਰ ਸਭ ਤਾ ਕੈ ਹਾਥ ॥
जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥
समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के वश में हैं।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥੁ ॥
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥
वह दीनदयाल, अनाथों के नाथ हैं।

ਜਿਸੁ ਰਾਖੈ ਤਿਸੁ ਕੋਇ ਨ ਮਾਰੈ ॥
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥
जिसकी परमात्मा रक्षा करता है, उसे कोई भी मार नहीं सकता।

ਸੋ ਮੂਆ ਜਿਸੁ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੈ ॥
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥
जिसे वह अपने हृदय से विस्मृत कर देता है, वह पूर्व ही मृत है।

ਤਿਸੁ ਤਜਿ ਅਵਰ ਕਹਾ ਕੋ ਜਾਇ ॥
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥
उसे छोड़कर कोई मनुष्य दूसरे के पास क्यों जाए?

ਸਭ ਸਿਰਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨ ਰਾਇ ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥
सबके सिर पर एक निरंजन प्रभु है।

ਜੀਅ ਕੀ ਜੁਗਤਿ ਜਾ ਕੈ ਸਭ ਹਾਥਿ ॥
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
जिसके वश में प्राणी की समस्त युक्तियां हैं

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਜਾਨਹੁ ਸਾਥਿ ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
समझ ले कि वह भीतर एवं बाहर तेरे साथ है।

ਗੁਨ ਨਿਧਾਨ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰ ॥
गुन निधान बेअंत अपार ॥
उस गुणों के भण्डार, अनंत एवं अपार परमात्मा पर

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰ ॥੨॥
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥
दास नानक सदैव बलिहारी जाता है॥ २॥

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਦਇਆਲ ॥
पूरन पूरि रहे दइआल ॥
दयालु परमात्मा हर जगह पर उपस्थित है और

ਸਭ ਊਪਰਿ ਹੋਵਤ ਕਿਰਪਾਲ ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
समस्त जीवों पर कृपालु होते हैं।

ਅਪਨੇ ਕਰਤਬ ਜਾਨੈ ਆਪਿ ॥
अपने करतब जानै आपि ॥
अपनी लीला वह स्वयं ही जानते हैं।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਰਹਿਓ ਬਿਆਪਿ ॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥
अन्तर्यामी प्रभु सबमें व्याप्त हैं।

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਜੀਅਨ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥
वह अनेक विधियों से जीवों का पोषण करते हैं।

ਜੋ ਜੋ ਰਚਿਓ ਸੁ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਤਿ ॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥
जिस किसी की भी उसने उत्पत्ति की है, वह उसका ध्यान करता रहता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
जो कोई भी भगवान् को भला लगता है, उसे वह अपने साथ मिला लेते हैं।

ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥
ऐसा भक्त हरि-प्रभु की भक्ति एवं गुणस्तुति करता है।

ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥
हे नानक ! जिसने मन में श्रद्धा धारण करके भगवान् को माना है,

ਕਰਨਹਾਰੁ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਜਾਨਿਆ ॥੩॥
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥
उसने एक सृष्टिकर्ता प्रभु को ही जाना है॥ ३॥

ਜਨੁ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਏਕੈ ਨਾਇ ॥
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥
जो भक्त भगवान् के एक नाम में लगा है,

ਤਿਸ ਕੀ ਆਸ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਇ ॥
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥
उसकी आशा व्यर्थ नहीं जाती।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਸੇਵਾ ਬਨਿ ਆਈ ॥
सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
सेवक को सेवा करनी ही शोभा देती है।

ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈ ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥
प्रभु की आज्ञा का पालन करके वह परम पद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है।

ਇਸ ਤੇ ਊਪਰਿ ਨਹੀ ਬੀਚਾਰੁ ॥
इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥
उसे इससे ऊपर और कोई भी विचार नहीं आता

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਸਿਆ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥
जिसके हृदय में निरंकार प्रभु बसते हैं।

ਬੰਧਨ ਤੋਰਿ ਭਏ ਨਿਰਵੈਰ ॥
बंधन तोरि भए निरवैर ॥
माया के बंधनों को तोड़कर, वे शत्रुता से मुक्त हो जाते हैं,

ਅਨਦਿਨੁ ਪੂਜਹਿ ਗੁਰ ਕੇ ਪੈਰ ॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥
और दिन-रात गुरु के चरणों की पूजा-अर्चना करता है।

ਇਹ ਲੋਕ ਸੁਖੀਏ ਪਰਲੋਕ ਸੁਹੇਲੇ ॥
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
वह इहलोक में सुखी एवं परलोक में आनंद-प्रसन्न होता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਹਿ ਮੇਲੇ ॥੪॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥
हे नानक ! हरि-प्रभु उसे अपने साथ मिला लेते हैं।॥ ४॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਕਰਹੁ ਅਨੰਦ ॥
साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
साध संगत में मिलकर परम आनंद को प्राप्त करो।

ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥
और परमानन्द देने वाले प्रभु की गुणस्तुति करते रहो।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਤਤੁ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
राम-नाम के तत्व का विचार करो।

ਦ੍ਰੁਲਭ ਦੇਹ ਕਾ ਕਰਹੁ ਉਧਾਰੁ ॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥
इस तरह दुर्लभ मानव शरीर का कल्याण कर लो।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥
अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥
परमेश्वर की महिमा के अमृत वचन गायन करो।

ਪ੍ਰਾਨ ਤਰਨ ਕਾ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
अपनी आत्मा का कल्याण करने की यही विधि है।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖਹੁ ਨੇਰਾ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
आठ पहर प्रभु को निकट देखो।

ਮਿਟੈ ਅਗਿਆਨੁ ਬਿਨਸੈ ਅੰਧੇਰਾ ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
(इससे) अज्ञान मिट जाएगा और अन्धकार का नाश हो जाएगा।

ਸੁਨਿ ਉਪਦੇਸੁ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵਹੁ ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
गुरु का उपदेश सुनकर इसे अपने हृदय में बसाओ।

ਮਨ ਇਛੇ ਨਾਨਕ ਫਲ ਪਾਵਹੁ ॥੫॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥
हे नानक ! इस तरह तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होगा ॥५॥

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੁਇ ਲੇਹੁ ਸਵਾਰਿ ॥
हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
लोक एवं परलोक दोनों को संवार लो

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅੰਤਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
राम के नाम को अपने हृदय में बसाओ ।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਪੂਰੀ ਦੀਖਿਆ ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
पूर्ण गुरु का पूर्ण उपदेश है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਤਿਸੁ ਸਾਚੁ ਪਰੀਖਿਆ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
वह जिसके हृदय में बस जाते हैं उसे शाश्वत सत्य की अनुभूति हो जाती है।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
अपने मन एवं तन से वृति लगाकर प्रभु के नाम का जाप करो।

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਮਨ ਤੇ ਭਉ ਜਾਇ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
इस तरह दुःख-दर्द एवं भय मन से निवृत्त हो जाएँगे।

ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ਕਰਹੁ ਵਾਪਾਰੀ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
हे व्यापारी ! तू प्रभु के नाम का सच्चा व्यापार कर।

ਦਰਗਹ ਨਿਬਹੈ ਖੇਪ ਤੁਮਾਰੀ ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
तेरा सौदा ईश्वर के दरबार में सुरक्षित पहुँच जाएगा।

ਏਕਾ ਟੇਕ ਰਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
एक ईश्वर का सहारा अपने हृदय में स्थिर कर।

ਨਾਨਕ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥੬॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥
हे नानक ! तेरा आवागमन (जन्म-मरण का चक्र) पुनः नहीं होगा।॥ ६ ॥

ਤਿਸ ਤੇ ਦੂਰਿ ਕਹਾ ਕੋ ਜਾਇ ॥
तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उससे दूर कोई मनुष्य कहाँ जा सकता है ?

ਉਬਰੈ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਧਿਆਇ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥
रक्षक परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य बच जाता है।

ਨਿਰਭਉ ਜਪੈ ਸਗਲ ਭਉ ਮਿਟੈ ॥
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
उस निर्भय प्रभु का जाप करने से सब भय मिट जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਛੁਟੈ ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥
प्रभु की कृपा से जीव की मुक्ति हो जाती है।

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖੈ ਤਿਸੁ ਨਾਹੀ ਦੂਖ ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
जिसकी ईश्वर रक्षा करते हैं, उसे कोई दुःख नहीं लगता।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨਿ ਹੋਵਤ ਸੂਖ ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥
नाम की आराधना करने से मन को सुख प्राप्त हो जाता है।

ਚਿੰਤਾ ਜਾਇ ਮਿਟੈ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
उससे चिन्ता दूर हो जाती है और अहंकार मिट जाता है।

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰੁ ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
उस प्रभु के भक्त की कोई समानता नहीं कर सकता।

ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਠਾਢਾ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ॥
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
हे नानक ! जिसके सिर पर शूरवीर गुरु खड़े हो,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੇ ਕਾਰਜ ਪੂਰਾ ॥੭॥
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥
उसके सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥७॥

ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ॥
मति पूरी अम्रितु जा की द्रिसटि ॥
जिस (गुरु) की बुद्धि पूर्ण है और जिसकी दृष्टि से अमृत बरसता रहता है,

ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਉਧਰਤ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥
उनके दर्शन करके दुनिया का कल्याण हो जाता है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕੇ ਅਨੂਪ ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
उनके चरण कमल अनूप हैं।

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਸੁੰਦਰ ਹਰਿ ਰੂਪ ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
उनके दर्शन सफल हैं और परमेश्वर जैसा अति सुन्दर उनका रूप है।

ਧੰਨੁ ਸੇਵਾ ਸੇਵਕੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
उनकी सेवा धन्य है एवं उनका सेवक स्वीकृत है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥
वह (गुरु) अंतर्यामी एवं प्रधान पुरुष है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲੁ ॥
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥
जिसके हृदय में गुरु निवास करते हैं, वह कृतार्थ हो जाता है।

ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵਤ ਕਾਲੁ ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥
काल (मृत्यु) उसके निकट नहीं आता।

ਅਮਰ ਭਏ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥
वे अमर हो गए हैं और अमर पद प्राप्त कर लिया है

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੮॥੨੨॥
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥
हे नानक ! जिन्होंने साधुओं की संगति में भगवान् का ध्यान किया है ॥ ८ ॥ २२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰ ਬਿਨਾਸੁ ॥
गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
गुरु ने ज्ञान रूपी सुरमा प्रदान किया है, जिससे आध्यात्मिक अज्ञानता के अंधेरे का नाश हो गया है।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੰਤ ਭੇਟਿਆ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥
हे नानक ! भगवान् की कृपा से संत-गुरु मिले हैं, जिससे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।॥

ਸੰਤਸੰਗਿ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ॥
संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
संतों की संगति में अन्तर्मन में ही प्रभु के दर्शन कर लिए हैं।

ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਾ ਲਾਗਾ ਮੀਠਾ ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
प्रभु का नाम मुझे मधुर मीठा लगा है।

ਸਗਲ ਸਮਿਗ੍ਰੀ ਏਕਸੁ ਘਟ ਮਾਹਿ ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
समस्त सृष्टि एक परमात्मा के स्वरूप में है,

ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਨਾਨਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਹਿ ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
जिसके विभिन्न प्रकार के अनेक रंग दिखाई दे रहे हैं।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਮੁ ॥
नउ निधि अम्रितु प्रभ का नामु ॥
प्रभु का अमृत नाम नवनिधि है।

ਦੇਹੀ ਮਹਿ ਇਸ ਕਾ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
मानव शरीर में ही इसका निवास है।

ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਅਨਹਤ ਤਹ ਨਾਦ ॥
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
वहाँ शून्य समाधि में अनहद शब्द होता है।

ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਅਚਰਜ ਬਿਸਮਾਦ ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥
इस तरह के एक अद्भुत उत्साह का आनंद वर्णित नहीं किया जा सकता है।

ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਖਾਏ ॥
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥
जिसको ईश्वर स्वयं दिखाता है, वही इसको देखता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥੧॥
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥
हे नानक ! ऐसा पुरुष ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਸੋ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਬਾਹਰਿ ਅਨੰਤ ॥
सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
वह अनन्त परमात्मा अन्तर्मन में भी है और बाहर भी विद्यमान है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਗਵੰਤ ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥
भगवान् कण-कण में व्याप्त है।

ਧਰਨਿ ਮਾਹਿ ਆਕਾਸ ਪਇਆਲ ॥
धरनि माहि आकास पइआल ॥
वह धरती, गगन एवं पाताल में विद्यमान है।

ਸਰਬ ਲੋਕ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥
समस्त लोकों का वह पूर्ण पालनहार है।

ਬਨਿ ਤਿਨਿ ਪਰਬਤਿ ਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥
पारब्रह्म-प्रभु वनों, तृणों एवं पर्वतों में व्यापत हैं।

ਜੈਸੀ ਆਗਿਆ ਤੈਸਾ ਕਰਮੁ ॥
जैसी आगिआ तैसा करमु ॥
जैसी उसकी आज्ञा होती है, वैसे ही जीव के कर्म हैं।

ਪਉਣ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰ ਮਾਹਿ ॥
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
भगवान् पवन, जल एवं अग्नि में विद्यमान है।

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸੇ ਸਮਾਹਿ ॥
चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥
वह चारों ओर और दसों दिशाओं में व्यापत हैं।

ਤਿਸ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨਹੀ ਕੋ ਠਾਉ ॥
तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥
उससे भिन्न कोई स्थान नहीं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਉ ॥੨॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२
गुरु की कृपा से नानक ने सुख पा लिया है॥ २॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਮਹਿ ਦੇਖੁ ॥
बेद पुरान सिम्रिति महि देखु ॥
उस भगवान् को वेद, पुराण एवं स्मृतियों में देखो।

ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖ੍ਯ੍ਤ੍ਰ ਮਹਿ ਏਕੁ ॥
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥
चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों में वही एक ईश्वर है।

ਬਾਣੀ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਭੁ ਕੋ ਬੋਲੈ ॥
बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
प्रत्येक जीव प्रभु की वाणी बोलता है।

ਆਪਿ ਅਡੋਲੁ ਨ ਕਬਹੂ ਡੋਲੈ ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥
वह अटल है और कभी विचलित नहीं होता।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਰਿ ਖੇਲੈ ਖੇਲ ॥
सरब कला करि खेलै खेल ॥
सर्व कला रचकर (सृष्टि का) लीला करते हैं।

ਮੋਲਿ ਨ ਪਾਈਐ ਗੁਣਹ ਅਮੋਲ ॥
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥
उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, (क्योंकि) उनके गुण अमूल्य हैं।

ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾ ਕੀ ਜੋਤਿ ॥
सरब जोति महि जा की जोति ॥
ईश्वर की ज्योति समस्त ज्योतियों में प्रज्वलित है।

ਧਾਰਿ ਰਹਿਓ ਸੁਆਮੀ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥
प्रभु ने संसार का ताना-बाना अपने वश में किया हुआ है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਭਰਮ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥
गुर परसादि भरम का नासु ॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से जिसके भ्रम का नाश हो जाता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮਹਿ ਏਹੁ ਬਿਸਾਸੁ ॥੩॥
नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥
उसके भीतर यह दृढ़ विश्वास बन जाता है ॥३॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਪੇਖਨੁ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮ ॥
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥
संतजन हर जगह पर भगवान् को ही देखते हैं।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਭਿ ਧਰਮ ॥
संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
संतजनों के मन में सब धर्म ही होता है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਸੁਨਹਿ ਸੁਭ ਬਚਨ ॥
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
संतजन शुभ वचन सुनते हैं।

ਸਰਬ ਬਿਆਪੀ ਰਾਮ ਸੰਗਿ ਰਚਨ ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥
वे सर्वव्यापक राम में लीन रहते हैं।

ਜਿਨਿ ਜਾਤਾ ਤਿਸ ਕੀ ਇਹ ਰਹਤ ॥
जिनि जाता तिस की इह रहत ॥
जिस जिस संत-धर्मात्मा ने (ईश्वर को) समझ लिया है, उसका जीवन-आचरण ही यह बन जाता है।

ਸਤਿ ਬਚਨ ਸਾਧੂ ਸਭਿ ਕਹਤ ॥
सति बचन साधू सभि कहत ॥
साधु सदैव सत्य वचन करते हैं।

ਜੋ ਜੋ ਹੋਇ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ॥
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
जो कुछ भी होता है, वह इसे सुख मानता है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨੈ ॥
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥
यह जानता है कि प्रभु समस्त कार्य करने वाला एवं कराने वाला है।

ਅੰਤਰਿ ਬਸੇ ਬਾਹਰਿ ਭੀ ਓਹੀ ॥
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
संतजनों हेतु ईश्वर भीतर-बाहर सर्वत्र व्यापत हैं।

ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਸਭ ਮੋਹੀ ॥੪॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥
हे नानक ! उसके दर्शन करके प्रत्येक व्यक्ति मुग्ध हो जाता है ॥४॥

ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ ॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
ईश्वर सत्य है और उसकी सृष्टि-रचना भी सत्य है।

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਸਗਲੀ ਉਤਪਤਿ ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
उस परमेश्वर से समूचा जगत् उत्पन्न हुआ है।

ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਕਰੇ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥
जब उसे भला लगता है तो वह सृष्टि का प्रसार कर देते हैं।

ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥
तिसु भावै ता एकंकारु ॥
यदि एक ईश्वर को उपयुक्त लगे तो वह स्वयं ही एक रूप हो जाते हैं।

ਅਨਿਕ ਕਲਾ ਲਖੀ ਨਹ ਜਾਇ ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥
उसकी अनेक कलाएँ (शक्तियां) हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
जिस किसी को वह चाहता है, उसे अपने साथ मिला लेते हैं।

ਕਵਨ ਨਿਕਟਿ ਕਵਨ ਕਹੀਐ ਦੂਰਿ ॥
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥
वह पारब्रह्म किसी से दूर एवं किसी से निकट कहा जा सकता है ?

ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪ ਭਰਪੂਰਿ ॥
आपे आपि आप भरपूरि ॥
लेकिन ईश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है।

ਅੰਤਰਗਤਿ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਜਨਾਏ ॥
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
हे नानक ! वह उस मनुष्य को (अपनी सर्वव्यापकता की) सूझ देते हैं,

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥੫॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥
जिसे (ईश्वर) स्वयं भीतरी उच्च अवस्था सुझा देते हैं। ॥५॥

ਸਰਬ ਭੂਤ ਆਪਿ ਵਰਤਾਰਾ ॥
सरब भूत आपि वरतारा ॥
सारी दुनिया के लोगों में परमात्मा स्वयं ही व्यापत हैं।

ਸਰਬ ਨੈਨ ਆਪਿ ਪੇਖਨਹਾਰਾ ॥
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सब नयनों द्वारा वह स्वयं ही देख रहे हैं।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਜਾ ਕਾ ਤਨਾ ॥
सगल समग्री जा का तना ॥
यह सारी सृष्टि-रचना उसका शरीर है।

ਆਪਨ ਜਸੁ ਆਪ ਹੀ ਸੁਨਾ ॥
आपन जसु आप ही सुना ॥
वह अपनी महिमा स्वयं ही सुनते हैं।

ਆਵਨ ਜਾਨੁ ਇਕੁ ਖੇਲੁ ਬਨਾਇਆ ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
लोगों का आवागमन (जन्म-मरण) ईश्वर ने एक खेल रचा है।

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਕੀਨੀ ਮਾਇਆ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥
माया को उसने अपना आज्ञाकारी बनाया हुआ है।

ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਅਲਿਪਤੋ ਰਹੈ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
सबके भीतर व्यापत होते हुए भी प्रभु निर्लिप्त रहते हैं।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਸੁ ਆਪੇ ਕਹੈ ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
जो कुछ कहना होता है, वह स्वयं ही कहते हैं।

ਆਗਿਆ ਆਵੈ ਆਗਿਆ ਜਾਇ ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
उसकी आज्ञानुसार प्राणी (दुनिया में) जन्म लेता है और आज्ञानुसार प्राण त्याग देता है।

ਨਾਨਕ ਜਾ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥
हे नानक ! जब उन्हें अच्छा लगता है तो वह प्राणी को अपने साथ मिला लेते हैं।॥ ६॥

ਇਸ ਤੇ ਹੋਇ ਸੁ ਨਾਹੀ ਬੁਰਾ ॥
इस ते होइ सु नाही बुरा ॥
भगवान् द्वारा जो कुछ भी होता है, दुनिया के लिए बुरा नहीं होता।

ਓਰੈ ਕਹਹੁ ਕਿਨੈ ਕਛੁ ਕਰਾ ॥
औरै कहहु किनै कछु करा ॥
कहो, उस भगवान् के अतिरिक्त कभी किसी ने कुछ किया है ?

ਆਪਿ ਭਲਾ ਕਰਤੂਤਿ ਅਤਿ ਨੀਕੀ ॥
आपि भला करतूति अति नीकी ॥
ईश्वर स्वयं भला है और सबसे भले उसके कर्म हैं।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਅਪਨੇ ਜੀ ਕੀ ॥
आपे जानै अपने जी की ॥
अपने हृदय की बात वह स्वयं ही जानते हैं।

ਆਪਿ ਸਾਚੁ ਧਾਰੀ ਸਭ ਸਾਚੁ ॥
आपि साचु धारी सभ साचु ॥
वह स्वयं सत्य है और उसकी सृष्टि-रचना भी सत्य है।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਰਾਚੁ ॥
ओति पोति आपन संगि राचु ॥
ताने-वाने की भाँति उन्होंने स्वयं सृष्टि को अपने साथ मिलाया हुआ है।

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
ता की गति मिति कही न जाइ ॥
उसकी गति एवं विस्तार व्यक्त नहीं किए जा सकते।

ਦੂਸਰ ਹੋਇ ਤ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥
यदि कोई दूसरा उस समान होता तो बह उसको समझ सकता।

ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
तिस का कीआ सभु परवानु ॥
ईश्वर का किया हुआ लोगों को स्वीकार करना पड़ता है

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਜਾਨੁ ॥੭॥
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से यह तथ्य समझो ॥ ७ ॥

ਜੋ ਜਾਨੈ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
जो व्यक्ति ईश्वर को समझता है, उसे सदैव सुख मिलता है।

ਆਪਿ ਮਿਲਾਇ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥
वह ईश्वर उसे अपने साथ मिला लेता है।

ਓਹੁ ਧਨਵੰਤੁ ਕੁਲਵੰਤੁ ਪਤਿਵੰਤੁ ॥
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
वह धनवान, कुलवान एवं मान-प्रतिष्ठा वाला बन जाता है।

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਭਗਵੰਤੁ ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
जिस जीव के हृदय में भगवान् व्यापत हैं, वह जीवित ही मुक्ति पा लेता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਜਨੁ ਆਇਆ ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
उस महापुरुष का दुनिया में जन्म लेना धन्य-धन्य है,

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
जिसकी कृपा से सारे जगत् का उद्धार हो जाता है।

ਜਨ ਆਵਨ ਕਾ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥
जन आवन का इहै सुआउ ॥
महापुरुष के आगमन का यही मनोरथ है कि

ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
उसकी संगति में रहकर दूसरे प्राणियों को ईश्वर का नाम-स्मरण आता है।

ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਮੁਕਤੁ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
ऐसा महापुरुष स्वयं मुक्त होकर संसार को भी मुक्त करा देता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੮॥੨੩॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥
हे नानक ! ऐसे महापुरुष को हमारा सदैव प्रणाम है ॥८॥२३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਪੂਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਰਾਧਿਆ ਪੂਰਾ ਜਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥
पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥
उस पूर्ण नाम वाले पूर्ण प्रभु की आराधना की है।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਪੂਰੇ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੧॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥
हे नानक! मैंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है, तुम भी पूर्णं प्रभु की महिमा गाओ ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸੁਨਿ ਉਪਦੇਸੁ ॥
पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पूर्ण गुरु का उपदेश सुनो और

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਪੇਖੁ ॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
पारब्रह्म को निकट समझ कर देखो।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
अपनी प्रत्येक सांस से गोविन्द का सिमरन करो,

ਮਨ ਅੰਤਰ ਕੀ ਉਤਰੈ ਚਿੰਦ ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥
इससे तेरे मन के भीतर की चिन्ता मिट जाएगी।

ਆਸ ਅਨਿਤ ਤਿਆਗਹੁ ਤਰੰਗ ॥
आस अनित तिआगहु तरंग ॥
तृष्णाओं की तरंगों को त्याग कर

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਨ ਮੰਗ ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥
संतजनों की चरण धूलि की मन से याचना करो।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਬੇਨਤੀ ਕਰਹੁ ॥
आपु छोडि बेनती करहु ॥
अपना अहंकार त्याग कर प्रार्थना करो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਹੁ ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥
सत्संगति में रहकर (विकारों की) अग्नि के सागर से पार हो जाओ।

ਹਰਿ ਧਨ ਕੇ ਭਰਿ ਲੇਹੁ ਭੰਡਾਰ ॥
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
परमेश्वर के नाम-धन से अपने खजाने भरपूर कर ले

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਨਮਸਕਾਰ ॥੧॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु को प्रणाम करो ॥१॥

ਖੇਮ ਕੁਸਲ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ॥
खेम कुसल सहज आनंद ॥
तुझे मुक्ति, प्रसन्नता एवं सहज आनंद प्राप्त होंगे

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਜੁ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥
संतों की संगति में परमानंद प्रभु का भजन करो।

ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਿ ਉਧਾਰਹੁ ਜੀਉ ॥
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
इससे नरक में जाने से बच जाओगे और आत्मा पार हो जाएगी

ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਉ ॥
गुन गोबिंद अम्रित रसु पीउ ॥
गोविन्द की गुणस्तुति करके नाम-अमृत का रसपान करो।

ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਹੁ ਨਾਰਾਇਣ ਏਕ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥
अपने मन में एक नारायण का ध्यान करो,

ਏਕ ਰੂਪ ਜਾ ਕੇ ਰੰਗ ਅਨੇਕ ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥
जिसका रूप एक एवं रंग अनेक हैं।

ਗੋਪਾਲ ਦਾਮੋਦਰ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
वह गोपाल, दामोदर, दीनदयाल,

ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾਲ ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
दुःखनाशक एवं पूर्ण कृपालु है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮੁ ਬਾਰੰ ਬਾਰ ॥
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥
हे नानक ! बार-बार उसके नाम का सिमरन करते रहो चूंकि

ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਕਾ ਇਹੈ ਅਧਾਰ ॥੨॥
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥
जीव का एकमात्र यही सहारा है॥ २ ॥

ਉਤਮ ਸਲੋਕ ਸਾਧ ਕੇ ਬਚਨ ॥
उतम सलोक साध के बचन ॥
साधु के वचन उत्तम श्लोक हैं।

ਅਮੁਲੀਕ ਲਾਲ ਏਹਿ ਰਤਨ ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥
यही अमूल्य रत्न एवं जवाहर है।

ਸੁਨਤ ਕਮਾਵਤ ਹੋਤ ਉਧਾਰ ॥
सुनत कमावत होत उधार ॥
जो व्यक्ति इन वचनों को सुनता और पालन करता है, उसका भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਲੋਕਹ ਨਿਸਤਾਰ ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥
वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और दूसरे लोगों का भी कल्याण कर देता है।

ਸਫਲ ਜੀਵਨੁ ਸਫਲੁ ਤਾ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥
उसका जीवन सफल हो जाता है और उसकी संगति दूसरों की कामनाएँ पूर्ण करती हैं,

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥
जिसके हृदय में ईश्वर का प्रेम बन जाता है।

ਜੈ ਜੈ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ॥
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
उसकी जय, जय है, जिसके लिए अनहद ध्वनि होती है।

ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਅਨਦ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਜੈ ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥
जिसे पुनः पुनः सुनकर वह हर्षित होता है और उस प्रभु के नूर की अनुभूति को अपने भीतर अनुभव करता है।

ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਮਹਾਂਤ ਕੈ ਮਾਥੇ ॥
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥
ऐसे महापुरुषों के मस्तक पर परमात्मा प्रगट होते हैं।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਤਿਨ ਕੈ ਸਾਥੇ ॥੩॥
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥
हे नानक ! ऐसे महापुरुष की संगति करने से बहुत सारे लोगों का उद्धार हो जाता है॥ ३॥

ਸਰਨਿ ਜੋਗੁ ਸੁਨਿ ਸਰਨੀ ਆਏ ॥
सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
हे भगवान् ! यह सुनकर कि आप जीवों को शरण देने में समर्थ है, अतः हम आपकी शरण में आए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪ ਮਿਲਾਏ ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
प्रभु ने दया करके हमें अपने साथ मिला लिया है।

ਮਿਟਿ ਗਏ ਬੈਰ ਭਏ ਸਭ ਰੇਨ ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अब हमारे वैर मिट गए हैं और हम सबकी चरण-धूलि हो गए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਲੈਨ ॥
अम्रित नामु साधसंगि लैन ॥
साध संगत से नाम-अमृत लेने वाले हुए हैं।

ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਭਏ ਗੁਰਦੇਵ ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
गुरुदेव हम पर सुप्रसन्न हो गए हैं और

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸੇਵ ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
सेवक की सेवा सफल हो गई है।

ਆਲ ਜੰਜਾਲ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਰਹਤੇ ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
हम सांसारिक धंधों एवं विकारों से बच गए हैं,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੁਨਿ ਰਸਨਾ ਕਹਤੇ ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥
राम का नाम सुनकर और अपनी जिह्वा से इसको उच्चारित करने से।

ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
भगवान् ने कृपा करके (हम पर) यह दया की है और

ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਖੇਪ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥
हे नानक ! हमारा किया हुआ परिश्रम प्रभु-दरबार में सफल हो गया है ॥४॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਸੰਤ ਮੀਤ ॥
प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
हे संत मित्रो ! प्रभु की महिमा-स्तुति

ਸਾਵਧਾਨ ਏਕਾਗਰ ਚੀਤ ॥
सावधान एकागर चीत ॥
सावधान एवं एकाग्रचित होकर करो।

ਸੁਖਮਨੀ ਸਹਜ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨ ਨਾਮ ॥
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
सुखमनी में सहज सुख एवं गोविन्द की महिमा एवं नाम है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁ ਹੋਤ ਨਿਧਾਨ ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥
जिसके मन में यह रहती है, वह धनवान बन जाता है।

ਸਰਬ ਇਛਾ ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ॥
सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
उसकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਲੋਇ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥
वह प्रधान पुरुष बन जाता है और सारी दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਪਾਏ ਅਸਥਾਨੁ ॥
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
वह सर्वोच्च निवास पा लेता है।

ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਵੈ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥
उसे पुनः जीवन-मृत्यु का चक्र नहीं पड़ता।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ਚਲੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
वह मनुष्य हरि नामरूपी धन प्राप्त करके दुनिया से चला जाता है

ਨਾਨਕ ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੫॥
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥
हे नानक ! जिस मनुष्य को (सुखमनी) यह देन (ईश्वर से) मिलती है ॥५॥

ਖੇਮ ਸਾਂਤਿ ਰਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ॥
खेम सांति रिधि नव निधि ॥
सहज सुख, शांति, रिद्धियां, नवनिधियां,

ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਸਰਬ ਤਹ ਸਿਧਿ ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥
बुद्धि, ज्ञान एवं सर्व सिद्धियों उस प्राणी को मिलती हैं,

ਬਿਦਿਆ ਤਪੁ ਜੋਗੁ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਨੁ ॥
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
विद्या, तपस्या, योग, प्रभु का ध्यान,

ਗਿਆਨੁ ਸ੍ਰੇਸਟ ਊਤਮ ਇਸਨਾਨੁ ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥
श्रेष्ठ ज्ञान, उत्तम स्नान,

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਕਮਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), हृदय कमल का खिलना,

ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਸਗਲ ਤੇ ਉਦਾਸ ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सब में रहते हुए सबसे तटस्थ रहना,

ਸੁੰਦਰੁ ਚਤੁਰੁ ਤਤ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
सुन्दरता, बुद्धिमत्ता एवं तत्ववेत्ता,

ਸਮਦਰਸੀ ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
समदर्शी एवं एक दृष्टि से ईश्वर को देखना,

ਇਹ ਫਲ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਮੁਖਿ ਭਨੇ ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
हे नानक ! ये तमाम फल उसे मिलते हैं,

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਚਨ ਮਨਿ ਸੁਨੇ ॥੬॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥
जो अपने मुंह से (सुखमनी) सुखों की मणि का जाप करता है और गुरु के वचन तथा प्रभु के नाम की महिमा मन लगाकर सुनता है॥ ६॥

ਇਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਪੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥
इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
जो भी जीव इस गुणों के भण्डार का हृदय से जाप करता है,

ਸਭ ਜੁਗ ਮਹਿ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥
उसकी समस्त युगों में गति हो जाती है।

ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
यह वाणी गोविन्द का यश एवं नाम की ध्वनि है,

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਬੇਦ ਬਖਾਣੀ ॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥
जिस बारे स्मृतियों, शास्त्र एवं वेद वर्णन करते हैं।

ਸਗਲ ਮਤਾਂਤ ਕੇਵਲ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥
समस्त मतों (धर्मों) का सारांश भगवान् का नाम ही है।

ਗੋਬਿੰਦ ਭਗਤ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
इस नाम का निवास गोविन्द के भक्त के हृदय में होता है।

ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟੈ ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
करोड़ों ही अपराध संतों की संगति करने से नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੈ ॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥
संतों की कृपा से जीव यमों से छूट जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਕਰਮ ਪ੍ਰਭਿ ਪਾਏ ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के मस्तक पर ईश्वर ने भाग्य लिख दिया है,

ਸਾਧ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਤੇ ਆਏ ॥੭॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥
वही व्यक्ति साधु की शरण में आता है ॥७॥

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁਨੈ ਲਾਇ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
जिस पुरुष के हृदय में (सुखमनी) निवास करती है और जो इसे प्रेमपूर्वक सुनता है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੀਤਿ ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
वही हरि-प्रभु को स्मरण करता है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਤਾ ਕਾ ਦੂਖੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥
उसके जन्म-मरण के दुःख नाश हो जाते हैं।

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥
वह इस दुर्लभ शरीर को तत्काल विकारों से बचा लेता है।

ਨਿਰਮਲ ਸੋਭਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤਾ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥
निरमल सोभा अम्रित ता की बानी ॥
उसकी शोभा निर्मल है एवं उसकी वाणी अमृत रूप होती है।

ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥
एकु नामु मन माहि समानी ॥
एक ईश्वर का नाम ही उसके मन में समाया रहता है।

ਦੂਖ ਰੋਗ ਬਿਨਸੇ ਭੈ ਭਰਮ ॥
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥
दुःख, रोग, भय एवं दुविधा उससे दूर हो जाते हैं।

ਸਾਧ ਨਾਮ ਨਿਰਮਲ ਤਾ ਕੇ ਕਰਮ ॥
साध नाम निरमल ता के करम ॥
उसका नाम साधु हो जाता है और उसके कर्म पवित्र होते हैं।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਤਾ ਕੀ ਸੋਭਾ ਬਨੀ ॥
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥
उसकी शोभा सर्वोच्च हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਇਹ ਗੁਣਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਮਨੀ ॥੮॥੨੪॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥
हे नानक ! इन गुणों के कारण (ईश्वर की) इस वाणी का नाम सुखमनी है ॥८॥२४॥

ਅਰਦਾਸ

प्रार्थना

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
ईश्वर एक है। सारी विजय विलक्षण गुरु (भगवान्) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।
आदरणीय तलवार या कृपाण (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्) हमारी सहायता करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦||
दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की कविता ।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥
पहले तलवार को याद करो (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्); फिर गुरु नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥
फ़िर श्री गुरु अंगद, श्री गुरु अमर दास और गुरु राम दास का स्मरण और ध्यान करो; वे हमारी मदद करें ! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌਂ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥
श्री गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और गुरु हर राय का स्मरण और ध्यान करो। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥
पूज्य गुरु हर कृष्ण का स्मरण और ध्यान करें, जिनके दर्शन मात्र से सारे कष्ट मिट जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥
गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत (धैर्य, क्षमा दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुधि, विद्या सत्य, अक्रोध) आपके घर में तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
हे प्रभु ! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें। हे भगवान्! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार करें और ध्यान करें और अपने विचारों को गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और आनंद प्राप्त करें; बोले वाहेगुरु!(विलक्षण गुरु)

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
पाँच प्यारे, (गुरु गोबिंद सिंह के)चार पुत्रों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों में से; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिक्खों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उनमें से जो नाम में विलीन थे; उन्हें जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साथ में भोजन किया; उन्हें जिन्होंने निःशुल्क रसोई शुरू की; उन्हें जिन्होंने अपनी तलवारें चलाईं (सत्य की रक्षा के लिए); दूसरों की कमियों को नज़रअंदाज करने वालों को; उपरोक्त सभी शुद्ध और वास्तव में समर्पित व्यक्ति थे; बोल वाहे गुरु!(विलक्षण गुरु)

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
उन वीर सिक्ख पुरुषों और स्त्रियों की अनुपम सेवा को सोचो और याद करो, जिन्होंने अपना सिर न्यौछावर कर दिए, किन्तु सिक्ख धर्म का समर्पण नहीं किया; जिन्होंने शरीर के एक-एक जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिन्होंने अपनी सिर की खाल निकलवा दी; जिन्हें बांधकर पहियों पर घुमाया जाता था और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते थे; जिन्हें आरी से काटा गया था; जिवित खालें उतारी गईं; जिन्होंने गुरुद्वारों की मर्यादा बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया; जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपना सिक्ख धर्म रखा और अपने लंबे केशों को आखिरी सांस तक सहेज कर रखा; बोल वाहे गुरु!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
अपने विचारों को सिक्ख धर्म के सभी सिंहासनों और सभी गुरुद्वारों की ओर केंद्रित करें; बोलो वाहे गुरु!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।
पहले तो सारे आदरणीय खालसा यह दुआ करते हैं कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और आराम मिलें।

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ, ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
जहाँ भी आदरणीय खालसा उपस्थित हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; नि:शुल्क रसोई और तलवार कभी विफल न हो; अपने भक्तों का मान बनाए रखना; सिक्ख लोगों को विजय दिलाओ; सम्मानित तलवार हमेशा हमारी सहायता के लिए आए; खालसा का सदा सम्मान हो ; बोले वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਂਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ! !
सिक्खों को सिक्ख धर्म का दान, लंबे केशों का दान, सिक्ख धर्म का दान, दिव्य ज्ञान का दान, दृढ़ विश्वास का दान, विश्वास का दान और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। हे प्रभु ! राग-रागी, हवेली और झंडे हमेशा के लिए स्थित रहें; सत्य की हमेशा विजय हो; बोलो वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।
सभी सिक्खों का मन विनम्र रहे और उनका ज्ञान ऊंचा रहे; हे प्रभु ! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।
हे सच्चे पातशाह, वाहे गुरु! आप नम्र लोगों के मान हैं, असहायों की शक्ति हैं, आश्रयहीनों के आश्रय हैं, हम विनम्रतापूर्वक आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं... .. (यहाँ किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें) ।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।
कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारे दोषों और कमियों को क्षमा करें। कृपया सभी के उद्देश्यों को पूरा करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।
हमें उन सच्चे भक्तों से मिलाने की कृपा करें जिनसे हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। हे परमेश्वर! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊँचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ।
खालसा भगवान् का है; सभी विजय भगवान् की विजय है।

आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें

अपनी आध्यात्मिक यात्रा को उन्नत करने और जीवन में गहन अर्थ खोजने के लिए प्रथाओं की खोज करें।

यात्रा के लिए सिख धर्म के तीन मूलभूत सिद्धांत :

नाम जपना : ईश्वर का स्मरण

किरत करनी : ईमानदारी से काम करो

वंड छकना : दूसरों के साथ साझा करना

ये हमारा आध्यात्मिक मुक्ति और एक न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर करते हैं । गुरु ग्रंथ साहिब में निहित ये सिद्धांत सिख जीवन का आधार हैं।

चौथे गुरु रामदास जी के दैनिक अभ्यास के लिए ज्ञान : गुरु ग्रंथ साहिब (पृष्ठ 305-306) में, उन्होंने एक सिक्ख की दैनिक आध्यात्मिक यात्रा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है:

1. **दिन का प्रथम कार्य:** गुरु का सच्चा शिष्य प्रत्येक दिन का प्रारम्भ प्रेमपूर्वक ईश्वर का स्मरण करके करता है।

2. **शरीर और मन को शुद्ध करें:** सुबह जल्दी उठें, स्नान करें और ईश्वर के स्मरण में डूब जाएं, ऐसा महसूस करें कि आपकी आत्मा दिव्य अमृत में नहा रही है।

3. **स्मरण के माध्यम से मुक्ति:** गुरु की शिक्षाओं का पालन करने और भक्ति के साथ ईश्वर के नाम का स्मरण करने से सांसारिक आसक्तियों के कारण उत्पन्न दुःख और आंतरिक अशांति दूर हो जाती है।

4. **गाएँ और चिंतन करें:** निरंतर दिव्य स्तुति गाएं और अपने दैनिक कार्यों में दिव्य नाम का चिंतन करें।

5. **शांति का प्रकाश स्तम्भ बनें:** गुरु का अनुयायी जो हर सांस के साथ ईश्वरीय के नाम का प्रेमपूर्वक स्मरण करता है, वह एक शांत और प्रेरणादायक आत्मा बन जाती है।

6. **दिव्य ज्ञान प्राप्त करें:** गुरु यह दिव्य ज्ञान उन लोगों को प्रदान करते हैं जिन्होंने उनकी कृपा अर्जित की है।

7. **दूसरों को प्रेरित करें:** गुरु नानक उस शिष्य को नमन करते हैं जो न केवल ईश्वरीय

नाम का स्मरण करता है बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

8. **दुर्लभ एवं बहुमूल्य आत्माएं:** सच्चे रूप से समर्पित व्यक्ति दुर्लभ होते हैं, फिर भी ईश्वर के प्रति उनके स्मरण से असंख्य अन्य लोगों को आध्यात्मिक रूप से लाभ होता है।

9. **नकारात्मकता से बचें:** उन लोगों से दूरी बनाए रखें जो गुरु की शिक्षाओं की अवहेलना करते हैं और आध्यात्मिक अज्ञानता के चक्र में फँसे रहते हैं। उन लोगों से सावधान रहें जो आपके सामने मीठी-मीठी बातें करते हैं, लेकिन पीठ पीछे नकारात्मकता फैलाते हैं।

यात्रा के लिए दर्शन

सिक्ख धर्म के दर्शनशास्त्र की विशेषता आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए तर्क, व्यापकता और "तामझाम रहित" दृष्टिकोण है। इसका धर्मशास्त्र सादगी द्वारा चिह्नित है। सिक्ख नैतिकता में व्यक्ति के स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और समाज (संगत) के प्रति कर्त्तव्य के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

सिक्ख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे कम उम्र का विश्व धर्म है। यह ब्रह्मांड के एक सर्वोच्च अस्तित्व और निर्माता (वाहेगुरु) में विश्वास पर बल देता है। यह शाश्वत आनंद के लिए एक सरल सीधा मार्ग प्रदान करता है और प्रेम और विश्वव्यापी भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिक्ख धर्म दृढ़ता से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और भगवान् को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है।

सिक्ख धर्म का मानना है कि ईश्वर केवल एक ही है, जो निर्माता, निर्वाहक, विनाशक है और मानव रूप नहीं लेता है। सिक्ख धर्म में अवतार के सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवी-देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की दिशा में क़दम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को अपने मन में धारण करना चाहिए और सद्गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को केवल प्रयासों और मन की दृढ़ता से ही विकसित किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिक्ख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कार्यों के संपादन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान् के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर बल देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए पांच भावनाओं, अर्थात, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ अनुष्ठान और नियमित प्रथाओं जैसे उपवास और तीर्थयात्रा, शकुन और तपस्या को सिक्ख धर्म में अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान् के साथ विलीन होना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिक्ख धर्म भक्ति मार्ग या निष्ठा मार्ग पर बल देता है। यद्यपि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म मार्ग (कार्य का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिक्ख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (गृहस्थ) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक व्याधियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक और भगवान् के लिए संत होना चाहिए।

सिक्ख धर्म समस्त संसार का एक "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, संप्रदाय, वंश या लिंग के आधार पर सभी भेदों को अमान्य करता है। यह मानता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर बल दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा (महिलाओं का पर्दा पहनने) को अस्वीकार कर दिया। मन को ईश्वर पर केंद्रित करने के लिए व्यक्ति को पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्यों को करना चाहिए। ईमानदारी से काम करके (किरत करना) अपनी आजीविका अर्जित करना सम्माननीय माना जाता है, न कि भीख मांग कर या बेईमानी से । वंद छकना, दूसरों के साथ साझा करना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से जरूरतमंद लोगों की मदद, दसवंध (अपनी कमाई का 10%) के माध्यम से करने की उम्मीद की जाती है। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिक्ख धर्म का अभिन्न अंग है। सभी धर्मों के लोगों के लिए खुली हर गुरुद्वारे में मिलने वाली निःशुल्क सामुदायिक रसोई (लंगर) इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है।

सिक्ख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए वह जो करता है उसमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिक्ख ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यह एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र पुस्तक को एक धार्मिक गुरु का पद दिया है। सिक्ख धर्म में जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई स्थान नहीं है।

महिलाओं की भूमिका

सिक्ख धर्म के सिद्धांतों में कहा गया है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही आत्माएं हैं और उनकी आध्यात्मिकता को विकसित करने का समान अधिकार है। वे धार्मिक सभाओं का नेतृत्व कर सकती हैं, अखंड पथ (पवित्र शास्त्रों का निरंतर पाठ) में भाग ले सकती हैं, कीर्तन (भजनों का सामूहिक गायन) कर सकती हैं, ग्रन्थियों (पुजारियों) के रूप में काम कर सकती हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। सिक्ख धर्म पुरुषों और महिलाओं को समानता देने वाला पहला प्रमुख विश्व धर्म था। गुरु नानक ने लिंग आधारित समानता का उपदेश दिया, और उनके बाद आने वाले गुरुओं ने महिलाओं को सिक्ख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूर्ण भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"महिला और पुरुष, सभी भगवान् द्वारा बनाए गए हैं। यह सब भगवान् का खेल है। नानक कहते हैं, तेरी सारी रचना अच्छी और पवित्र है" -गुरु ग्रंथ पृष्ठ 304

सिक्ख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से चित्रित किया है। सिक्ख परंपरा में महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण लिखे गए हैं।

सिक्ख धर्म के अनुसार पुरुष और महिला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रय की व्यवस्था में जहाँ पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है। सिक्ख धर्म के अनुसार एक पुरुष एक महिला के बिना अपने जीवन में सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और समर्थन से संबंधित है जो उसके साथ अपना जीवन साझा करती है, और इसके विपरीत। गुरु नानक ने कहा: "[यह] एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "महिला को शापित और निंदित नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" SGGS पृष्ठ 473.

उद्धार: उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने, भगवान् की प्राप्ति या उच्चतम आध्यात्मिक क्षेत्र प्राप्त करने में सक्षम मानता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है," सभी प्राणियों में ईश्वर व्यापक हैं, ईश्वर सभी रूपों में पुरुष और महिलामें व्यापत हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के उपरोक्त कथन के अनुसार, ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहता है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में स्त्री को पुरुष की आध्यात्मिकता में बाधक माना जाता है,किन्तु सिक्ख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिक्ख धर्म पर वर्तमान विचार' में,

ऐलिस बसरके कहते हैं, "पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए बाधा नहीं थी, लेकिन भगवान् की सेवा करने और मोक्ष की तलाश में एक भागीदार थी"।

विवाह: गुरु नानक देव ने गृहस्थ की संस्तुत की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के स्थान पर, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों को स्वामीभक्ति की आज्ञा दी गई थी। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और विवाह ने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए एक निरंतर रूपक प्रदान किया है। भाई गुरदास, प्रारंभिक सिक्ख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार, महिलाओं को उच्च सम्मान देते हैं। वे कहते हैं:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में प्रिय होती है, जिसे उसके पिता और माता बहुत प्यार करते हैं। अपने ससुराल में, वह परिवार का स्तंभ होती है, उनके अच्छे भाग्य की दायित्व होती है... आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष में भागीदार और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का आधा हिस्सा, उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाती है। (वारन, वि. 16)

समान स्थिति: पुरुषों और महिलाओं के बीच समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र फेलोशिप) और पंगत (एक साथ भोजन करना) गतिविधियों में लिंग के बीच कोई अंतर नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने शिष्यों में महिलाओं को कुछ समुदायों की निगरानी के लिए नियुक्त किया और सती प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। सिक्ख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा: सिक्ख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई विद्यालयों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831) ।

सभी के लिए शिक्षा आवश्यक है और सभी को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिक्ख मिशनरियों में से बावन महिलाएँ थीं। 'सिक्ख महिलाओं की भूमिका और स्थिति में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं, **"गुरु अमर दास को विश्वास था कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं ले सकती जब तक कि उन्हें महिलाओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।"**

कपड़ों पर प्रतिबंध: महिलाओं को घूंघट न पहनने की आवश्यकता के अतिरिक्त, सिक्ख धर्म परिधान संहिता के संबंध में एक सरल लेकिन बहुत महत्वपूर्ण वर्णन करता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"उन कपड़ों को पहनने से बचें, जिनमें शरीर असहज हो और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पृष्ठ 16

इस प्रकार, सिक्खों को एहसास होगा कि किस प्रकार के कपड़े दिमाग को बुरे विचारों से भर देते हैं और उन्हें इससे बचना चाहिए। सिक्ख महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कृपाण (तलवार) और अन्य के साथ अपनी रक्षा करें, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

SGGS उद्धरण: गुरु नानक जी का कथन है कि, "पृथ्वी और आकाश में, मुझे कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। सभी महिलाओं और पुरुषों के बीच, उसका प्रकाश चमक रहा है।" Sggs पृष्ठ 223। स्त्री से, पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से उसकी सगाई और शादी हो चुकी है। महिला उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से भावी पीढ़ियां जन्म लेती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री की तलाश करता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उसी से राजा उत्पन्न होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; स्त्री के बिना, कोई भी नहीं होगा। एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे प्रभु, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दें।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, एसजीजीएस की पंक्ति 18

पर्दा प्रथा के विषय में: "रुको, ठहरो, ओ वधु - अपना चेहरा घूंघट से मत ढ़को। अंत में, यह तुम्हें आधा आवरण भी नहीं देगा।" तुमसे पूर्व जो चेहरे पर पर्दा किया करती थी, उनके पदचिन्हों पर मत चलना। अपने चेहरे पर पर्दा करने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे कि, "क्या गुणी दुल्हन आई है"। तुम्हारा यह घूंघट तभी सत्य हो जाएगा है, जब तुम भगवान् की महिमा को छोड़ते, नाचते और गाते हैं। -पृष्ठ 484, SGGS

महिलाएँ और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों; मुझे अपने आलिंगन में कसकर गले लगाओ। आओ एक साथ जुड़ें, और अपने सर्वशक्तिमान पति भगवान् की कहानियां सुनाएं।" - गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 17, ।

"मित्र, अन्य सभी वस्त्र सुख को नष्ट कर देते हैं, अंगों पर जो पहना जाता है वह पीड़ा देते हैं और गलत सोच से मन को भर जाता है" - SGGS पृष्ठ 16

पगड़ी का महत्व

पगड़ी हमेशा एक सिक्ख का एक अभिन्न अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिक्ख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक के समय से, सिक्ख पगड़ी पहनते आ रहे हैं।

पगड़ी या "पगरी" को प्रायः "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही वस्त्र के लिए विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढंकने के लिए पहने जाने वाले परिधान को संदर्भित करते हैं। यह एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है या कभी-कभी एक आंतरिक "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में उच्च स्थिति के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; निम्न स्थिति या निम्न जातियों के पुरुषों को पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं थी।

हालांकि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा बिना कटे बालों को रखना अनिवार्य था, जो कि पांच के या विश्वास के पांच लेखों में से एक था, यह लंबे समय से 1469 में सिक्ख धर्म की शुरुआत से ही सिक्ख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिक्ख धर्म दुनिया में एकमात्र धर्म है। जिसमें सभी वयस्क पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले अधिकांश लोग सिक्ख हैं। सिक्ख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार' फारसी शब्द है। इसका अर्थ है 'हैंड ऑफ गॉड' जिसका अर्थ है उनका आशीर्वाद।

सिक्ख अपनी कई और विशिष्ट पगड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए आरक्षित एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के काल में, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी। सभी गैर-मुस्लिमों को एक पगड़ी पहनने से दृढ़ता से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने मुगलों द्वारा इस चुनौति की अवहेलना करते हुए अपने सभी सिक्खों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था, जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा विशिष्ट हो और "शेष संसार से अलग दिखने" के लिए दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिक्ख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय मार्ग का अनुसरण करें। इस प्रकार, एक पगड़ीधारी सिक्ख हमेशा भीड़ से अलग खड़ा होता है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहते थे कि उनके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जा सकें, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब एक सिक्ख पुरुष या महिला पगड़ी पहनती है, तो पगड़ी केवल कपड़े का एक फीता नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिक्ख के सिर के साथ एक ही हो जाती है। पगड़ी साथ ही सिक्खों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था की चार अन्य वस्तुओं का अत्यधिक आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े कई प्रतीक हैं - स्वतंत्रता, समर्पण, स्वाभिमान, साहस और धर्मपरायणता, लेकिन!, सिक्खों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण उनके संस्थापक के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान दिखाना है। खालसा गुरु गोबिंद सिंह।

उपरोक्त मुख्य अंश में कथित शब्दों को किसी और से बदलने की आवश्यकता है। 'इसका कारण' हो सकता है

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम स्वयं को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी उच्च चेतना के प्रति प्रतिबद्धता को सिंहासन पर बिठाती है। पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से, यह अनुमानित पहचान स्वत्व, सभ्यता और विशिष्टता व्यक्त करती है। । यह दूसरों के लिए एक संकेत है कि हम अनंत की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। पगड़ी पूरी प्रतिबद्धता के अलावा किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर सबसे अलग दिखना चुनते हैं, तो आप निडर होकर एक अकेले के रूप में खड़े होते हैं। छह अरब लोगों से अलग खड़ा व्यक्ति। यह सबसे उत्कृष्ट कार्य है।" (सिक्खनेट से उद्धृत)

विनम्रता आपकी यात्रा का मुख्य सार है

विनम्रता सिक्ख धर्म का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसके अनुसार सिक्खों को ईश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक झुकना चाहिए। विनम्रता या नम्रता, पंजाबी में निकटवर्ती शब्द हैं। नम्रता एक गुण है जिसका गुरबाणी में उत्साहपूर्वक प्रचार किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "नम्रता", "उदारता" या "विनम्रता" है। ऐसा मनुष्य जिसका मन इस विचार से विचलित नहीं होता है कि वह किसी से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - उपरोक्त वाक्य सही नहीं है उपरोक्त वाक्य पूर्ण नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिक्ख की मानसिकता का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह गुण हर समय सिक्ख के साथ होना चाहिए। सिक्ख शस्त्रागृह में अन्य चार गुण हैं : सत्य (सत), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार) है।

एक सिक्ख के लिए ये पाँच गुण आवश्यक हैं और इन गुणों को आत्मसात करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबाणी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्त्तव्य है।

गुरबाणी हमें क्या बताती है:

"विनम्रता का फल सहज ज्ञान से प्राप्त शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे उत्कृष्टता का खजाना ईश्वर का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर से अभिज्ञ प्राणी विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक विनम्रता के साथ स्थिर है। सिक्ख धर्म विनम्रता को ईश्वर के समक्ष भिक्षा पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

गुरु नानक, सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु :

"अपने मन में प्यार और विनम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने भीतर गहरे पवित्र मंदिर में स्वयं को ईश्वर के नाम से शुद्ध करें।"- SGGS पृष्ठ 4

"संतोष को अपने कान की बाली बना लो, विनम्रता को अपने भिक्षापात्र बना लो, और ध्यान को अपने शरीर पर ङ्मलगाने वाली भस्म बना लो।"- एसजीजीएस पृष्ठ 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहाँ अतुलनीय सुंदरता के रूप बनाए जाते हैं।" SGGS पृष्ठ 8

"विनम्रता, उदारता और अंर्तज्ञान मेरी सास और ससुर हैं" -SGGS पृष्ठ 152।

आध्यात्मिकता की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु है, जो सिक्ख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। यह संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब का दृष्टिकोण ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज का किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने का समान अधिकार होता है। महिलाएँ प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिक्ख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिक्ख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना है। सिक्ख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। दिव्य संदेश में, हिंदु, मुस्लिम पौराणिक कथाओं में प्राय: प्रह्लाद, हिरण्याक्ष, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके अंतर्निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ मिलन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

यह कार्य वर्षों से कई स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, ताकि आप तक आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश पहुँचाया जा सके। यदि आपका कोई प्रश्न हैं तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।